संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,

जनवरी–2024, RNI-50756

वर्ष-33, अंक-399

मूल्य 60/-

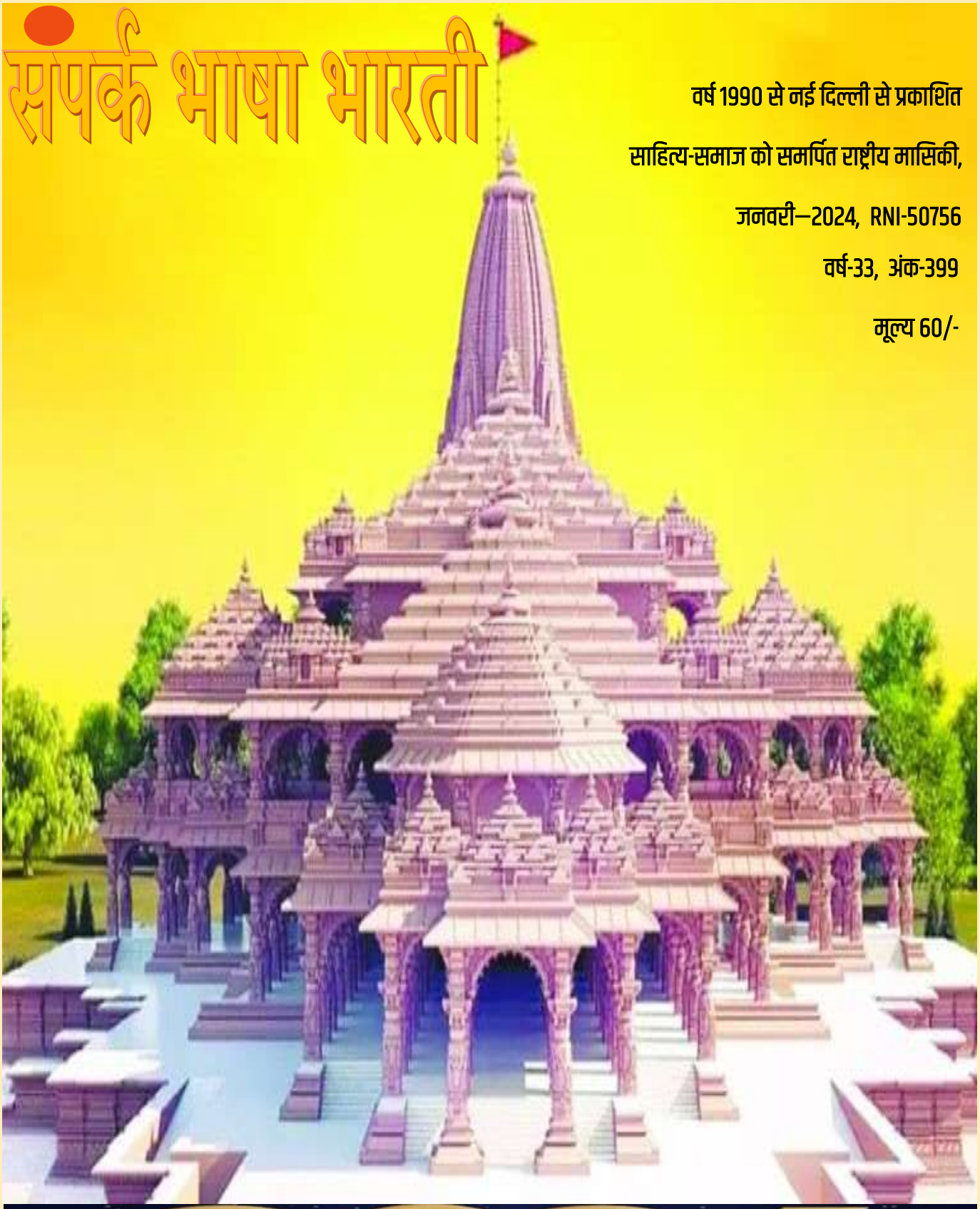

नव वर्ष 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं

अपनी बात...

मित्रो नमस्कार!

इधर संपर्क भाषा भारती पत्रिका के मासिक प्रकाशन को नियमित रखने की ज़िम्मेदारी के साथ-साथ सौभाग्य प्रकाशन संस्थान के अंतर्गत हिन्दी साहित्य को समर्पित पुस्तक प्रकाशन का दायित्व और आ गया है।

सौभाग्य प्रकाशन के अंतर्गत छोटे कदमों से प्रयास प्रारम्भ हो चुका है और अब तक कई लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों की पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। आगामी विश्व पुस्तक मेले के लिए नए प्रकाशनों पर युद्धस्तर पर कार्य जारी है। कई उल्लेखनीय पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है। अस्सी के दशक के महत्वपूर्ण कथाकार सुरेन्द्र सुकुमार की समस्त कहानियों को तीन खंडों में प्रकाशित करने का काम चल रहा है। विनोद क्वात्रा की कहानियों का संकलन भी अपनी पूर्णावस्था में है। इसी क्रम में "ज्ञेय अज्ञेय" (विहंगम) अज्ञेय की पड़ताल करती एक पुस्तक : 2024 के विश्व पुस्तक मेले के दौरान पाठकों के मध्य लाने का विचार है।

जीवन में हर घटना अपने पीछे एक दास्तान लिए हुए होती है। हर घटना कुछ न कुछ ठोस विचार आपके मानस पटल पर छोड़ जाती है।

और जब यही घटना पुस्तक से संबन्धित हो तो फिर कहना ही क्या।

देश की पूर्व अग्रणी समाचार पत्रिका से लगभग आद्योपांत सम्बद्ध रहे वरिष्ठ पत्रकार त्रिलोकदीप के अनुभवों पर केन्द्रित "दिनमान~त्रिलोकदीप" को संपादित करने के बाद अज्ञेय जी को समर्पित इस पुस्तक की नींव पड़ी।

मेरे लिए त्रिलोकदीप श्रद्धेय हैं। श्रद्धेय इसलिए हैं कि वे हिन्दी पत्रकारिता की काजल की कोठरी में रह कर अपने नाम के अनुरूप दीप से प्रज्ज्वलित, सुशोभित और किसी प्रपंच से दूर शुचितापूर्ण आलोक की पुंजराशि बने हुए हैं।

'दिनमान~त्रिलोकदीप' में हिन्दी की कालजयी समाचारपत्रिका दिनमान का लेखा-जोखा लेने के बाद उनका सुझाव, अपने मानस गुरु स्वर्गीय सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन उर्फ अज्ञेय जी श्रद्धांजलि देते हुए एक पुस्तक, उन पर समर्पित करने का रहा।

बस योजना बन गई।

त्रिलोकदीप जी ने नाम सुझाए कि किन-किन महानुभावों से संपर्क किया जासकता है। संपर्क का यह दायित्व मुझे तो मिला ही पर अधिकांश भार उन्होंने अपने बलिष्ठ कंधों पर रख लिया।

सुश्री चित्रा मुद्गल जी से अगले कुछ दिनों में मुलाक़ात तय करके सामग्री लेनी है। सुश्री गगन गिल जी से भी त्रिलोकदीप जी की बात हो गई है। श्रीमति पुष्पा भारती जी का नाम इस पुस्तक केलिए बहुत अहम था। 33वें केके बिड़ला स्मृति व्यास सम्मान से सुशोभित पुष्पा जी से भी उनकी पुस्तक "यादें यादें और यादें" में संगृहीत अज्ञेय जी से संबन्धित उनके संस्मरण को इस पुस्तक में समावेशित करने की स्वीकृत हासिल कर ली गई है।

पुस्तक केलिए आलेख प्राप्त हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं, यही कार्य सबसे दुरूह था जो अब सम्पन्न हो चुका है।

लगभग 400 से अधिक पृष्ठ लिए यह पुस्तक 2024 विश्व पुस्तक मेले के दौरान लोकार्पित की जाएगी....मुझे पूरा विश्वास है कि पुस्तक अपने पाठकों को नवीन जानकारी दे पाने में सफल होगी...

जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि "samparkbhashabharati Patrika" का फेसबुक एकाउंट अक्तूबर 2023 के अंत में हैक हो गया था जो रिकवर नहीं हो पाया है। चलते-चलते आप सब से अनुरोध है कि निम्न किसी एक एकाउंट केलिए मित्रता अनुरोध भेजें ताकि आप को पत्रिका के परिवार से सम्बद्ध किया जा सके :

(1) Sudhendu Ojha : https://www.facebook.com/sudhendu.ojha.1

(2) SamparkbhashabharatiOne Patrika: https://www.facebook.com/profile.php?id=100019648358682

नव-वर्ष 2024 की अशेष शुभकामनाओं के साथ आपका....

सादर,

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन

इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड

फोन नंबर : 7055336168/9456717150

ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

जनवरी-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	सभा/समाचार :	शिल्पी चड्ढा सम्मान	6-8
3	नरेंद्र कौर की कवितायें	समाचार	8-10
4	हरिद्वार में बही काव्य धारा	समाचार	11-12
5	सीवान के रूपेश को मिला सम्मान	समाचार	12
6	देश की आज़ादी में गोरखपुर...	माधवी मिश्रा	14-18
7	भंडारा	राजेंद्र ओझा	20
8	कविता	सुमन झा	22
9	कविता	नवीन माथुर पंचोली	22
10	दर्दे दिल	प्रिया देवांगन 'प्रियू'	24
11	निदा फाजली ...संस्मरण	आशा शैली	25
12	चमत्कारी कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया	25
13	1 जनवरी को नया वर्ष...	पद्मा अग्रवाल	26-27
14	द स्टडी रूम	महेंद्र महर्षि	29-31
15	कविता	विकास विदीप्त	31
16	कहानी : गीले गिलाफ़	प्रतिमा पुष्प	32-39
17	कविता	विजय कनौजिया	39
18	कहानी : स्वप्नदुआरी	नन्दन पंडित	41-48
19	कहानी : एंप्लोयमेंट लेटर	पद्मा अग्रवाल	50-58
20	मैं तो हूँ अलमस्त : पुस्तक समीक्षा	उपमा शर्मा	60-62
21	लघुकथा	नीना सिन्हा	62
22	सुनो राधिके! सुनो!!	पुस्तक समीक्षा	63-64
23	कविता	शिवानंद सिंह सहयोगी	64
24	कविता	संजय सिंह	65
25	कविता	चंद्रकांता सिवाल 'चंद्रेश'	68

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

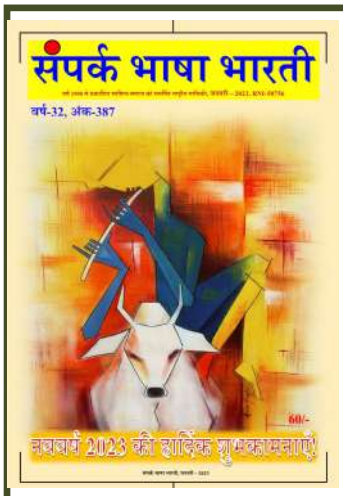

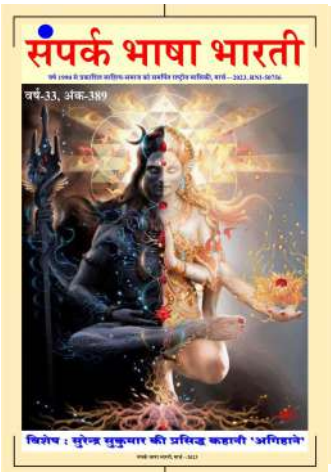

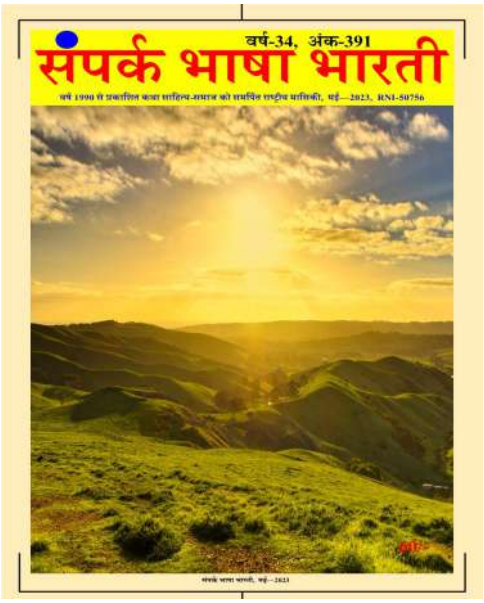

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान समारोह

हीरों में हीरा सम्मान

श्री प्रसून लतांत

साहित्यकार सम्मान

डॉ संजीव कुमार

शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान

श्रीमती शाहाना परवीन

गीतकारश्री सम्मान

श्रीमती रंजना मजूमदार

सविता चड्ढा जन सेवा समिति, दिल्ली द्वारा हिन्दी भवन में चार महत्वपूर्ण सम्मान प्रदान किए गए । अपनी बेटी की याद में शुरू किए सम्मानों में, अति महत्वपूर्ण "हीरों में हीरा सम्मान" इस बार गांधीवादी विचारक प्रसून लतांत को, साहित्यकार सम्मान साहित्यकार एवं प्रकाशक डॉ संजीव कुमार और शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान श्रीमती शाहाना परवीन और श्रीमती रंजना मजूमदार को गीतकारश्री सम्मान महामहोपाध्याय आचार्य इंदु प्रकाश और श्री इंद्रजीत शर्मा के कर कमलों से प्रदान किया गया।श्री अनिल जोशी की उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की । शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान समारोह की संस्थापक एवं महासचिव, एवं साहित्यकार सविता चड्ढा ने श्रीमती शाहाना परवीन को सम्मान के साथ साथ पाँच हज़ार एक सौ रुपए की नकद राशि भी प्रदान की और देश भर से पधारे लेखकों, कवियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि ये

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

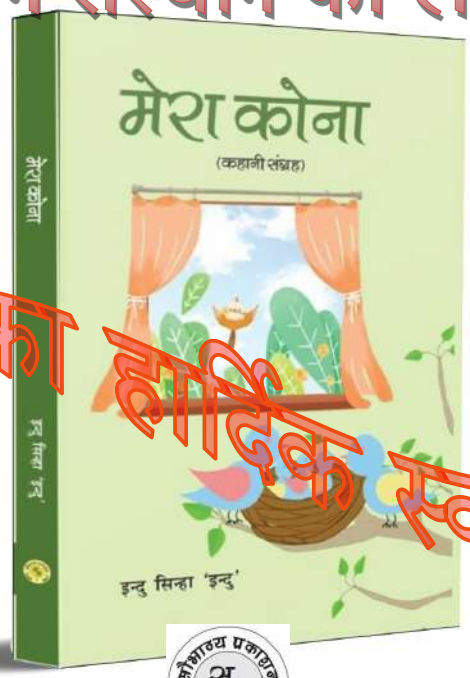

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सम्मान माँ और बेटी के मधुर संबंधों को समर्पित है।

इस अवसर पर प्रसून लतांत ने स्वयं को हीरों मे हीरा सम्मान दिये जाने पर समिति का आभार व्यक्त किया और सभा को संबोधित करते इन सम्मानों को दिए जाने को साहित्य में सकारात्मकता के रूप में लिए जाना कहा। अपनी बेटी के लिए पिछले सात साल से प्रारम्भ इन सम्मानों के लिए सविता जी की सराहना की। इस अवसर पर डॉ.संजीव कुमार, डॉ स्मिता मिश्रा। शकुंतला मित्तल ने अपने विचार रखें और इन सम्मानों की निष्पक्षता और चुने जाने की प्रक्रिया अपनी बात कही।

इस वर्ष प्राप्त पुस्तकों में से अन्य 14 लेखकों की पुस्तकों का चयन भी किया था। इस अवसर पर डॉ विनय सिंघल निश्छल को उनकी पुस्तक, संबंध, व्यक्त अव्यक्त, श्रीमती नाज़रीन अंसारी को ,मां और लफ्जों का संगम पुस्तक के लिए ,.श्रीमती अर्चना कोचर, को तपती ममता में गूंजती किलकारियां संग्रह के लिए, श्रीमती आशमा कौल को स्मृतियों की आहट के लिए ,.श्री राही राज को उनकी पुस्तक पिता के लिए,. श्रीमती कमल कपूर को जिएं तो गुलमोहर के तले, के लिए श्रीमती रत्ना भादोरिया को "सामने वाली कुर्सी" के लिए, डॉ पुष्पा सिंह बिसेन को उनके उपन्यास "भाग्य रेखा" के लिए,. श्रीमती अंजू कालरा दासन 'नलिनी' को उनके संग्रह "आईना सम्बन्धों का" के लिए, श्रीमती यति शर्मा को उनकी पुस्तक "आधी रात की नींद", श्रीमती हेमलता म्हस्के को ""अनाथों की माँ सिंधुताई" के लिए शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान समारोह " में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जापान, लंदन, अमेरिका के आलावा दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, मध्य प्रदेश, लखनऊ, आगरा, राजस्थान, मुरादाबाद, इंदौर, बैंगलोर , पंजाब, नोएडा और दिल्ली के साहित्यकार और गणमान्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ कल्पना पांडेय ने किया।

'सामाजिक विसंगतियां पर प्रहार करती है नरेंद्र कौर छाबड़ा की लघुकथाएँ...' : सिद्धेश्वर

"कथ्य,शिल्प और लघुकथा के मानकों पर खरी उतरती है नरेंद्र कौर छाबड़ा की लघुकथाएं। ": निर्मल कुमार दे

पटना : 19/12/23। लघुकथा विधिध विषयों पर लिखे गए हैं और आज भी लिखे जा रहे हैं। पारिवारिक लघुकथाएं, सामाजिक लघुकथाएं, पुरुष प्रधान लघुकथाएं,स्त्री प्रधान लघुकथाएं, बाल मनोविज्ञान से संदर्भित लघुकथाएं, यौन मनोविज्ञान से संदर्भित लघुकथाएँ यानि जीवन के लगभग हर विषय पर लघुकथा लिखने का सार्थक प्रयास किया गया है। और जब हम इन विषयों को जीवन से जोड़कर लिखते हैं, तब वह कहीं ना कहीं से लघुकथाएं, सामाजिकता से ओत-प्रोत हो जाती है। यानि उसके भीतर सामाजिकता का प्रादुर्भाव होता है।

व्यक्ति, समाज तथा परिवार को हम अलग-अलग नाम भले देते हैं पर बात, लगभग एक ही होती है, और सब का उद्देश्य एक ही होता है, समाज में घटित विसंगतियां पर प्रहार करते हुए, समाज को और बेहतर बनाने की दिशा में, सार्थक और जीवंत रचनाओं का सृजन करना।

यह सर्वविदित है कि लघुकथा कम शब्दों में और कम समय में, अधिक से अधिक व्यक्ति के भीतर जाकर, सार्थक चिंतन और वैचारिक विमर्श का कारण बनती है। शायद इसलिए एक बेहतर समाज बनाने की दिशा में लघुकथाकारों का विशेष दायित्व बनता है। और इस दायित्व निर्वाह में , वरिष्ठ लघुकथा लेखिका नरेंद्र कौर छाबड़ा अग्रणी भूमिका निर्वाह करती हुई नज़र आती है। नरेन्द्र कौर छाबड़ा की अधिकांश लघुकथाएं, सामाजिक और पारिवारिक विसंगतियों के खिलाफ एक हथियार का काम करती है। सामाजिक विसंगतियों को दूर करने की दिशा में नरेन्द्र कौर छाबड़ा एक सजग लघुकथाकार की भूमिका में दिखती, इस पुस्तक से परिलक्षित होता है।

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वाधान में गूगल मीट

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-9-4**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 208
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

के माध्यम से फेसबुक के 'अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर ' के कार्यक्रम का संचालन करते हुए संयोजक सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उदगार व्यक्त किया। उन्होंने नरेंद्र कौर छाबड़ा की कुछ चुनिंदा लघुकथाओं पर चर्चा करते हुए, अपनी डायरी प्रस्तुत करने के क्रम में कहा कि -- स्वच्छता दिवस, टूटे सपनों का दुख, दान पुण्य, आदि भी कुछ इस तरह की लघुकथाएं हैं जो सामाजिकता से लेस होकर एक नई सोच को रेखांकित करती है, साथ ही हमारी गंदी रूढ़िवादिता और संकीर्ण भावना के ऊपर प्रहार भी करती है। इन लघुकथाओं को पढ़ते हुए लगता है कि सामाजिक विसंगतियां पर प्रहार करने की दिशा में नरेंद्र कौर छाबड़ा एक सशक्त लघुकथा लेखिका है ।

मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार नरेंद्र कौर छाबड़ा ने अपनी एक दर्जन लघुकथाओं का पाठ कर प्रबुद्ध श्रोताओं का मनमुग्ध कर दिया। गोष्ठी का आरंभ में उन्होंने कहा कि , लघुकथा कम-से-कम शब्दों में जीवन और समाज का तीखा सच उद्घाटित करती हुई मानवीय संवेदना को झकझोर कर,हमें अंतर्मंथन को विवश करती है। उन्होंने हेलो फेसबुक लघुकथा सम्मेलन की सार्थकता को रेखांकित करते हुए कहा कि– बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्तित्व श्री सिद्धेश्वर जी ने पिछले तीन वर्षों से, साहित्यिक संस्था भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वाधान में,अवसर साहित्यधर्मी मंच के द्वारा देश भर के नए पुराने अनेक लेखकों को अपने साथ जोड़ा है । सतत अनेक प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन करते रहते हैं, जिससे नए लेखकों को बहुत प्रेरणा मिलती है। जिन लेखकों ने कभी लघुकथा नहीं लिखी थी वह भी उनकी प्रेरणा और सहयोग से लिखने लगे हैं। कार्यक्रम में वे निष्पक्ष तरीके से अपनी राय तथा समीक्षा करते हैं जिससे लेखन में सुधार आता है। साहित्य में उनका यह योगदान सराहनीय है। हम आशा करते हैं यह मंच इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति करता रहेगा तथा देश में अच्छे लेखकों की संख्या बढ़ती जाएगी।

अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में वरिष्ठ साहित्यकार निर्मल कुमार डे ने कहा कि- आज हेलो फेसबुक लघुकथा सम्मेलन कार्यक्रम बहुत ही सार्थक रहा। मुख्य अतिथि एवम वरिष्ठ साहित्यकार नरेंद्र कौर छाबड़ा के द्वारा प्रस्तुत लघुकथाओं को सुनकर सम्मेलन में शामिल सभी लोगों ने इनकी खूब सराहना की। कथ्य,शिल्प और लघुकथा के मानकों पर खरी इन लघुकथाओं का संदेश भी उम्दा और साकारात्मक था। मैंने भी अपनी दो लघुकथाएं का वाचन किया। मुख्य अतिथि और अन्य वरिष्ठ साहित्यकार मित्रों ने मेरी रचनाओं की प्रशंसा कर मेरी भी हौसला अफजाई की है। इसके लिए शुक्र गुजार हूँ सबों का।

साहित्यकार सिद्धेश्वर के नि:स्वार्थ साहित्य सेवा के लिए मंच पर मौजूद सभी लोगों ने उनके प्रति आभार व्यक्त किया तथा उनकी सतत साहित्य साधना के लिए शुभकामनाएं दी।आज के सम्मेलन में पूनम सिन्हा श्रेयषी , डॉ मंजू सक्सेना,, सुधा पांडेय, निवेदिता श्रीवास्तव, अनिल कुमार जैन, ऋचा वर्मा,इंदु उपाध्याय, सपना चंद्रा,रत्ना मानिक,नलिनी श्रीवास्तव,गार्गी राय, राज प्रिया रानी, विजया कुमारी मौर्य, निर्मल करण, डॉ.अनुज प्रभात, मीना कुमारी परिहार आदि ने अपनी अपनी लघुकथाएं पढ़कर सम्मेलन को समृद्ध किया।श्री सिद्धेश्वर जी ने लघुकथा लेखन की बारीकियों को विस्तार से समझाकर सभी का मार्गदर्शन भी किया।डॉ अनुज प्रभात के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन की समाप्ति की घोषणा की गई। इनके अतिरिक्त इस ऑनलाइन सम्मेलन में कल्पना भट्ट, डॉ सुनीता मिश्रा, पुष्प रंजन , नंद कुमार मिश्र, सुनील कुमार उपाध्याय, संतोष मालवीय, वर्षा अग्रवाल, विनोद नायक आदि की उपस्थिति भी महत्वपूर्ण रही। अंत में, संस्था की सचिव ऋचा वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की।

प्रस्तुति : डॉ अनुज प्रभात (उपनिदेशक) एवं
सिद्धेश्वर [अध्यक्ष]/ भारतीय युवा साहित्यकार परिषद /
पटना / बिहार

मां गंगे की पावन धरा, हरिद्वार में बही काव्य की रसधार

प्रणेता साहित्य न्यास ,(पंजीकृत) तथा अहं ब्रह्मास्मि -नव उद्घोष के संयुक्त तत्वावधान में हरिद्वार के प्रेस क्लब में रविवार, 24 दिसंबर 2023 को एक भव्य राष्ट्रीय काव्य महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता देश के विख्यात गीतकार आदरणीय रमेश रमन जी ने की । मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे गुरुग्राम से सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार त्रिलोक कौशिक जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री वीणा अग्रवाल जी उपस्थित रहीं। सुप्रसिद्ध साहित्यकार गोपाल दास नीरज जी के सुपुत्र मिलन प्रभात जी की इस आयोजन में विशेष उपस्थिति रही।इस आयोजन का सुव्यवस्थित, अनुशासित संयोजन अहं ब्रह्मास्मि की संस्थापिका दीपशिखा श्रीवास्तव'दीप' तथा प्रणेता साहित्य न्यास के संस्थापक एस.जी.एस. सिसोदिया व महासचिव शकुंतला मित्तल और भूदत्त शर्मा जी ने किया । दीपशिखा श्रीवास्तव जीऔर शकुंतला मित्तल के सरस आत्मीय संचालन ने इस कार्यक्रम को नई ऊंचाइयाँ प्रदान कीं।

दीपशिखा श्रीवास्तव 'दीप' ने दिल्ली एन.सी.आर, उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड से उपस्थित साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया तत्पश्चात् अतिथियों द्वारा मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण किया गया तथा इसके बाद सुविख्यात साहित्यकार गोपाल दास नीरज की पुत्रवधू रंजना सक्सेना द्वारा मां शारदे की सुमधुर स्तुति की गई।

इसके पश्चात् प्रणेता साहित्य न्यास की सचिव तरुणा पुंडीर जी ने अध्यक्ष और अतिथि वृंद का विस्तृत परिचय सबके समक्ष रखा।सभी अतिथियों व साहित्यकारों को स्मृति चिह्न देकर तथा शाल व माला पहनाकर सम्मानित किया गया।

प्रणेता साहित्य न्यास का परिचय देते हुए संस्था के संस्थापक एस जी एस सिसोदिया जी ने संस्था के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए बताया कि 2017 में इसका गठन हुआ और हम विगत 6 वर्षों से श्रीमती एवं श्री खुशहाल सिंह सम्मान प्रतियोगिता में हर वर्ष अलग विधा में पुस्तक मंगवाते हैं और 5000 रुपए की धनराशि, अंगवस्त्र और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने इस वर्ष के लिए काव्य पुस्तक का आह्वान किया।विगत वर्ष प्रणेता साहित्य न्यास ने चंचल पाहुजा स्मृति सम्मान भी करवाया गया। अहं ब्रह्मास्मि की संस्थापिका दीपशिखा ने भी अपनी संस्था के कार्यक्रमों से अवगत कराया।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों से आए हुए राष्ट्रीय स्तर के कवियों ने काव्य की ऐसी रसधार प्रवाहित की कि पूरा सभागार मानो मंत्रमुग्ध हो गया।

रमेश रमन जी, त्रिलोक कौशिक जी, वीणा अग्रवाल जी, दीपशिखा श्रीवास्तव, भूदत्त शर्मा, एस जी एस सिसोदिया, शकुंतला मित्तल, मिलन प्रभात जी, सुजीत कुमार, मीना चौधरी, रेणु मिश्रा, लोकेश चौधरी, डॉ ऋतंभरा मिश्रा, संयोगिता यादव, डॉ. पराग शर्मा, रश्मि ममगाई, तरुणा पुंडीर, साधुराम 'पल्लव', डॉ मीरा भारद्वाज, आचार्य अनुरागी, डॉ सुशील त्यागी, सोनेश्वर कुमार सोना, रवीन्द्र कुमार 'गुल', अरविंद दूबे, राजकुमारी थर्रान, कर्मवीर तथा अमन शुक्ला 'शशांक' की शानदार काव्य प्रस्तुतियों ने आयोजन की शोभा में चार चांद लगा दिए।

अनेक वरिष्ठ पत्रकार बंधुओं व कारपोरेट जगत के अनेक सुधी श्रोताओं ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

अंत में एस.जी.एस सिसोदिया जी ने दोनों संस्थाओं की ओर से उपस्थित विद्वद्जनों का हृदय से आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के मध्यांतर में जलपान तथा समापन सुस्वादु भोजन के द्वारा किया गया।

सीवान के रूपेश को मिला "भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी सम्मान-2023"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सूचना जनसंपर्क विभाग हजरतगंज लखनऊ के सभागार में आयोजित भव्य कार्यक्रम की अद्भुत छटा अति मनमोहक थी। यह कार्यक्रम को माननीय अब्दुल अजीज़ सिद्दीकी जी के मार्गदर्शन एवं अध्यक्षता और आ. डॉ. रीमा सिन्हा जी के संयोजन में संपन्न हुआ । इस अद्भूत कार्यक्रम में चैनपुर सीवान बिहार के युवा साहित्यकार एवं विभिन्न चार काव्य संग्रहो के लेखक रूपेश कुमार को "भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी सम्मान - 2023" से डॉ.अम्मार रिज़वी , डॉक्टर सुलतान शाकिर हाशमी, अरशद मुर्तजा वारसी, एस.के सिंह, अब्दुल अजीज़ सिद्दीकी, डा. रीमा सिन्हा द्वारा शाल ओढ़ाकर एवं अटल स्मृति चिन्ह भेंट करके किया गया। यह कार्यक्रम प्रिंट मीडिया वर्किंग जर्नलिस्ट एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित हुआ ।

रूपेश को इससे पहले राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक, सामाजिक संस्थाओं से अनेकों सम्मान मिल चुका है जिसमें भारत के सभी प्रांतो से लेकर इंडोनेशिया, लंदन, श्रीलंका, अमेरिका देशों से एवं इनका नाम वर्ल्ड रिकॉर्ड्स बुक लंदन एवं ब्रिटिश वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है। कार्यक्रम में देश विदेश के पाँच सौ से अधिक गणमान्य लोग मौजूद रहे। इन्हीं के साथ मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व कार्यवाहक मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री डॉ.अम्मार रिज़वी,अति विशिष्ट अतिथि के रूप में, मशहूर साहित्यकार डॉक्टर सुलतान शाकिर हाशमी, बरेली से पुलिस मॉनिटर के सम्पादक एस.के सिंह, काशान् ए वारिस के अध्यक्ष अरशद मुर्तजा वारसी, महासचिव मो० इमरान, डॉक्टर उमंग खन्ना, डॉक्टर आदर्श त्रिपाठी, राष्ट्रपति पदक से सम्मानित आज़ाद हफीज, के अलावा कई गणमान्य हस्तियां उपस्थित रहीं। इन्ही के साथ शहर के कई वरिष्ठ पत्रकार व समाजसेवी भी मौजूद रहे। पत्रकारों के हित के कार्यों के आलावा हर वर्ग का सम्मान करने में अग्रसर प्रिन्ट मीडिया वर्किंग जर्नलिस्ट एसोसिएशन की तरफ़ से हुए इस चतुर्थ सम्मान समारोह में सब ने भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई जी के चित्र पर पुष्प अर्पित किए और उनकी जीवनी को एक दूसरे से साझा किया साहित्यकारों, समाजसेवियों एवं पत्रकारों का सम्मान अन्त में प्रिन्ट मीडिया वर्किंग जर्नलिस्ट एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा समस्त टीम ने आए अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

देश की आजादी में गोरखपर का महत्व

माधवी मिश्रा

देश की आजादी की लडाई मे, गोरखपर का भी अपना एक स्थान है।

यहाँ के वीरों ने भी गुलामी का ताज उतार फेकने के लिए भरतीय स्वतंत्रता संग्राम मे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और अपने प्राणों की आहुति दी। गान्धी वादी और चरमपंथी दोनो विचारधाराओं के क्रान्तिकारी देश की आजादी के लिए लड़ रहे थे। इन्ही विचार धाराओं मे से एक थे पीपीगंज क्षेत्र के ग्राम भीटी निवासी आजाद हिद फौज के लेफ्टिनेंट चंद्रशेखर मिश्र जो भीटी निवासी रामसेवक मिश्र व दुलारी देवी की तीसरी संतान थे।इनका जन्म 20 अगस्त 1920 को हुआ था। रामसेवक मिश्र गांधीवादी कांग्रेसी कार्यकर्ता थे।कांग्रेसी सम्मेलनों मे सामिल होना उनका पावन कर्तव्य था। ब्रिटिस सरकार और अंग्रेजों के प्रति घृणा का बीज ले. चंद्रशेखर मिश्र के हृदय मे बचपन से ही अंकुरित हो चुका था।

बचपन मे ही पिता की मृत्यु के पश्चात घरवालों उनके चाचा ताऊ आदी ने उन्हे संस्कृत की शिक्षा दीक्षा के लिये बनारस भेज दिया जहाँ इनका नामांकन काशी संस्कृत विद्यापीठ मे हुआ लेकिन यहाँ इनका मन न लगा और 1932 मे वापस अपने गाँव भीटी चले आये।

अपनी डायरी मे ले॰चंद्रशेखर मिश्र लिखते हैं कि" -जब मैं 13 वर्ष का था अपने पिता जी के साथ जो गान्धी जी के अनन्य भक्त थे कांग्रेस के त्रिपुरा अधिवेशन मे गया था। जहाँ पर नेता जी शुभाष चंद्र बोष कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये और गान्धी के उम्मीदवार पट्टाभिसीतारमय्या चुनाव हार गये।।इससे गान्धी भक्त मेरे पिता जी बहुत दुखी हुए लेकिन मेरे मन मे भावना आयी कि ये व्यक्ति नेताजी शुभाष चंद्र बोष कितना महान है ओर कितना बडा है जिसने गान्धी बाबा के उम्मीदवार को चुनाव हरा दिया।जिस गान्धी बाबा का जयकार सम्पूर्ण देश मे हो रहा था।इस प्रकार मैं नेताजी

शुभाष चंद्र बोष से इतना प्रभावित हुआ की उनका अनन्य भक्त हो गया।"

कालान्तर मे पारिवारिक परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बनी की 1938 में चान्दशेखर मिश्र लखनऊ जाकर ब्रिटिश इंडियन आर्मी मे भर्ती हो कर सिकंदराबाद पहुँच गये।जहाँ से द्वितीय विश्वयुद्ध सुरु होते ही उन्हे मलाया भेज दिया गया।इस संदर्भ मे अपनी डायरी मे श्री चंद्रशेखर मिश्र लिखते हैं कि"हमारी ब्रिगे K-2 नामक स्थान पर जापानी सैनिकों की कार्यवाही रोकने को तैनात थी ।हाई कमान से निरंतर ऐसे आदेश मिलते जिससे हमारे ही सैनिकों का सर्वाधिक नुक सान होता ।हमारे अन्ग्रेज अधिकारी हिन्दुस्तानी सैनिकों को बली के बकरे की भाँति गलत व खतरनाक रास्ते पर जाने का आदेश देते थे।

हम जापानियों के हाथ गाजर व मूली की तरह कट रहे थे।इस बीच हम सैनिक भाइयों को कुछ मटमैले रंग के पर्चे प्राप्त हुए जिन पर लिखा था मेरे हमवतन भाइयों तुम्हे ब्रिटेन के खिलाफ जंग का एलान करना चाहिये।।अंगेजों ने पहला हिंसक वार किया।भारत मे हमारे नेताओं की गिरफ्तारी उनके चालबाजी को प्रगट करता है।

अन्ग्रेज इस वख्त चारो तरफ से घिरे हैं फिर भी वह तुम्हारे खून की नदी बहाना चाहते हैं। जापान व भारत का दुश्मन एक ही है ब्रिटेन। अत: युद्ध बन्द कर दो -सेन्सई-रासबिहारी बोष"।इस प्रकार सैनिक युद्ध बन्द करने पर विचार विमर्श कर रहे थे।मै क्राफ्ट मैन था। रात्रि तीन बजे मुझे आदेश मिला कि अगले फ्रंट पर जाकर खराब टैंको की मरम्मत करने मे मदद करो।मैं मोटर सायकिल से अभी 3 किलोमीटर ही पहुचा था कि जापानी हवाई जहाजों ने इतनी भयानक बमबारी किया की हमारी पूरी फिफ्टीन ब्रिगेड जल कर नष्ट हो गयी।

उधर जापानी सैनिकों ने मुझे मोटर सायकिल से भागते देख लिया।मैं ऊबड़ खाबड़ रास्तों से अंजान मंजिल की ओर भागा टैंको ने गोलियों से बौछार कर दिया मेरे पाव जख्मी हो गये मैं मोटर सायकिल से गिर पड़ा। भाग्य ने साथ दिया टैंकों की दृष्टी से मैं बच गया। गिरने के बाद मुझे होश न रहा।काफी दर बाद जैसे किसी ने मुझे सहारा दिया देखा तो एक लड़की और

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

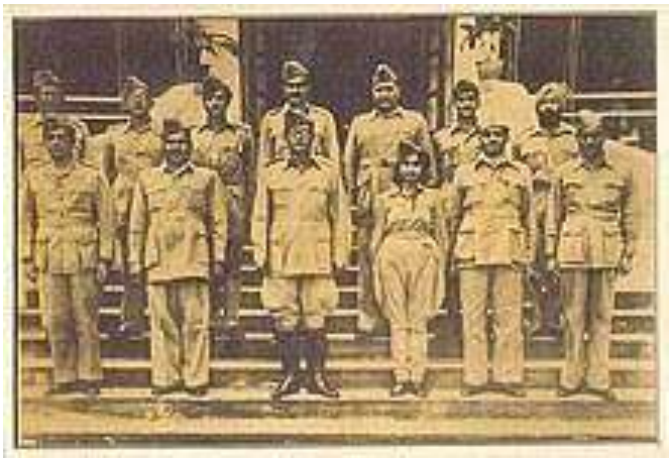

दो व्यक्ति थे जो देखने मे हिदुस्तानी लगते थे।मुझे कुछ विश्वास हो चला मैने उन्हे सच्चाई बता दिया। वो लोग हंस पड़े और मुझे अपने साथ कोलाल्मपुर ले आये।जहाँ मेरा सुव्यवस्थित इलाज हुआ।

वहीँ मुझे पता चला की ये लोग महान क्रन्तिकारी देशभक्त रास बिहारी बोष द्वारा बनाये इंडियन इंडिपेंडेंट लीग के सैनिक शाखा के अधिकारी थे और जापानी सेना के लिए गुप्तचरी कर रहे थे।जब मै स्वस्थ हो गया तो जोशीनागा(जापानी सेना के एक सैनिक उच्चाधिकारी) के साथ टोकियो भेज दिया गया। वहाँ मुझे ओ॰टी॰एस॰की ट्रेनिंग करायी गयी।।जब मैं वहाँ से निकला तो लेफ्टिनेंट की हैसियत से आजाद हिद फौज के एस एस ग्रुप मे रखा गया।उस समय हमारे कमांडर इन चीफ थे ब्राह्मुद्दीन। मैं पहलीबार सेकेंड लेफ्टिनेंट के रूप मे सिंगापुर आया।जो हमारे आजाद हिंद फौज का हेड क्वाटर था। ।वहाँ हमे पता चला की नेताजी शुभाष चंद्र बोष आये हैं। उनके आगमन की खबर सुनकर मुझे असीम शान्ति एवम आनंद का अनुभव हुआ।"

वास्तव मे लेफ्टिनेंट चंद्र शेखर मिश्र की डायरी जंग ए आजादी और आजाद हिन्द फौज का रोचक और प्रेरक दस्तावेज है। गोरखपुर की माटी मे पले व बढ़े अजादी के वीर सिपाही लेफ्टिनेंट चन्द्रशेखर मिश्र ने एक एक घटना को सिलसिलेवार संग्रहीत किया है।जिसके वह स्वयं प्रत्यक्षर्शी थे।ले॰मिश्र लिखते हैं की"4 जून 1943 को हम लोंगो द्वारा सिंगापुर मे कैथे की बिल्डिंग मनता जी सुभाष चंद्र बोष के स्वागत कि तैयारी कि गयी।इसी हाल मे माननीय रास बिहारी बोष ने 5000 प्रतिनिधियों के बीच अध्यक्ष पद से अपना त्यागपत्र देते हुएअपने भाषण के अन्त मे कहा "मेरे दोस्तों, और बहादुर फौजी सथियो आज आप लोगों के समक्ष मै अपने पद से स्तीफा देता हूँ। महान देश भक्त शुभाष चंद्र बोष जो अभी तक जर्मनी मे रहकर स्वाधीनता आन्दोलन को प्रोत्साहित करते रहे आज आप सबके सामने इन्हे, इंडियन इंडिपेंडेट लीग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।यहीं पर नेता जी ने प्रथम बार 'सब मिलकर हिन्द पुकारें-जय आजाद हिद के नारे को दिया।और दिनों दिन आजाद हिन्द फौज मजबूत होती गयी।

देश की आजादी के लिए नौजवानो का समूह आजाद हिन्द फौज मे सामिल सामिल होने लगा।आजादी के लिए मिटने वालो की होड़ लग गयी। इसी बीच आजाद हीन्द फौजियों के बीच नेता जी का अविस्मर्णीय भाषण हुआ '"इस संसार मे सभी वस्तुएं नाशवान हैं पर उच्च विचार ,आदर्श तथा हमारे स्वप्न अमर और अटल हैं और वे एक पीढी से दूसरी पीढी को अपने आप हस्तांतरित हौ जाते हैं।

आने वाली संताने उसे पूरा करने का प्रयत्न करती हैं। इसी प्रकार मानव उन्नति का चक्र चलता रहा है। अतह हम लोंगो को त्याग तथा बलिदान करके अपनी पूर्णाहुति देनी चाहिये और ये ना भूलो की संसार का सबसे बड़ा अभिशाप है

दासता।और सबसे बड़ा अपराध है अन्याय और दुष्कर्म के साथ समझौता।इसलिये सबसे बड़ा सद्गुण है अन्याय और विषमता को मिटाने के लिए मर मिटना। कुछ प्राप्त करने के लिए कुछ खोना ही जीवन का अमर सिध्दान्त है।तुम्हे कुछ लेना है तो कुछ दो।यदि तुम मुझे खून दो तो मैं तुम्हे आजादी दूँगा। "

जब सिंगापुर मे नेता जी ने दिल्ली चलो का आदेश दिया तो कैप्टन लक्ष्मी सहगल;ब्रिगेडियर पि के सहगल;साहन्वाज खान,मेजर तस्म्मुल हुसैन,मेजर ब्राह्मुद्दीन,एल एस मिश्र तथा स्वयं लेफ्टिनेंट चन्द्रशेखर मिश्र के नेतृत्व मे आजाद हिन्द फौज थाईलैंड पार कर 4 फरवरी 1944 को बर्मा फ्रंट पर आक्रमण कर दिया और उसे अपने क जे मे ले लिया।19 मार्च को वहां तिरंगा फहराकर विजय की सुरुवात किया।अमर सेनानी बहादुर शाह जफर की मजार पर गये जहाँ ये शेर लिखा था :

गाजियों मे बू रहेगी जब तलक ईमान की
तख्त लन्दन तक चलेगी तेग हिदुस्तान की।।

इसे पढ़ कर नेता जी के आंखों मे आंसू आ गये। हम सभी मे फिर नया जोश भर गया।फिर हम मोयरा गंज फतह करने के लिए बढ़े और मोयरा गंज फतह कर तिरंगा फहराया गया। उसके बाद नेता जी का आदेश मिला लेफ्टिनेंट मिश्र 5,6के ग्रुप मे तुम बम्बई आ जाओ? वहां नेवी और मिलेट्री के जवानों मे अंग्रेजों के प्रति नफरत और अपने देश के प्रति समर्पित होने की भावना पैदा करो।हम लोग हवाईजहाज से चले और सुन्दर वन के दलदली इलाके मे नीचे उतारे गये। और अलग अलग दिशा मे चल दिये।।इधर ना जाने कैसे अंग्रेजो को मेरे बारे मे पता चल गया था उन्होने मुझे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने हेतु 5000 रुपये का इनाम घोषित करवा दिया।एक अन्ग्रेज द्वारा पीछा किये जाने पर मैने उसे गोली मार दी। कुछ ही दूर गया था की घेरे बन्दी मे गिरफ्तार कर लिया गया ।हमे लाकर लाल किले मे बन्द कर दिया गया।इसी बीच नेता जी सुभाष चंद्र बोष व हबिबुर्ह्मान सगौत से मंचूरिया की तरफ विमान से रवाना होते हुए ताईपे हवाई अड्डे के निकट विमान दुर्घना मे मारे गये। इस घटना से हम लोग हत्प्रभ व किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। हम लोंगो पर देश द्रोह का मुकदमा चला।जिसमे तेज बहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरु, रघुनंदन शरण बार ऐट लॉ हम लोंगो के वकील थे । हम पर मुकदमा चलता रहा अचानक 15 अगस्त 1947 को पता चला भारत स्वतंत्र हो गया। हम सब बन्दी भाव विभोर हो एक दूसरे के गले लग गये।और हमारे आजाद देश की सरकार ने हमे बाइज्जत रिहा कर दिया।

इस सम्बंध मे लेफ्टिनेंट चन्द्रशेखर मिश की पत्नी सावित्री मिश्रा ने बताया की 24 फरवरी 19 48 को चन्द्शेखर मिश्र से मेर विवाह हुआ वो बदे गम्भीर व आदर्श वाले व्यक्ति थे राष्ट्र प्रेम की मिशाल थे वे।नेहरु जी उन्हे पुत्र की तरह मानते थे ।क्रोध अहंकार से दूरक सहज व सरल व्यक्ति थे मिश्र जी देश सेवा कि भावना उनमे कूट कूट कर भरी थी। वो गोरखपुर जनपद के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों मे थे।आजादी के बाद भी उन्होने आल इडिया कांग्रेस कमेटी का नेतृत्व किया नेताजी मिसन के अध्यक्ष रहे।वो अपने परिवार से कहते थे की देश सेवा हमने इसलिये नही किया की हमे कोई इनाम या पद मिलेगा ।ये तो हमारा कर्तव्य था। इस माटी का कर्ज था हम पर। ये प्रत्येक देश प्रेमी को चुकाना चाहिये।नेता जी सुभाष चंद्र बोष के प्रति उनके ह्रदय मे अगाध प्रेम व सम्मान था। लेफ्टिनेंट मिश्र जीवन के अन्तिम क्षणों तक देश वा समाज की सेवा करते हुए अपनी धर्म पारायण पत्नी व पांच बच्चों को छोड़ 10 अगस्त 1986 को चिर निद्रा लीन हो गये।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

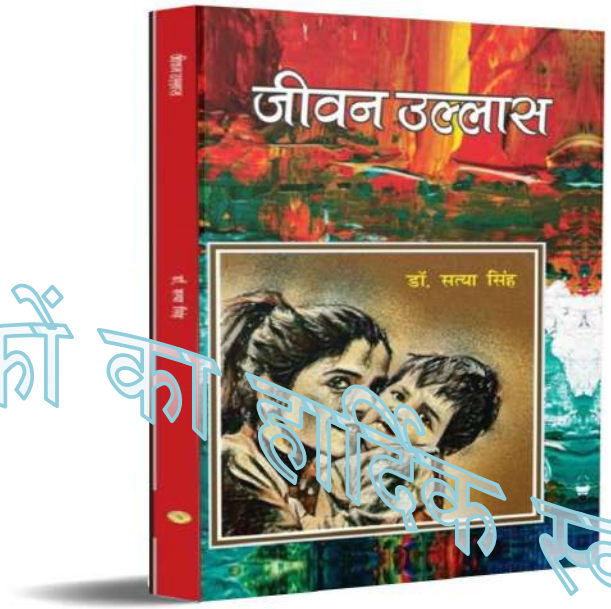

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

भंडारा

राजेन्द्र ओझा

किसी धार्मिक आयोजन के बाद विशाल पैमाने पर भंडारा आयोजित करना इन दिनों आम प्रचलन में हैं। वहां भी ऐसे ही किसी विशिष्ट आयोजन के बाद भंडारे का आयोजन किया गया था। "भंडारा, भंडारा, भंडारा। आने - जाने वाले श्रद्धालु भाई - बहनों से निवेदन है कि वे भगवान की महाप्रसादी ग्रहण करके ही जाए। रिक्शे वाले भाई, आइए। आटो वाले भाई, आइए। आइए, आइए भंडारा, भंडारा, भंडारा। जैसा उद्घोधन माइक से लगातार हो रहा था।

दोनों तरफ कतारें लग गई थी। महिलाओं की, पुरुषों की। बच्चो के लिए तो आनंद ही आनंद था। उत्सव का माहौल था उनके लिए। डी जे की कानफोडू धून पर वे बिना थके नाच रहे थे। कुछ लोग ऐसे भी थे जो सामान्य से ऊंचे घर के दिख रहे थे लेकिन एक नहीं, दो नहीं, तीन - तीन, चार- चार बार लाइन में लगे और 'रात की व्यवस्था' कहते हुए प्रसन्न हो रहे थे।

भीड धीरे-धीरे कम हो गई थी और भंडारे के उद्घोधन में भी वह उत्साह नहीं दिख रहा था जो भंडारे की शुरुआत में था। डी जे का बंद होना भी इसका एक कारण था।

आयोजक और कार्यकर्ता टेबल के दोनों तरफ बैठे थे। अस्थाई रूप से लगाए गए पंखे एवं कूलर को उनकी तरफ मोड दिया गया था। उन्हें वो परोसा जा रहा था जो भंडारे में कहीं नहीं दिखा। यह भोज मंदिर के पीछे तरफ चल रहा था।

भंडारा खत्म हो चुका था। मोड कर फेंके गए दोने और कागज की प्लेटे चारों ओर फैली पड़ी थी। वो उनको उठाता, फिरा हिलाता और फिर बोरे में भर देता। कोई दोना या प्लेट भारी लगने पर वो उसे खोलता। किसी में कुछ स जी मिल जाती, किसी में कुछ हलुआ तो किसी में पूरी का एकाध छोटा टुकडा। वह पूरा स्वाद लेकर उसे खाता और खुश हो जाता। उसने संभ्रांत कहे जाने वाले लोगों द्वारा फेंकी गई जूठन से अपना पेट भरा।

ऐसा नहीं था कि वह लाइन में नहीं लगा था। वह भी लाइन में लगा था। वह सामान्य से ऊंचे स्वर में जयकारे लगा रहा था और इसी कारण उसे पागल समझा गया और लाइन से बाहर कर दिया गया। और फिर वह लाइन में नहीं गया और भंडारे के प्रति वैसा पागलपन नहीं दिखाया जैसा अन्य सजे - धजे लोग बार-बार लाइन में घुसकर दिखा रहे थे।

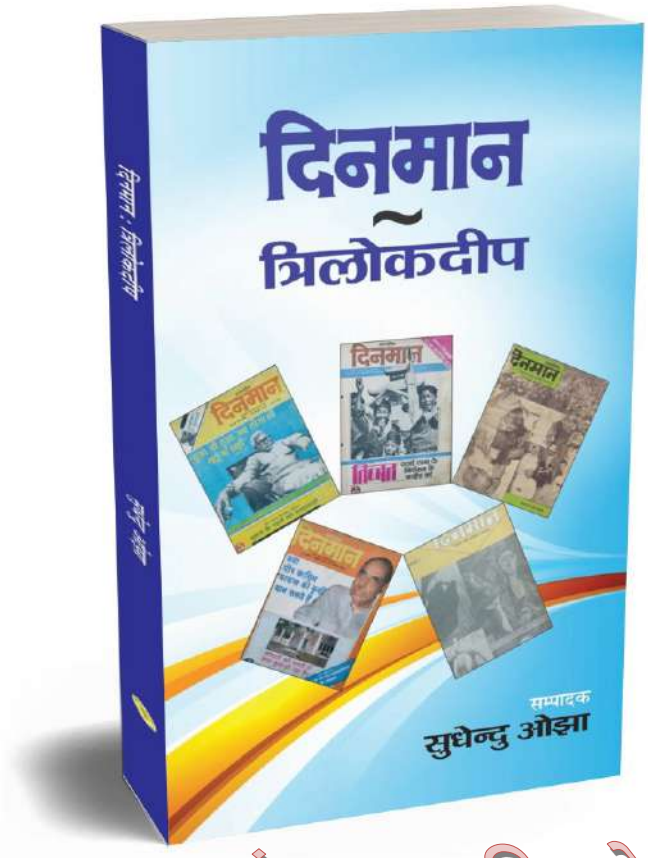

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

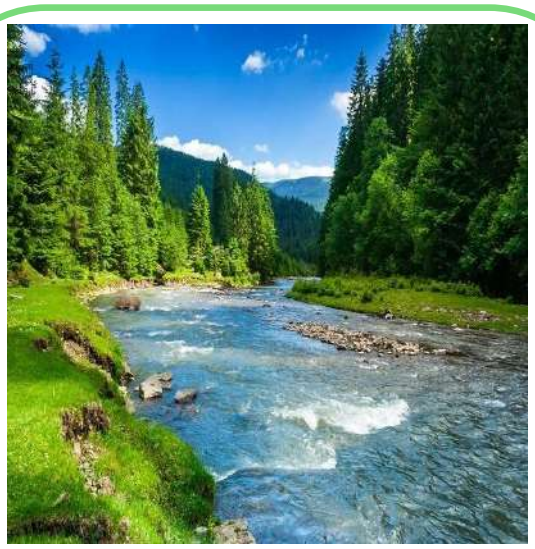

नदी

मैं जीवन के पूर्वाह्न में इठलाती बलखाती
जब चली विशालकाय पर्वतों से उतरी।
पहाड़ी रास्ते भी मेरा रास्ता नहीं रोक पाए
मैं विषाद से पर, हर्ष के भावातिरेक मे
और उछलते कूदती नाचती गाती चल पड़ी।
जब मैं चलती थी तो मेरे पांव थिरकते
मेरी लहरों में जीवंत उमंगे उठती थी
मेरे धाराओं से जल तरंगे बजती थी
मेरा पूरा जीवन संगीत मय हो गया
मैं श्वेत धवल चांदनी सी थी
जैसे ही मैं जीवन के मध्याह्न में पहुंची
लोगों ने मुझे बांधना शुरू किया
मेरी ही छाती पर बड़े बड़े बांध बना
मैं स्वच्छ निर्मल, मुझे विषाक्त किया गया।
अपने जितने दुख दर्द गंदगी दुष्ट विचार
सब मेरे में मिलाना शुरू किया
मेरा रंग अब मटमैला हो गया मेरी चाल धीमी पड़ गई
मुझमें ना अब वह गीत था ना वह संगीत
मैं बस मैं बनके रह गई बोझिल कदमों से
मैं धीमी गति से अपनी मंजिल सागर की ओर चल पड़ी।

सुमन झा "माहे"

साथ, सितारों के रहता है।
रिश्ता धरती से रखता है।
समझा है आँखो को जिसने,
अक़्सर सागर से मिलता है।
लोकतंत्र के गलियारों में,
राजतन्त्र सी वैभवता है।
भावों की ऊँचाई सुनकर,
बाजारों से डर लगता है।
इसको,उसको तकते रहना,
इन आँखों की चंचलता है।
लग जाता है बातों से ही,
किस में कितनी नैतिकता है।
एक वही सबका रखवाला,
जो सबके मन की सुनता है।

2

वो अगर चाँद की तरह होता।
तो मेरी चाह की वज़ह होता।
आमने - सामने, जहाँ भी वो,
फिर किसी पास सी जग़ह होता।
रात-दिन और जो पहर आठों,
साथ वो शाम हर सुबह होता।
मुश्किलें होसलों से डर जाती,
रास्ता दूर का फ़तह होता।
बात सुनते ही सब समझ लेता,
हाल सुलझी कोई गिरह होता।

3

हद से दूर निकलना क्या।
इतना ज़्यादा चलना क्या।
जो पहले से साथ मिले,
उनसे राह बदलना क्या।
घूँघट में है चहरा तो,
उसकी ओर मचलना क्या।
ठहरावों की सोच अगर,
जम कर बर्फ़ पिघलना क्या।
खोये - पाये हाल कोई,
रोना और बहलना क्या।
दिल को मुट्ठी में रखकर,
ख़ुद को ख़ुद से छलना क्या।

नवीन माथुर पंचोली

सौभाग्य प्रकाशन साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

दर्दे दिल

"शीला मुझे तुम्हारी बहुत फिक्र हो रही है,और होगी भी क्यों नहीं; उन्तीस बरस की जो हो गई हो। शादी की उम्र हो गई है तुम्हारी। पता नहीं तुमसे कौन शादी करेगा। " शीला की बड़ी माँ मालती के स्वर में चिंता से ज्यादा ताना था। चारों तरफ से सिर्फ एक ही आवाज कानों में गूँजती कि तुमसे शादी कौन करेगा शीला....?

यह समाज शीला के माता–पिता को प्रश्नों से आहत कर डालते थे। जिंदगी भर बिठा के रखने के तानों ने उनका जीना हराम कर दिया था। डूबते को तिनके का सहारा भी नहीं मिलता। अब करें तो करें क्या ? शीला को अपनी ही जिंदगी पहाड़ लगने लगी थी। बार–बार वह अपने आप को कोसती कि आखिर क्यों उसके साथ ही इस तरह का व्यवहार किया जाता है।

एक दिन शीला ने भी ठान लिया कि उसे समाज को क्या और कैसे जवाब देना है। शीला को देखते ही लोग तरह–तरह की बातें करते, लेकिन शीला को लोगों की बातें ही अंदर से मजबूत बनाती थी।

लोगों को जरा भी उम्मीद नहीं थी कि वह कुछ कर पायेगी। पर शीला ने भी हार नहीं मानी। पढ़ाई-लिखाई में लग गई। आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई। वह जिलाधिकारी बन गई। सबकी आँखें फटी की फटी रह गई।

शीला के लिए अब बड़े–बड़े घरों से रिश्ते आने लगे। जिन लड़कों ने पाँच साल पहले उसे ठुकरा दिया था ; वे पछताने लगे। शीला के माता-पिता ने उसके जिलाधिकारी बनने की खुशी में एक छोटा-सा बधाई समारोह रखा ,जिसमें जाति-समाज के लोगों के साथ पूरा गाँव आमंत्रित था। उत्सव का कार्यक्रम चल ही रहा था, तभी एक लड़के ने शीला को प्रपोज किया। बातों ही बातों में उसने शीला के माता–पिता के समक्ष अपनी बात रख दी।

लड़के की बातें सुन शीला भौंचक रह गई। उसे लगा कि आज अचानक मेरे प्रति इसका प्रेम कैसे उमड़ आया। शीला ने तुरंत इंकार करते हुए लोगों के समक्ष अपनी बातें रखी- " क्या हो गया है आज लोगों को माँ ? कल तक तो जो लोग मुझे देखना पसंद नहीं करते थें, वे मेरी खुशी में शामिल हो गए। आखिर क्यों ? यह समाज चाहता क्या है ? यही न, चाहे लड़की अच्छी हो या बुरी; अगर उसके पास पैसे हैं तो उसकी शादी हो सकती है, और नहीं है तो नहीं ? है न ? " शीला बौखला-सी गयी थी- " मैं कल भी अपाहिज थी; और आज भी हूँ। बैसाखी ही मेरा सहारा रही है। लेकिन सिर्फ अपने पैरों से हूँ , न कि दिमाग से। दो साल पहले मेरे पड़ोसी उमेश की शादी धूमधाम से हुई ; जबकि वह हाथ और पैर से अपंग है। अब मेरी बारी आई तो सब तरफ से ऊंगलियाँ उठ रही हैं, क्योंकि उस समय मैं अपाहिज थी; या मेरे पास पैसे नहीं थे ? क्या अपाहिज होना लड़कियों के लिए अभिशाप है ? अब बेचारी उमेश की पत्नी को ही देख लो, ठीक-ठाक होकर भी अपाहिज पति से पाला पड़ा है उसका। क्या उनके सपने नहीं होंगे, उनकी जिंदगी बर्बाद नहीं हुई ? आप लोगों की सोच के अनुसार एक अच्छी-भली लड़की अपाहिज लड़के से शादी कर सकती है, लेकिन लड़का नहीं। आज लोगों के इस भेदभाव ने साबित कर ही दिया कि उनकी सोच अपाहिज है। मुझ जैसी अन्य लड़कियों को, सिर्फ शरीर के कुछ अंग काम न कर पाने पर ऐसी सोच ह उन्हें कमजोर बनाती है। जहाँ हमें सहारे की जरूरत होती हैं, वहाँ अपाहिज होने की बात याद दिलायी जाती है।

आज शीला अपना दर्द सबके सामने रख दी। फिर क्या, न सिर्फ शीला के; बल्कि उसके माता–पिता की आँखों से आँसू झरते जा रहे थे। पार्टी से लोग नजरें झुका कर खिसकने लग गये।

प्रिया देवांगन "प्रियू"

कुछ पल निदा फाज़ली के साथ

आशा शैली

किसी ने बताया, आज निदा फाज़ली का जन्मदिन है। मुझे कपूरथला के मुशायरे के वे दो दिन याद आ गए । सन् तो याद नहीं पर उन दिनों वहाँ पंजाबी में दोबारा हीर लिखनेवाले लेखक ज्ञानसिंह संधु मजिस्ट्रेट थे। वे पंजाब में जहाँ भी रहे उन्होंने मुशायरे जरूर करवाये। उनकी संस्था साहित्य मंच जालंधर की मैं हिमाचल इकाई की सचिव थी। इसके अध्यक्ष जालंधर दूरदर्शन के समाचार सम्पादक श्री जे सी वैद्य (जगदीश चन्द्र) जी थे। संस्था के बैनर तले साल में दो या कभी तीन मुशायरे भी हो जाते और इन मुशायरों में देश के नामी शायर भाग लेते। हिमाचल की सचिव के नाते मेरा रहना जरूरी था। इस योजना में जगराओं, भोगा, लुधियाना, जलन्धर, होशियारपुर, मलेरकोटला वगैरह सभी जगह मुशायरे होते और वहाँ के शायरों के मध्य मैं भी होती। इस बार संधु जी कपूरथला में थे तो मुशायरा वहीं होना था। दूर के शायरों को समय पर अपनी गाड़ियों के हिसाब से पहुँचना था। बशीर बद्र को भोपाल से आना था और निदा फाज़ली साहब को बम्बई से। ये दोनों पहली शाम को पहुँच गए। व्यवस्था के लिए मैं और श्रीमती संधु दो ही महिलाएं थीं। हाँ निदा फ़ाज़ली के साथ एक शायरा और भी थी जिनका नाम याद नहीं आ रहा।

अब श्रीमती संधु की सहायता तो मुझे ही करनी थी। रात के भोजन के बाद ज्ञान सिंह संधु, उनकी पत्नी, प्रोफेसर मेहर गेरा, आधा पुल और ज़मीन के लेखक जगदीश चन्द,जिन्हें हम सब वैद्य जी कहते थे और संस्था के अन्य सदस्य, जब सब लोग बैठे तो निदा फाजली को पता चला कि मैं भी कलम चलाती हूँ तो उन्होंने न केवल बड़े ध्यान से मुझे सुना, बल्कि मेरे गुरू प्रो मेहर गेरा, (जो वहीं उपस्थित थे) से मेरे अशआर पर बात भी की। मुझे कहीं नहीं लगा कि वे फिल्मी दुनिया के बड़े शायर हैं। सुनते सुनाते रात आधी बीत गई तब कहीं सोने की बारी आई । दूसरे दिन पठानकोट से राजेन्द्र नाथ रहबर, आज़ाद गुलाटी, (इनका शहर याद नहीं), होशियारपुर से प्रेम कुमार नज़र, कुछ लोग मलेरकोटला के और भी बहुत सारे नामी गिरामी शायर आये। पर निदा फ़ाज़ली कहीं भी अलग से नहीं लगे। कैमरे का ज़माना था, फोटो ग्राफर ने फ़ोटो भी खूब लिए, पर मेरी ज़िन्दगी की उठा पटक में बहुत कुछ खो गया है साहब। वैद्य जी, प्रोफेसर मेहर गेरा और निदा फाजली भी चले गए। ज्ञान सिंह संधु सेवानिवृत्त होकर सुना था मुहाली बस गए थे। पता नहीं अब कहाँ हैं । पर यादें तो साथ हैं ।

चमत्कारी काव्य

आज पुनः समाधिस्थ हुआ।सदा की भाँति माँ सरस्वती ने असीम कृपा की। बहुत कठिन काव्य साक्षात अनुलोम-विलोम ही नये रूप में अवतरित हुए। इनमें नीचे लिखी पहली पंक्ति अनुलोम है तो दूसरी पंक्ति उसी का विलोम है। तीसरी पंक्ति अनुलोम है तो चौथी पंक्ति विलोम है। उल्टा सीधा एक समान होते हुए भी दोनों ओर से सटीक और अर्थ पूर्ण यह रचना है। प्रथम व तृतीय, द्वितीय व चतुर्थ पँक्तियों में समतुकान्त हैं। आप सभी आनन्द लीजिए और आशीर्वाद दीजिए :

अनुलोम-विलोम

चारण "प्राण" रहन मत पूछ, गा ले गीत शिवाले के।

केले वाशित गीले गाछ पूत, मनहरण "प्राण" रचा।

चाब चना कारीपर हूस, खाले पी जल थाले के।

केले थाल जपी ले खास, हूर परी का नाच बचा।।

अनुलोम - विलोम का भावानुवाद

हे चारण ! कवि "प्राण" का रहन-सहन कैसा है ? यह मत पूछ तू तो शिवालय के गीत गा ले। क्यों कि यहाँ पर रखे हुए केले बासी हो चुके हैं और उनकी गाछ (केलों की फर) गीली हो चुकी है। इसलिए हे पुत्र! इस मन को हरने वाली मनोहारी रचना को "प्राण" ने रचा है उसे पढ़ और आनन्द भोग।

अरे मूर्ख! भुने हुए चनों के लिए प्रसिद्ध कारीपर गांव के चने चबा और अच्छी तरह खा, साथ ही भरे हुए थालों के जल पी ले, क्योंकि जो केलों का थाल था उसे जाप करने वाला एक खास तपस्वी ले गया है। अब केवल हूर की परी का नाच ही शेष बचा है। अर्थात् ???

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

1 जनवरी को ही नया साल क्यों मनाया जाता है

पद्मा अग्रवाल

हम सब नया वर्ष 1 जनवरी को बहुत धूमधाम से मनाया करते हैं. 31 दिसंबर का आखिरी दिन माना जाता है और 1 जनवरी से नये वर्ष का स्वागत् खूब धूमधाम से मनाते हैं . दुनिया के सभी देश वर्ष की नई सुबह का इंतजार करते हैं . सब लोग इकट्ठे होकर पार्टी , आतिशबाजी आदि करके अपना उल्लास और खुश होकर प्रसन्नतापूर्वक नव वर्ष का स्वागत् करते हैं .

1 जनवरी को ही क्यों ... यह प्रश्न मन में उठना स्वाभाविक है ...क्या फाइनेंशियल ईयर शुरू होता है .? नहीं हमारे देश में तो फाइनेंशियल ईयर 1 अप्रैल से शुरू होता है . हिंदू कैलेंडर के अनुसार बहुत लोग दीपावली के बाद भी नव वर्ष मानने की परंपरा है . कुछ जगह लोहड़ी के बाद नया साल माना जाता है . तो हिंदू मान्यता में नवसंवत्सर प्रतिपदा या गुड़ी पड़वा को नव वर्ष की शुरुआत मानते हैं .

फिर 1 जनवरी को ही पूरी दुनिया में नया साल क्यों माना गया ? आखिर यह कैसे तय किया गया कि 31 दिसंबर ही वर्ष का आखिरी दिन होगा .

1 जनवरी को नव वर्ष मनाने की शुरुआत ...आप सभी जानते हैं कि रोमन नंबर सिस्टम से लेकर और रोमन कैलेंडर तक पूरे विश्व में रोमन नंबरों का बोलबाला है. ऐसा इसलिये क्योंकि माना जाता है कि ग्लोबल स्तर पर नंबर की शुरूआत वहीं से हुई थी .

पहले नया साल हर जगह अलग – अलग दिन मनाया जाता था . आपको शायद नहीं मालूम हो कि भारत की तरह ही अलग अलग देश अलग -अलग दिनों पर मनाना पसंद करते थे .

यूरोप और दुनिया के अधिकतर देशों में नया साल 1 जनवरी से शुरू माना जाता है लेकिन हमेशा से ऐसा नहीं था और अभी भी दुनिया के सारे देशों में 1 जनवरी से नये साल की शुरुआत नहीं मानी जाती है. 500 साल पहले तक अधिकतर ईसाई बाहुल्य देशों में 25 मार्च और 25 दिसंबर को नया साल मनाया जाता है.

फिर रोम के राजा नूमा पोंपलिस ने अपने राज में इस प्रथा में बदलाव किया. हालाँ कि इसका पूरा श्रेय नूमा को नहीं जाता है और काफी कुछ जूलियस सीजर ने भी किया था . रोमन साम्राज्य में कैलेंडर का चलन था . उसी दौरान रोमन कैलंडर में 1 जनवरी को नया साल माना गया . सूर्य और पृथ्वी की गणना के आधार पर रोमन राजा नूमा पोंपिलस ने एक नया कैलेंडर जारी किया 1 जनवरी को वर्ष का पहला दिन बनाने के लिये रोमन कैलेंडर में बदलाव कैसे किया गया .यह कैलेंडर 10 महीने का था क्योंकि तब एक साल को लगभग 310 दिनों का माना जाता था . तब एक सप्ताह भी 8 दिनों का माना

जाता था . नूमा ने मार्च की जगह जनवरी को साल का पहला महीना माना. जनवरी नाम रोमन देवता जैनुस के नाम पर है . जैनुस रोमन साम्राज्य में शुरुआत का देवता माना जाता था , जिसके दो मुँह हुआ करते थे . आगे वाले मुँह को आगे की शुरुआत और पीछे वाले मुँह को पीछे का अंत माना जाता था . मार्च का महीना रोमन देवता मार्स के नाम पर माना गया था . लेकिन मार्स युद्ध का देवता था इसलिये नूमा ने युद्ध की शुरुआत के महीने से साल की शुरुआत करने की योजना बनाई . हालाँकि 153 ईसा पूर्व तक 1 जनवरी को अधिकारिक रूप से साल का पहला दिन नहीं घोषित नहीं किया गया .

46 ईसा पूर्व रोम के शासक जूलियस सीजर ने खगोलविदों की नई गणनाओं के आधार पर एक नया कैलेण्डर जारी किया , जिसमे 12 महीने थे . सीजर ने पाया कि खगोलविदों की गणना के अनुसार पृथ्वी को सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन और 6 घंटे लगते हैं इसलिये सीजर ने रोमन कैलेंडर को 310 से बढा कर 365 का कर दिया . साथ ही सीजर ने हर चार साल के बाद फरवरी के महीने को 29 दिन का किया , जिससे हर 4 साल में बढने वाला एक दिन भी एडजस्ट हो जाये. साल 45 ईसा पूर्व की शुरुआत 1 जनवरी से की गई . साल 44ईसा पूर्व में जूलियस सीजर की हत्या कर दी गई . उनके सम्मान में साल के सातवें महीने को क्विनटिलिस का नाम जुलाई कर दिया गया . ऐसे ही आठवें महीने का नाम सेक्सटिलिस का नाम अगस्त कर दिया गया . 10 महीने वाले साल में अगस्त छठवाँ महीना होता था . रोमन साम्राज्य जहाँ तक फैला था वहाँ नया साल 1 जनवरी से माना जाने लगा .इस कैलेंडर का नाम जूलियन कैलेंडर था .

पाँचवी शताब्दी तक आते आते रोमन साम्राज्य का पतन हो गया . यूँ तो 1453 में ओटोमन साम्राज्य द्वारा पूरे साम्राज्य के राज को खत्म करने तक रोमन साम्राज्य चलता रहा लेकिन पाँचवी शताब्दी तक रोमन साम्राज्य काफी सीमित हो गया . रोमन साम्राज्य जितना सीमित होता गया ईसाई धर्म का प्रसार उतना ही बढता गया . ईसाई धर्म के लोग 25 मार्च या 25 दिसंबर से नया वर्ष मनाना चाहते थे .

ईसाई मान्यताओं के अनुसार 25 मार्च को एक विशेष दूत गैबरियल ने ईसा मसीह की माँ मैरी को संदेश दिया था कि उन्हें ईश्वर के अवतार ईसा मसीह को जन्म देना है . 25 दिसंबर को ईसा मसीह का जन्म हुआ था . इसीलिये ईसाई लोग इन दो तारीखों में से एक दिन नया साल मनाना चाहते थे . 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाया जाता है इसलिये नया साल 25 मार्च को अधिकतर लोग मनाना चाहते थे .

लेकिन जूलियस सीजर की गई समय की गणना में कुछ खामी थी . सेंट बीड नाम के एक धर्माचार्य ने आठवीं शताब्दी में बताया कि एक साल में 365 दिन 5घंटे 48 मिनट 46 सेकंड होते हैं . 13वीं शताब्दी में रोजर बेकन ने इस थ्योरी से एक परेशानी हुई कि जूलियन कैलेंडर के हिसाब से हर साल 11 मिनट 14 सेकंड ज्यादा गिने जा रहे हैं . इससे हर 400 साल में समय 3 दिन पीछे हो रहा था . ऐसे में 16वीं सदी आते आते लगभग 10 दिन पीछे हो चुका था . समय को फिर से नियत समय पर लाने के लिये रोमन चर्च को पोप ग्रेगरी 13वें ने इस पर काम किया. 1580 के दशक में ग्रेगरी 13वें ने एक ज्योतिषी एलायसिस लिलियस के साथ एक नये कैलेंडर पर काम करना शुरू किया . इस कैलेंडर के लिये 1582 की गणनायें की गई . इसके लिये आधार 325 ईस्वी में हुये नाइस धर्म सम्मेलन के समय की गणना की गई. इससे पता चला कि 1582 और 325 में 10 दिन का अंतर आ चुका था. ग्रेगरी और लिलियस ने 1582 के कैलेंडर में 10 दिन बढा दिये . साल 1582 में 5 अक्तूबर से सीधे 15 अक्तूबर की तारीख रखी गई . साथ ही लीप ईयर का भी नियम बदला गया . अब लीप ईयर उन्हें कहा जायेगा जिनमें 4 या 400 से भाग दिया जा सकता है . सामान्य सालों में 4 का भाग जाना आवश्यक है . ऐसा इसलिये है क्यों कि लीप ईयर का एक दिन पूरा दिन नहीं होता है . जिससे 300 सालों तक हर शताब्दी वर्ष में एक बार लीप ईयर न मने और समय लगभग बराबर रहे . लेकिन 400वें साल में लीप ईयर आता है और गणना ठीक बनी रहती है . जैसे साल 1900 में 400 का भाग नहीं जाता इसलिये 4 से विभाजित होने पर भी लीप ईयर नहीं था . जब कि 2000 लीप ईयर था . इस कैलेंडर का नाम ग्रैगेरियन कैलेंडर है. इस कैलेंडर में नये साल की शुरुआत 1 जनवरी से होती है. इसीलिये नया साल 1 जनवरी से मनाया जाने लगा है. इस कैलेंडर को भी स्थापित होने में समय लगा . इसे इटली , फ्रांस , स्पेन और पुर्तगाल ने 1582 में ही अपना लिया था . जब कि जर्मनी के कैथोलिक राज्यों स्विट्जरलैंड , हॉलैंड ने 1583, पोलैंड ने 1586, हंगरी ने 1587 , जर्मनी और नीदरलैंड के प्रोस्टेंट प्रदेश और डेनमार्क ने 1700, ब्रिटिश साम्राज्य ने 1752, चीन ने 1912 , रूस ने 1912 और जापान ने 1972 में इस कैलेंडर को अपनाया. सन् 1752 में भारत पर ब्रिटेन का राज था . इसलिये भारत ने भी इस कैलेंडर को 1752 में ही अपनाया था . ग्रेगेरियन कैलेंडर को अग्रेजी कैलेंडर भी कहा जाता है . हालाँ कि अँग्रेजों ने ग्रैगेरियन कैलेंडर को 150 सालों से ज्यादा तक भी नहीं अपनाया था .

भारत में लगभग हर राज्य का अपना नया साल होता है . मराठी गुड़ी पडवा पर तो गुजराती दीवाली पर नया साल मनाते हैं . हिंदू कैलेंडर में चैत्र प्रतिपदा को नया साल मनाया जाता है. ये मार्च के आखिर या अप्रैल की शुरुआत में होती है . इथोपिया में सितंबर में नया साल मनाया जाता है . चीन में अपने कैलेंडर के हिसाब से भी अलग दिन नया साल मनाया जाता है. लेकिन ग्रैगेरियन कैलेंडर के साथ भी एक समस्या है . इस कैलेंडर में 11 मिनट का उपाय तो हर चार में से तीन शताब्दी वर्षों को लीप ईयर न मान कर कर लिया लेकिन 14 सेकंड का फासला अभी भी हर साल है . इसी के चलते साल 5000 आते आते फिर से कैलेंडर में एक दिन का अंतर पैदा हो जायेगा . हो सकता है तब इस कैलेंडर की जगह समय गणना की कोई नई प्रणाली आ जाये जो इस गणना को ठीक कर दे लेकिन तब तक 1 जनवरी से ही नये साल की शुरुआत माननी होगी .

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-3-1

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 118

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

महेंद्र महर्षि

द स्टडी रूम

घर में एक कमरा हो या एक कोना, जिसमें पठन पाठन और लेखन की सामग्री तथा किताबें रखीं हों उसे अंग्रेज़ी में स्टडी रूम या कार्नर (Study) कहा जाता है। यों तो मुझे बहुत सारे किताबों से भरे कमरों में जाने, उनकी मेज़ पर काम करने वालों के साथ उठने-बैठने का मौक़ा मिला है , लेकिन वे सभी 'स्टडी' नहीं थे। जहां वकीलों के कमरे की अलमारियों में क़ानून की किताबें रखी होती हैं , वह स्टडी नहीं, वकील का आफ़िस होता है। डाक्टर की स्टडी में मेडिकल किताबों के अलावा मैनुअल, मैगज़ीन होती हैं, आर्कीटेक्ट-इंजीनियरिंग वालों की अलमारी में उनके विषय संबंधी पुस्तकें। इस तरह दुनिया के अनेक कामकाजी लोगों की अलमारियों में विषय से सम्बन्धित किताबें, मैगज़ीन यहाँ तक की अख़बार भी व्यवसाय संबंधी होते हैं।

मगर जब भी मुझे किसी अध्यापक, कवि-लेखक, दार्शनिक या पत्रकार की स्टडी में उनसे मिलने का मौक़ा मिला, मैंने पाया कि उनकी अलमारियों में विविध विषयों और प्रचलित प्रमुख भाषाओं की पुस्तकें एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रह रही हैं। विविधता की चर्चा करें तो उनमें आध्यात्मिक से लेकर दर्शन, साहित्य, कला आदि अनेक विषयों के नामचीन हस्तियों के साथ सामयिक लेखकों की बड़ी सूची बन जाएगी। इनके अलावा पुस्तकों के भूले बिसरे पुराने साहित्यिक प्रकाशन , कुछ बेतरतीबी से धरे भी होते थे।वहाँ टेबल पर बिखरी सामग्री में रखे अख़बार, मैगज़ीन और एक आध खुली किताब को देखने पर ही अंदाज लग जाएगा जिनकी स्टडी में हम आए हैं वे उन दिनों किस विधा पर आँखें थका रहे हैं। अलमारियों में जो किताबें ठहरी हुई होती हैं, उनमें से बहुत पुराने या फिर देश विदेश के लेखकों की कृतियाँ होती हैं।उनके ऊपरी कवर कोने मुड़े, कहीं कहीं से उधड़ गए मुखपृष्ठ, यह दर्शाते हैं कि ये प्रदर्शन के लिए नहीं पठन पाठन तथा ज़रूरत होने पर, संदर्भ के लिए खुलती बंद होती रहीं हैं। किसी एक लेखक- साहित्यकार की किताबें एक जगह साथ ही रखीं मिलती हैं। इस स्टडी की एक ख़ासियत यह भी महसूस कर सकते हैं कि वहाँ बहुत कम वे किताबें हैं जो काम्प्लीमेंट्री अथवा कहीं से भेंट में मिली हैं। अधिक संख्या उनकी होती , जो ख़रीद कर लाई गईं हैं। मेरा मानना है कि पढ़ने वाले किताबें ख़रीद कर पढ़ते हैं। जिन किताबों को विमोचन समारोह में वितरित किया जाता है, वे अक्सर आलमारी में बंद पड़ी रहती हैं या फिर किसी और को वैसे ही भेंट कर दी जाती हैं जैसे एक जगह से प्राप्त कोई तोहफ़ा, रैपर बदल कर किसी और को चस्पाँ कर दिया जाए। मैं अपने किसी घनिष्ठ लेखक की पुस्तक को भी प्रकाशक से आर्डर देकर मंगाना पसंद करता हूँ। किताबों को प्यार करने वाले उन्हें ख़रीदने के लिए पुस्तक मेलों का इंतज़ार करते हैं जहां महँगी किताबों पर रिबेट मिला करती है। अब का तो मुझे मालूम नहीं, पर तीस-पैंतीस-पैंतालीस साल

पहले जब रविवार की दोपहर पुरानी किताबों का बाज़ार दरिया गंज की पटरी में लगता था तब वहाँ मेरी मुलाक़ात उन लेखकों और कालेज के प्रोफ़ेसरों से भी हुई जो कनाट प्लेस के खुले काफ़ी हाउस में मिलते थे।वे उस ' साप्ताहिक स्ट्रीट पुस्तक मेले' में प्रकाशन से बाहर हो चुकी पुरानी चुनिन्दा किताबों को मोल भाव कर ख़रीदने आते थे। कुछ लोग अपने घर से किताबों के बंडल लिए आते, जिनके बदले में इन पटरी पुस्तक विक्रेताओं से मोलभाव कर वहाँ से दूसरी किताबें ले जाते। यह पुस्तक 'बार्टर'मेला अपने आप में अनोखा तरीक़ा होता था जिसमें किताब तराज़ू में नहीं हाथ बदल कर इज़्ज़त पाती थी।

किताब ख़रीद कर पढ़ना इसलिए भी उचित है कि वह लेखक का सम्मान और उसकी लागत व परिश्रम का अधिकार बनता है। इन दिनों पैसे देकर किसी प्रकाशक से पुस्तक छपवाने की जो स्थिति चल निकली है उसने किताब की गरिमा को घटाया है।मोबाइल के पर्दे पर , फ़ेसबुक, यूट्यूब द्वारा हथेली में आ बसीं किताबों ने अब तो पायरेटेड किताबों के प्रकाशन बाज़ार को भी पीछे छोड़ दिया है। यह दुःखद स्थिति है। छपी किताब की दुनिया का सच क़ायम रहना चाहिए वर्ना पढ़ने की आदत की जगह देखने-सुनने के विज़ुअल हमारी आने वाली पीढ़ियों से उस सुख को छीन-भुला देंगे जिसके साथ गुफा कंदराएँ आज तक आदि मानव की कहानी कह रही हैं। क्लाउड कम्प्यूटिंग की तकनीक का कल किसने जाना है ! इसमें सेंध लग गई तो बहुत कुछ भगवान भरोसे ही हो जाएगा।

मैं किताब की दुनिया में उलझ कर कहीं इधर-उधर हो गया। वापस घर की 'स्टडी' पर लौटता हूँ। अभी हाल ही में मुझे एक ऐसे परिवार में जाना हुआ जहां के वाशरूम का रास्ता उनकी स्टडी से जुड़ा है।मुझे उनकी स्टडी ने बहुत प्रभावित किया। उस संभ्रांत कुल के साथ वह मेरी पहली भेंट थी। मैं जिस कारण उनसे मिलने गया था, उसकी पृष्ठभूमि देना ज़ख़्म को कुरेदने जैसा होगा अत: मैं विचलित कर देने वाली उस घटना की चर्चा न करके वहाँ की स्टडी में एकत्रित किताबों के भंडार पर लौटता हूँ। कहूँ तो उसे देखकर मेरा भावुक मन गद्गद् हो गया। कमरे की चार दीवारों में से तीन पर लगी अलमारियों-अलगीरियों में इतनी किताबें थीं जिन्हें देख मुझे लगा कि कोई भी उठाकर पढ़ने बैठ जाऊँ। साहित्य, कला और न जाने कितने गंभीर विषय उस कमरे के कोने कोने को रोशन कर रहे थे। अनेक भारतीय लेखकों के साथ अंग्रेज़ी में प्रकाशित विभिन्न विदेशी लेखकों की सैंकड़ों पुस्तक वहाँ थीं। बड़ी चीज़ यह दिखी कि किताबें सजावट के लिए नहीं, पढ़ लेने के बाद संदर्भ संग्रह के लिए वहाँ हैं। मेरा मानना है कि हर किताब साँस लेती है। पहचान यह कि उसे उठाकर पन्ने पलटने पर उसमें से एक गंध आती है जो कमरे और व्यक्ति के विचार व्यवहार और पर्यावरण गुण से मेल खाती है। किताब मात्र सजावट के लिए पड़ी रहती है उसमें बरसों बरस प्रिंट स्याही की झल्ल-झन्नाई बसी होती है।फिर भी कहूँगा कि छपी किताब कैसी भी हो,दिखती तो है, हाथ में उठाने पर महसूस होती तो है, हर किताब कहती तो है कि मैं 'किताब' हूँ।डेस्कटॉप या लैपटॉप पर किताब संग्रहित होते हुए भी इन्हें चालू करने तक अदृश्य बनी रहती है। इसके ताले की चाबी भी कहीं एक जगह ओझल , दिमाग़ में रहती है।

एक सीख को निजी अनुभव से कहता हूँ।जो लोग किताबों से मुहब्बत करते हैं, उन्हें पढने की ललक रखने वालों को किताब ले जाने के लिए नहीं देनी चाहिए। वे जिस किताब को ले जाते हैं उसे लौटाने में लगभग वैसे ही हो जाते हैं जैसे कोई आपसे उधार लेने के बाद , लौटाना याद रहते हुए भी तब तक

लौटाना 'भूल जाता है,' जब तक आप वापसी के लिए तक़ाज़ा नहीं करते। Book lovers neither land the book nor ask for it. If they do, they should not expect getting them back. Borrowers form an undesirable 'dating' or 'relationship' with them.

आज के डिजिटल पुस्तकालय की सैंकड़ों किताबें यह कड़वा 'अनुभव सुख' नहीं दे सकतीं। उन्हें ' स्टडी रूम' की जगह भी नहीं चाहिए। वे बादलों में बसती हैं और उँगलियों पर थिरकती हैं। उन्हें 'बुकमार्क' से किसी पृष्ठ पर रोका नहीं जाता। बटन दबाने भर से दुबारा बादल बन जाती हैं। एक चीज़ और, किताब पढ़ी जाती है तो उसमें कई जगह पेंसिल से अंडरलाइन किए पैसेज मिल जाएँगे। ये बहुत महत्वपूर्ण, मार्मिक, उपदेश समान या गंभीर विचार से लबरेज़ हो सकते हैं।इनमें पूरी पुस्तक का मर्म बसा हो सकता है। डिजिटल किताब में यह ढूँढे नहीं मिलता क्योंकि उसपर पैंसिल नहीं, उँगली तैरती है। आजकल मेरी उम्र के कई परिचित, मित्र और परिवारों के सामने एक क्राइसिस मुँहबाए खड़ा है। सभी ने जो कुछ किताबें सालों से सहेज संभाल के रखी हैं उनकी अगली पीढ़ी में अधिकांश के लिए वे रद्दी न भी हों तो भी फालतू तो होती ही हैं। उन्होंने नयी तरह की कार्पोरेट नौकरी मे करियर तलाश लिया है जहां उन विषयों का महत्व नहीं जिनके सहारे उनके अभिभावकों ने कभी अपना जीवन काटा , अपने सुखों को ताक पर रखकर बच्चों को वो बनाया जिससे उन्हें कारपोरेट जगत में लाखों का पैकेज मिला। उन्हें यह मंज़ूर नहीं होगा कि हमारी 'प्रियतमा' रहीं इन किताबों की दुनिया कबाड़ी की तराज़ू में तुल जाए। यों भी किताब एक संवेदना है, संवेदनशील रिश्ता है। वो बिक जाए ,पकी उम्र के इस कगार पर पहुँच कर अब कैसे स्वीकार होगा ? नहीं हो सकता। मगर जब मेरी अपनी या अन्य लोगों की ऐनक भी साथ न देगी तो फिर गुजरे ज़माने वाले प्रेम का क्या बनेगा ? पुस्तक प्रेमियों के जीवन की संध्या से जुड़ा यह एक अनुत्तरित दुःखद प्रश्न है।

ऐसी स्थिति में मैं सोचा करता हूँ गीता में कृष्ण उवाच पर :

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फ़लेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा के संगोऽस्त्वकर्मणि।।" ,

यह श्लोक कहाँ तक हमारे जैसे उम्रदराज़ पुस्तक प्रेमियों के मन को सहला सकता है ? गीता दर्शन भी एक किताब ही है जिसपर हाथ रख कर अब भी क़समें खाई जाती हैं।जगत मिथ्या लेकिन किताब ही स्थूल अमिट ऐसा सत्य, जिसपर भरोसा क़ायम है।

ग़ज़ल

झाँका सबके दिल के अन्दर देख लिया।
कितना है किस-किस में पावर देख लिया।

लड़ने धूप से आए जो काले बादल,
निकला सूरज, उनका तेवर देख लिया।

सहरा - सी आँखोंवाले को सहलाया,
अश्क़ों का गमगीन समन्दर देख लिया।

महफिल में बजती ताली से लगता है,
हमने लफ्जों का जादूगर देख लिया।

पत्थर जैसा दिखता है पर सच है ये,
फूलों से नाजुक है, छूकर देख लिया।

पौधे गमलों में उगते हैं अंग्रेजी,
उस आंगन की धरती बंजर देख लिया।

खुद से खुद का मिलना उस दिन हो पाया,
जिस दिन मैंने अपने भीतर देख लिया।

- विकास 'विदीप्त'

कहानी : प्रतिमा "पुष्प"

अपना घर छोड़ते समय लड़की उम्मीदों की गठरी अपनें साथ लिए जाती है एक नया घर बसानें । नया घर बसाना इतना आसान तो नहीं होता न , जहाँ जीवनसाथी का सानिध्य भी अपेक्षाओं से भरा होता है तो उपेक्षाएं भी गुपचुप सपनों को घुन बन कर छलनी करनें की निरंतर साजिश रचती रहती हैं । समय की बहुत सारी विषमताएं भी गगनचुंबी हो संयम और संतोष की परीक्षा लेनें के लिए सतत प्रयत्नशील रहती हैं। अल्हड़ बचपन और बचपन के सपनें कब गंभीरता का लबादा ओढ़ गृहस्थी के व्यूह में परिपक्व और गंभीर बना देते हैं समय ही जानता है ।

रिश्ते नाते शकुनी बन अपनी टेढ़ी मेढ़ी चाल से हर पल अनोखे पासे उछालते अपनी स्वार्थी चाल में उलझनों की चाल निरंतर चलते रहते है जिसमें स्व की सूझबूझ और माँ की दी गयी सीख सहयोगी होती है ।

सृष्टी भी तो जब अपने जन्म के घर को छोड़ नये घर में आई तो उम्मीदों और सपनों की गठरी भर कर साथ लाई थी ।जीवन साथी से सपनें पूरे करनें के सहयोग की कामना मन में संजोए घर में प्रवेश करते ही छूटते प्रतीत हुए किंतु स्त्री ही तो थी वो , ईश्वर नें रचना करते ही अदम्य साहस भर रबड़ जैसी लचीलापन भर दिया था । जिधर जैसे भी तोड़ मरोड़ कर ढाल लो ढल जाती है । सास ससुर देवर की अपनी अलग आकांक्षाएं थीं ।एक बाहर की लड़की को बहू के रूप में सामाजिक संबन्धो की मान्यता का मुहर लगवा कर घर तो ले आए लेकिन घर को उसे स्वीकार करनें में बीस से तीस वर्ष तो लग ही जाते हैं ।ऐसे ही जीवन के अनगिनत पन्नों से गुजरती कथा सी अपना जीवन रचती गृहस्थी की बगिया में चार फूल खिला गयी थी सृष्टी ।जीवन के लंबे अंतराल में न जानें कितनी विकट परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ा।

आजीविका का तलाश में ससुराल का घर छोड़ कर महानगर का सफर और संघर्ष और फिर कठिन परिस्थितियां कभी उलझातीं कभी संयम और धैर्य से सब ठीक होने की तसल्ली ।

एक सौरभ का प्रेम और सरलता ही तो थी जिसके सहारे सृष्टि कभी हिम्मत नहीं हारी ।कभी ट्यूशन पढ़ाती और कभी सिलाई कटाई का प्रशिक्षण देती एक एक पैसे संजोती खुद के पैसे के साथ सौरभ की आय का एक एक पैसा जोड़ कर सृष्टी नें अपनी बगिया को भरपूर संजोती रही । एक कमरे से दो कमरे फिर हाई सोसायटी में टू बी एच के का फ्लैट फिर बच्चों के लिए सुख तलाशते रहने में अपने बारे में सोचने का कभी वक्त ही नहीं मिला ।इस बीच खुद को सिर्फ स्त्री और स्त्री मान अपनी आवश्यकताओं को हमेशा सीमित रखा । बच्चों के भविष्य को लेकर पति पत्नी दोनों ने अपने शौक बहुत ही सीमित रखे थे ।

उम्र बीत गयी बच्चे सब सेटल हो गये । सब अपनें अपनें सपनें पूरे करनें के लिए पंख फैला देश विदेश के लिए उड़ान भर चुके थे । यह पीड़ा भी सृष्टी नें बच्चों के भविष्य के लिए मुस्कराते हुए सह लिया । एक भरा-पूरा परिवार जब बेहद एकाकी हो उठता है तब सिर्फ स्मृतियां ही साथ रहती हैं । एक एक करके बेटे बेटियां अपनी अपनी मंजिल की तरफ पंख फड़फड़ाते हुए मंजिल की तलाश में निकल गए तब पीड़ा हुई थी ...बहुत हुई थी लेकिन प्रगट नहीं किया और न ही पति को कभी महसूस होनें दिया । आँसुओं को मुस्कान के आवरण में लपेटे निरंतर सौरभ का भरपूर ख्याल रखती काम काज में व्यस्त रहा करती रही ।

अपनी निज की आवश्यकताओं में बस चार साड़ी चार सूट और दो मैक्सी , जरूरत ही कितनी थी , न तो गहनों का मोह न ही साज सिंगार का शौक बस एक ही जुनून था बच्चों को उच्च शिक्षा देकर उन्हें उनकी मंजिल तक पहुंचाना । टपाटप फर्राटेदार इंग्लिश बोलते बेटे भी जैसे जैसे शिखर पर पहुंचते गये पाश्चात्य संस्कृति में ढलते गये। .....हां उन्हें तो वो दिन याद आते जब मां नें पढ़ने के लिए पीटा था , उन्हें वो दिन याद था जब मां नें सिर्फ रोटी में नमक घी पोत कर टिफिन में रख दिया था और स्कूल में दोस्तों के सामनें बहुत बुरा महसूस हुआ था । उन्हें वो दिन भी याद था जब मां ने स्कूल की छोटी होती पैंट का पांयचा खोल नीचे से कपड़ा लगा कर लम्बा कर दिया था । लेकिन उन्हें ये नहीं याद था कि मां पीटनें के बाद कितना रोई थी । उन्हें ये भी नहीं याद था कि रोटी में नमक घी पोत कर देंनें के बाद मां तब तक भूखी रही जब तक लौट कर आनें के बाद पूरा भोजन खिलाकर उनको तृप्त मन देख नहीं लिया , ये भी नहीं याद था कि पैंट लंबी करनें के बाद मां ने अपनी फटती हुई साड़ी को भी सिला था । बच्चे तो बस ये जानते थे कि पापा जी कमाते हैं तो पापा जी ही सब कुछ हैं मां तो बस मां है । घर में रहना , घर के काम निबटाना और दिन भर पढ़ो पढ़ो की रट लगाते रहना मां का काम था । समस्याएं होती तो मां होती । कुछ चाहिए तो मां होती जो पापा को न जाने क्या क्या घुट्टी पिलाती की पापा मान जाते थे । क्या पता था कि पापा जी की पाई पाई जोड़ कर उन्हीं के सपनों का महल बनानें के लिए मां सारी तपस्या करती है । जैसे जैसे बड़े होते गए पिता जैसा रुआब उनके व्यक्तित्व में आता गया हां बेटियां कुछ समझती थी लेकिन समय की रफ्तार और फिर कुछ अलग बनने की अभिलाषा में वे भी समय नहीं दे पाती थीं । आखिर उन्हें भी तो दूसरा घर बसाना है जिसके लिए उन्हें मां जैसी सहनशील और त्याग की मूरत तो नहीं बनना था न तो फिर क्यों वे समय से समझौता करतीं ।

सृष्टी भी यही सोचती कि बच्चे हैं समझ जाएंगे किंतु जब बेटों को सिर्फ पिता को महत्व देते देखती तब कहीं न कहीं मां का मन रिक्त सा हो उठता।कहीं न कहीं एक उम्मीद हर मां को अपनें बच्चों से भी होती है , वर्तमान तो संघर्ष में बीत जाता है किंतु भविष्य की चिंता तो होती है ।

उम्र की आँखमिचौली का पड़ाव नजदीक आनें लगा था । सौरभ अब बीमार रहनें लगे थे । नौकरी से रिटायर होना उन्हें रास नहीं आया । सृष्टि बहुत कहती बाहर टहलने जाया करिए कुछ नये मित्र बनाइए और हां कुछ लिखिए पढ़िए या फिर चलिए कहीं घूम आते हैं या फिर तीर्थयात्रा ही करके आते हैं

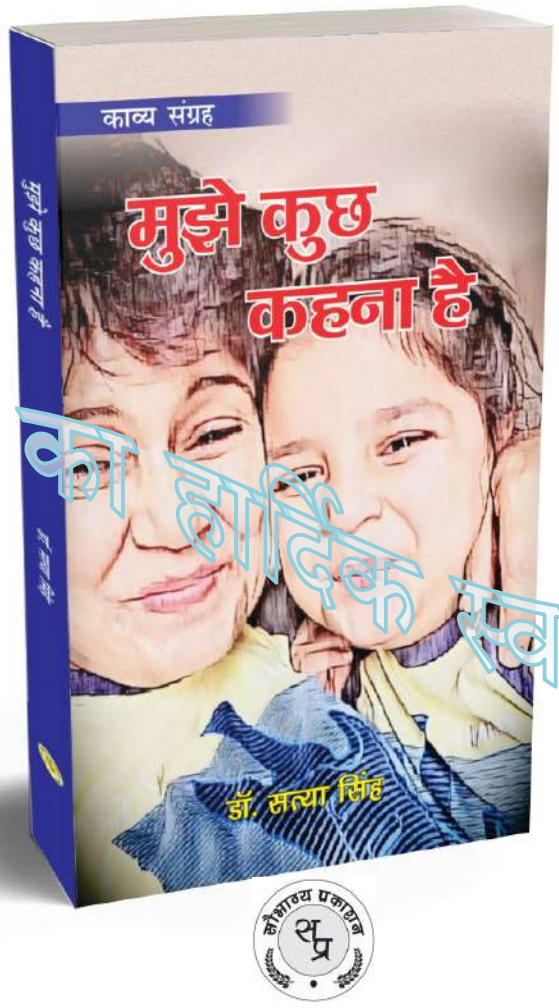

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

लेकिन सौरभ कहते ..

छोड़ो भी अब इस उम्र और बीमारी को लेकर कहां जाएंगे , पहले जैसी न चाहत है न उत्साह ।

अरे तो क्या हुआ अभी तो हमें समय मिला है , न कोई जिम्मेदारी है न ही कोई विशेष काम।

हां ठीक तो कहती हो लेकिन यदि यात्रा के दौरान यदि हम में से कोई बीमार हो गया तो ...

उफ़ ... दवाइयां ले कर चलेंगे न फिर कुछ हो गया तो डाक्टर तो सब जगह होते हैं न।

चलो तुम्हें कुछ हुआ तो मैं संभाल लूंगा लेकिन यदि मुझे कुछ हुआ तो .... तुमने तो सिर्फ घर देखा है बाहर की दुनिया कितनी देखी है । सच कहूं तो पढ़ी लिखी अनपढ़ हो तुम । क्या जान सकी हो अब तक? सिर्फ यही न कि सब्जियां क्या भाव हैं या महीने का खर्चा कितना हो जाता है।

हां तो यही तो जीवन भर किया है मैंने, आपके होते हुए कभी कुछ जानने समझने की जरूरत भी क्या है।

तभी तो मैं कहता हूं कि हिसाब किताब रखना सीखो , अब उम्र कभी भी किसी को भी धोखा दे सकती है जिसके लिए हम दोनों को मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार रहना चाहिए।

न जाने कैसी निराशा और अवसाद से भरा हुआ था सौरभ का मन , बस अपनी छोटी छोटी समस्याओं को बीमारी समझ परेशान रहने लगे थे । सृष्टी सौरभ को भी बच्चे की तरह संभालने लगी । जहां जीवन के 46 साल एक दूसरे से कंधे से कंधे मिला अनेकों झंझावातो को पार किया वहीं सपनों को संजोने और साकार करनें में मुस्कराते हुए प्रेम व सहयोग की सुंदर कहानी भी रची थी ।ऐसे में एक दिन भी ऐसा न गया जब सौरभ व सृष्टि कभी एक दूसरे से अलग रहे हों , रिटायरमेंट के बाद यदि स जी भी लेना हो तो दोनों साथ गये , बैंक हो यात्राएं हो या फिर कोई भी सामाजिक समारोह, छाया बनें रहे एक दूसरे के ।

जीवन के झंझावातों ने सुख और दुख में सामंजस्य स्थापित करने खूब सिखाया था । जिन्हें अपना समझ कर निश्चिंत रहें वहीं भाई भतीजे रिश्तेदार पैतृक संपत्ति के मामले में मुकदमे पर मुकदमे ठोंकते आहत करते रहे । सहोदर भाई ही दुश्मन बन बैठे थे । शराफ़त भूल कर चाल कुचाल कर बखेड़ा खड़ा कर मुकदमेबाजी करते रहें उन सब बातों को भी बीमारी के खौफ में ही उलझे आज निबटा ही लिया था।

कचहरी से लौटनें के बाद सौरभ नें कहा ....आज ये भी काम निपट गया । .....लगभग सभी काम खतम हो गये । अब हममें से कोई चला भी जाय तो .....

हाँ .....लेकिन ऐसा न कहिए ...अलग होनें की कल्पना से ही मृत्यु का एहसास होने लगता है ।

वैसे भी मां का घर छोड़नें से लेकर बच्चों को उनके भविष्य को संवारने तक न जानें कितनी बार इस पीड़ा को महसूस किया है लेकिन उसमें एक सुख और संतुष्टि भी निहित होती थी और एक साथ भी होता था । लेकिन अब इस तरह अलग होना .....असहनीय होगा ।

सहना तो होगा ही .....ईश्वर के निर्णय को अस्वीकार कैसे किया जा सकता है ।

सुनों .....हममें से कोई भी पहले जाय तो दूसरे को धैर्य का सामना करना होगा और बाकी के जो भी कार्य हैं उसे साहस से निपटाना होगा ।

हाँ ,लेकिन बच्चे सब दूर हैं ....मन तो उन्हीं में अटका है ।

धैर्य रखिए ....वही होगा जो ईश्वर चाहेगा ।

सुनो सृष्टि यदि मैं पहले गया तो तुम बच्चों के साथ चली जाना । हमारी परवरिश और संस्कार , हमारी तपस्या कभी व्यर्थ नहीं जाएगी ।

और मैं पहले गई तो आपका कौन ख्याल रखेगा ।

अपने दो बेटे हैं किसी के पास रह लूंगा ।

छोड़िए भी आप भी न जाने क्या क्या सोचते रहते हैं और मुझे भी भयभीत करते रहते हैं , सो जाइए अब ।

उस रात सौरभ खूब गहरी नींद सोए सृष्टी करवटें बदलती

नम आँखों से कभी अपनें बच्चों की नटखट यादों में गुम मुस्करा देतीं कभी कुछ बातें याद कर तकिया भिंगा देती ।सुबह जल्दी जल्दी रोज मर्रा के कार्य तेजी से निबटाते हुए भी ध्यान सौरभ के ऊपर ही लगा था ।

उठिए जल्दी से फ्रेश हो जाइए फिर चलते हैं पार्क में कुछ देर की धूप जरूरी है न ।

सृष्टी आज बहुत शिथिल महसूस कर रहा हूँ , कुछ चक्कर से आ रहे हैं ।

ओह फिर से आप खुद को कमजोर बना रहे हैं , उठिए फ्रेश होकर आराम करिए , मैं नाश्ता लगा रही हूँ ।

सौरभ की तबियत लगातार घबरा रही थी , बेचैनी से भर उठते। सृष्टी नें फोन पर बच्चों को बताया ....पापा की तबियत ठीक नहीं है , हो सके तो आ जाओ ।इनका शूगर लेबल फ्लेकचुएट हो रहा है साथ में बी पी भी तेजी से अप डाउन हो रहा है ।

संयोग से छोटा बेटा विदेश से उसी दिन लौटा था बड़ी बेटी शहर में ही थी जो हर सुख दुख में बहुत थोड़ा ही सही समय निकाल कर माता पिता की देखभाल कर लिया करती थी इसमें उसके पति भी भरपूर साथ देते थे अपनें पति के साथ आ गयी । शहर के नामी हास्पीटल में ले जाते जाते सौरभ जी न जानें कब शरीर छोड़ गये .....हतप्रभ छोड़ गये सभी को ....बाकी बच्चे भी देश विदेश से फटाफट आ गये ।

घर भर गया लेकिन कुछ बहुत बड़ा हिस्सा वीरान हो गया । सृष्टी तटस्थ बनी रही । आँसुओं को कुशलता से आँखों में घोंट सारे कार्य पूरा करती रही। रिश्तों का बाजार पतझर की भाँति खाली हो चुका था । बेटी दामाद, बेटे बहू और सोसायटी के लोग .....सौरभ जी को पसंद करनें वाले उनके हम उम्र लोग ..... । खैर सब रीता छोड़ सौरभ जी जीवन पथ पर सृष्टी को आगे भी संघर्षरत रहनें को कह कर विदा ले चले गये ।

सृष्टी रोती नहीं हैं । सब पहले जैसा ही सामान्य दिखती है । रात में अक्सर जाग जाग कर सारी डायरियां (हिसाब किताब की)मेंटेन करती , कब कहां कितना लेना है , कितना कहाँ का बाकी है । कौन सा पेपर कहाँ रखा है , कब क्या करना है । अचानक पूछने जैसे भाव आते हैं ..... सुनिए जरा अपनें ये तो बताया ही नहीं कि ..... उफ़ ..... सामने सौरभ की तस्वीर पर दृष्टि पड़ती और ..... आंखों से होते हुए हृदय तक एक रिक्तता फैल जाती .....अब स्वयं ही करना होगा । कितनी निश्चिंतता थी सब कुछ तुम्हारे ऊपर छोड़ घर गृहस्थी में लगी रही मैं , कभी कुछ जानने समझने की जरूरत ही नहीं समझी ।सब कुछ तो तुम ही संभालते रहे मैं तो अनुगामिनी बन तुम्हारे संग बनी रही । आज सब कुछ तुम्हारे जाने के बाद अकेली पड़ गई हूं । लेकिन यकीन करो तुम्हारे साथ बहुत कुछ सीख लिया है और अब सब कुछ तुम्हारे बिन करूंगी ..... करूंगी मैं । आखिर हम जीवनरथ के पहिए रहे हैं .....आज तुम नहीं हो फिर भी मुझे तो चलना ही पड़ेगा न।इसी बीच उठ कर किचन और वाशिंग मशीन भी चेक कर लेती और कब सोती कब उठती कुछ खयाल ही नहीं रहता । उन्हे सारे काम अति शीघ्रता से निबटानें हैं । अधरों पर मुस्कान लिए यूं ही एक दिन सृष्टी भी सो जाएंगी ....यही तो चाहती हैं वो। इसीलिए तो सारी पीड़ा को हृदयतल में समेटे तटस्थ सी बनीं रहती हैं । लेकिन समय की क्रूरता अभी बाकी थी पिता की मृत्यु के बाद छोटा अपना परिवार ले कर मां के पास ही रहने आ गया था । टू बी एच के के फ्लैट के एक कमरे में उसकी वाइफ किंजल खुश कैसे रह सकती थी और जब खुद खुश नहीं रह सकती तो सास को कैसे खुश रहने देती । और छोटा रोहित भी तो मां को वही पुरानी वाली मां समझता था , हमेशा किचन में खड़ी रहने वाली और कुछ भी खा कर संतोष करने वाली । सृष्टि उम्र के हिसाब से खानें पीने को लेकर बहुत सजग रहती थी और अब आदत भी छूट गई थी तो काम भी बहुत नहीं कर पाती थी । किंजल ने सुमित के कान भरने शुरू कर दिए नतीजन सुमित मां से घर के काम करने के लिए सृष्टि से कहता ।

मम्मी आप दिन भर बैठी रहती हैं और किंजल काम करती

रहती है कुछ काम आप कर लिया करिए ।

सृष्टि अवाक हो बेटे का तेवर और मुंह देखती रह गई । एक दिन सृष्टि को बुखार आ गया था । सृष्टि देर तक बिस्तर में ही पड़ी रही तभी सुमित आया और बोला कि मम्मी अभी तक आपने ब्रेक फास्ट नहीं बनाया फिर लंच कब बनाएंगी , ऐसे तो नहीं चलेगा हम आपके साथ नहीं रह सकेंगे ।

सृष्टि सोचने लगी कि ये वही छोटा है जो दिन भर मम्मी मम्मी कहता नहीं अघाता था और आज इसकी भाषा ही बदल गई है । ये हमारी देखभाल करने आया है या फिर मुफ्त की मेड बना कर शासन करने आया है । सृष्टि ने कहा कि आज बहू को कह दो हमारी हिम्मत नहीं पड़ रही है उठने की ।

सृष्टि दिन भर बुखार में तपती रही न सुमित आया और न ही किंजल ने ही आ कर चाय नाश्ते को पूछा । शाम को सृष्टि ने उठ कर खुद की चाय बनाने के पहले पूछने गई कि चाय बनाने जा रही हूं तुम लोग भी पियोगे चाय ।

नहीं हम बाहर जा रहे हैं डिनर के लिए ।

दूसरे दिन सुमित ने कहा हम दूसरा मकान ले रहे हैं और हम चार दिन बाद यहां से चले जाएंगे ।

क्यों बेटा , क्या हो गया ... मैं कर लूंगी सारे काम , मुझे अकेली छोड़ कर मत जाओ ।

नहीं हो पाएगा अब , हमें भी फ्रीडम चाहिए हमेशा टोका टोकी और इंटरफेयर नहीं चाहिए । सृष्टि बोलती तो क्या बोलती बिल्कुल चुप हो गई । छोटा सब सामान ट्रक में लोड करवा रहा था और सृष्टि अपनी बगिया को एक बार फिर उजड़ते हुए देख रही थी । घर बिल्कुल खाली हो गया और तन्हाई ने सृष्टि को अवसाद से भर दिया , अब वो घर में बंद रहने लगी थी । एक मेड भी रख ली , सुबह-शाम कुछ काम करते हुए मेड से बात करती फिर बिल्कुल अकेली ।

सोचती हैं क्या लेकर आए थे क्या लेकर जाना है । सब यहीं रह जाएगा सिर्फ कर्म ही साथ जाएगा । सब जिसका है उसी के पास रहेगा । बच्चे बड़े होकर जिम्मेदार भी हो गये थे । सृष्टी आज भी एक मां थी , एक औरत जिसका जीवन सिर्फ सृष्टि की रचना और अपनें सपनों को खुद की आंखों में भर कर तकिए के कवर में भिंगा कर सुखा देना था बस ।

दरवाजे पर कोई बार बार बेल बजाए जा रहा था , बड़े ही खिन्नता से उठ कर दरवाजा खोली तो एक महिला खड़ी थी । ब्लू जींस और लंबा कुर्ता , आंखों पर मंहगा चशमा और कंधे पर लेदर का पर्स लिए हुए ।

जी कहिए , किस्से मिलना है आपको ।

दिव्या नाम है मेरा ....याद करो कि स्कूल में लंच के पहले तुम्हारा लंच कौन खा जाता था । अरे एलेवेंथ में ...

इंटर के बाद हम बहराइच चले गए थे ।

ओह हां ... दिव्या ..तुम तो बिल्कुल नहीं बदली हो बस थोड़ी भारी हो गई हो और जरा सी उम्र भी तो चेंज लग रही है ।

आओ आओ अंदर आओ न । और बताओ कैसे आईं और मेरा ठिकाना कैसे ढूढ़ लिया तुमने ।

भइ सृष्टि मैं तो ऐसी ही हूं और रहूंगी भी , ये बता की कैसी हालत बना रखी है तुमने ।

क्या करूं , सौरभ के जाने के बाद दुनिया बहुत बेरहम लगने लगी है ।

भक्क ऐसे थोड़ी होता है अकेली हुई हो लेकिन दुनिया बहुत बड़ी है , बाहर निकलो , ताजी हवा में फेफड़े भर भर कर सांस लो , अच्छा पहनो , लोगों से मिलो बातें करो ।

लोग क्या कहेंगे कि ये कैसी विधवा है जो पति के न रहने पर भी कितनी खुश रहती है , न बाबा न मुझसे नहीं होगा ये सब ।

विधवा विधवा .... क्या है ये विधवा , जिसे जाना था वो तो चला गया , अब जाना तो मुझे और तुम्हें भी है लेकिन जो चला गया उसके लिए सांसें भी प्रतिबंधित हो जाएं ये सब तो रूढ़िवादी बातें हैं ।लोग तो जीते जी छोड़ कर चले जाते हैं उन्हें हमारा त्याग परिश्रम प्यार कुछ भी नहीं दिखाई देता फिर हम क्यूं रोते हुए जीवन के उन पलों को भी बस यूं ही रो कर

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

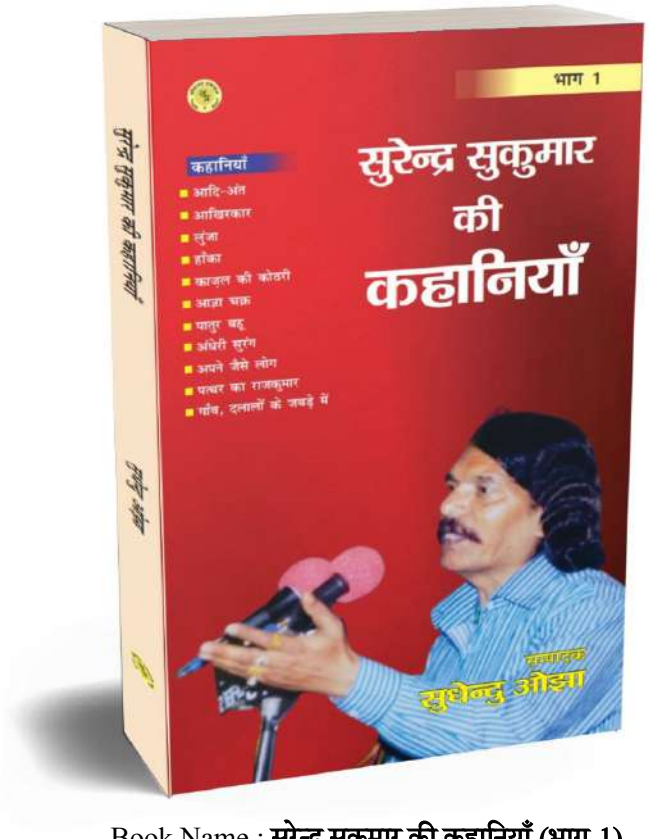

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

बिताएं। जितना स्वयं को कमजोर बनाओगी उतना ही समाज कमजोर बनाता रहेगा । सदियों से औरत सहती आई है , जो राह पुरुष समाज ने दिखाई हम स्त्रियां अनुगामिनी सी उसी पर चलती रही ।अब ये विधवा की चादर उतार फेंको सबसे पहले तुम इंसान हो और ईश्वर नें इंसान बनाते वक्त ये तो नहीं सोचा होगा न कि तुम अबला बनी असहाय बन पराश्रित रहो । जिंदगी तो ईश्वर की खूबसूरत रचना है इसे उदासी और रुढ़ियों के बोझ तले यूं ही दबाते रहे तो फिर हमारे समाज में यूं ही स्त्री पुरुष के बिना अधूरी और असहाय बनी रहेगी ।

सृष्टि तुम यकीन नहीं मानोगी कि मेरे पति भी वर्ष भर पहले मुझे तलाक दे कर अपनी ही सहकर्मी से जो उनसे कहीं बीस वर्ष छोटी है तो क्या मैं परित्यकता का लेबल लगा कर पति के नाम पर सिसकती रहूं । बेटा बेटी और सगे संबंधी तब तक साथ रहते या देते हैं जब तक उनकी अपनी जरूरत होती है । तुम्हें मेरी बातें कड़वी जरूर लग रही होंगी लेकिन सच यही है और सच का सामना करो । खुश रहोगी तो दुनिया खूबसूरत लगेगी दुखी रहोगी तो दुनिया बहुत बुरी और भयावह नजर आएगी और तुम हमेशा-हमेशा के लिए और विधवा की चादर ओढ़ कर बिना आग पानी के विधवा बन एक जीवन बर्बाद कर रही हो । याद है हम जब स्कूल में थे तो एक बहुत मोटी सी लड़की तुम्हारे घर के पास ही रहती थी । माया नाम था उसका लेकिन लोग उसे काया कह कर चिढ़ाते थे । उसके मोटापे के कारण उसकी शादी भी नहीं हो सकी थी । बहुत उदास और डिप्रेशन में रहने लगी थी धीरे धीरे पचास साल की हो रही थी तभी उसे भी मेरी तरह कोई सिरफिरी लड़की मिल गई । शायद उसके घर रह कर कोई एक्जाम देने आई थी , वो उसे जिम ले गई और माया का मन बिल्कुल बदल गया आज वह एक जिम की मालकिन है एक सौ पांच कीलो की पचास साल की महिला आज साठ के जी की लड़की है और अब विवाह के लिए रोज आफर आ रहे हैं लेकिन अब उसे विवाह नहीं करना है । अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है ये अपने आंसुओं से भींगे तकिए के गिलाफ अपने आसपास से भी हटा दो और नये गिलाफ लाओ । अपने इर्द-गिर्द बनाई हुई सीमा रेखा को मिटा दो और जब तक जीवित हो असीमित रहो । मरने का डर खतम हो जाएगा ।मरते तो सभी हैं हम भी मरेंगे और तुम भी तो मर मर के क्यों मरें । सृष्टि के उदास चेहरे पर एक खूबसूरत मुस्कान थिरक उठी ।

राम हमारे आएंगे

****

खत्म हुआ वनवास आज
अब राम हमारे आएंगे
राजतिलक अब फिर से होगा
हम सब खुशी मनाएंगे..।।

सूनी पड़ी अयोध्या फिर से
आज पुन: खुशियों से झूमी
फिर से आज दिवाली होगी
हम सब दीप जलाएंगे..।।

राजाराम हमारे होंगे
राजमहल फिर से चमकेगा
प्रजा सभी हैं नयन बिछाए
हम सब फिर मुस्काएंगे..।।

खुशियों के आंसू आंखों में
सावन बनकर बरस रहे हैं
बेघर राम का घर फिर होगा
हम सब भवन बनाएंगे..।।

खत्म हुआ वनवास आज
अब राम हमारे आएंगे
राजतिलक अब फिर से होगा
हम सब खुशी मनाएंगे..।।
हम सब खुशी मनाएंगे..।।

~विजय कनौजिया

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

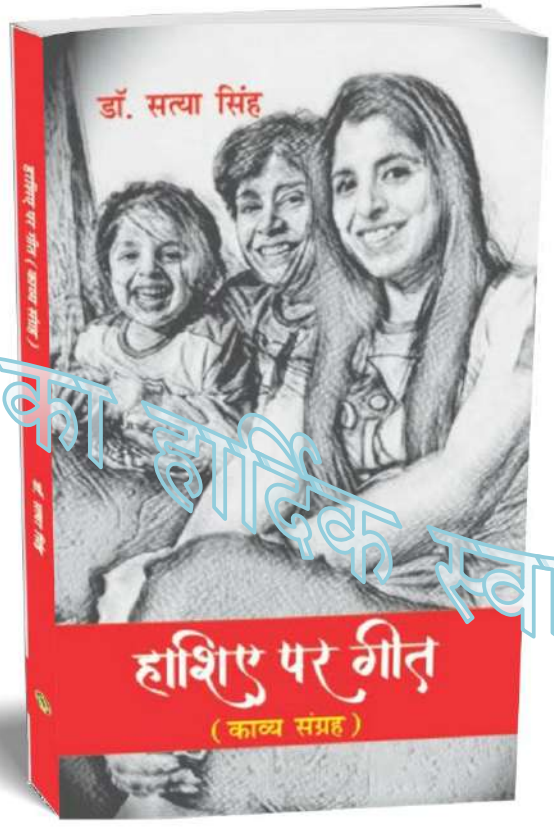

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

कहानी : नंदन पंडित

बैलगाड़ी के नीचे पुआल पर लेटा मनोहर मस्ती में गुनगुना रहा था, "झुलनिया गढ़ाय देबै अबकी तोहे गोइयां।"

पहली दफा ईख की फसल हुई थी। पहले-पहल वह शहर के सुगर मिल आया था। मिल परिसर में जाम लगा था। टोकन मिलना बंद हो गया था, अब तो यह सुबह ही बँटेगा। एक बार पेराई क्षमता भर की गाड़ियों को टोकन बाँटने के पश्चात, जाम हटने तक मिल वाले परिसर के अंदर गाड़ियों का प्रवेश रोक कर देते हैं। अभी रात के बमुश्किल नौ-दस बजे होंगे।

माघ की यह हिमकारी रात उसे यहीं काटनी होगी। इसी सोच पर उसने बैलों को खुटिया कर उन्हें बैलगाड़ी के दोनों ओर की बल्लियों से बाँध दिया और बैलगाड़ी के जुआ में उलार लगाकर गाड़ी वहीं खड़ी कर दी। बैलों के सामने घर से साथ लाया हुआ थोड़ा चारा डाल वह स्वयं गाड़ी के नीचे पुआल पर कथरी बिछाकर लेट गया।

दिन भर थके होने के कारण दोनों बैल खाने के बजाय बैठ गए और पगुराने लगे। बड़ी सुंदर जोड़ी थी दोनों की- एक सैरा, दूसरा धँवरा। दोनों का पुट्ठा उन्नत था। दोनों एक दूसरे के बाप! बेजोड़ और मजबूत। इन्हीं जोड़ी के बलबूते उसने स्वयं मील में ईख लाने की हिम्मत की थी।

उसने लोगों से सुन रखा था कि मिलों में बहुधा जाम लग जाती है फिर दो-दो तीन-तीन रात वहीं बितानी पड़ती है। उसने होशियारी की, बैलों के लिए दुइ बोरा भूसा और स्वयं के लिए बाप की इकलौती निशानी, भेड़ के ऊन वाला मोटा रोएँदार कम्बल व दुइ बोझली पुआल बाँध लाया था, कुछ बिछाने के लिए, कुछ तापने व बैलों को खिलाने हेतु।

घरैतिन ने रोटी के पाँच मोटे पनत्थे व लहसुन, मिर्च मिला

नमक रुमाल में लपेटकर उसके अँगरछे से बाँधकर काँधे पर लटका दिया था। मोटी रोटी उसे बहुत पसंद है।

बचपन में अम्मा जब रोटी सेंकती तो वह चूल्हा ही ताकता रहता। ठाकुर बाबा का भोग लगने से पहले अम्मा उसे चार-छह दफे डाँट होतीं, " ना, पहले नाहीं, ठाकुर बाबा रिसा जइहैं।" बप्पा समझाते, "अरे दे दो ना, बच्चा है। बालजती को सब मुआफ!"

अम्मा नियम की बड़ी पक्की, बाबा को भोग लगाकर ही टिक्कर उसे देतीं। पर पूरा नोन, तेल चभोड़कर। वह गोल-गोल उसे सेंइढ़े सा लपेटकर, छोटे-छोटे दाँतों से कुतरकर खाता तो अम्मा देखे ना अघातीं। घुइया के पत्तों का सेंइढ़ा उसे उतना नहीं पसंद है लेकिन चूल्हे में उपले के आग पर फूले ये गोल कुप्पे उसके प्राण हैं। हालांकि तब बेझरी की रोटी होती थी जो गेहूँ, जौ, बाजरा, चने के आटे से मिलकर बनती थी। आजकल इसे वैभव सम्पन्न लोग मिक्सी के नाम से पुकारते हैं।

बेझरी की रोटी पाथने का अपना अलग कौशल होता था। बाजी-बाजी औरतें नहीं बना पाती तो फूहड़ आदि नामों से नवाजी जातीं।

पहली गँवही ही में अम्मा ने घरैतिन को कठौती भर आटा सौंप दिया। बेचारी ने गूँथा पर पानी ज्यादा हो गया। जैसे-तैसे उसमें थोड़ा और सूखा आटा मिलाकर कट्ठा किया। अब पाथने की बारी में लो मुस्कराकर। घरैतिन कोई भुइगोलबत्ता (भूगोलवेत्ता) बन गई। ज्यों ही रोटी पाथने को दोनों हथेली जुटाती, गाँव का नक्शा बन जाता। दसियों कोन निकल आते, एक को सम्हालो तब तक दूसरा बढ़ जाता, कभी कुछ भाग हथेली में ही चिपक कर टूट जाता। बप्पा खाने बैठ गए पर एक रोटी भी न सेंकी गई। अम्मा ने देखा तो माथा पीट लिया। रोटी का भुइगोल देखकर तनिक देर हँसी फिर उन्होंने रोटी पाथना सिखाया। तीन-चार गँवही में वह रोटी बनाना सीख पाई। वे भी दिन थे भैया और आज का दिन मेम गुस्सा न जाएं, बाबू खुद ही भोजन पका लेंगे। उनके समय में मजाल था कोई सबके सामने मेहरी से बतिया ले।

ठंड बढ़ती जा रही थी। मनोहर गुरु-गुराने लगा। उसने बाहर निकलकर थोड़ा सा पुआल बालकर तन सेंका फिर बिछावन पर आकर पूरे शरीर पर कम्बल लपेट लिया, जैसे मुरदे में कफन लपेटा जाता है।

चारों ओर जगमग-जगमग दूधिया रोशनी में उसे नींद न आती थी। कहाँ ढिबरी बुझाकर सोने वाला वह? और यहाँ तो जैसे कई सूरज एक साथ उतर आए हों। वह कम्बल से आँख को मूँदता तो पाँव खुल जाता। काफी जद्दोजहद के बाद उसने हथेलियों से ही आँख मूँद लिया, थोड़ा सुकून मिला।

घरैतिन कब से झुलनी गढ़ाने को कह रही है। मनोरमा मेले को पाँच साल हो गए, जब आखिरी बार वह उसे मेला घुमाने ले गया था। एक औरत का दो मंजिला झुलनी देखती ही वह मचल गई। पूरा हुलिया पूछ उसी सुनार के दुकान पर उसे खखींचकर ले गई। उनकी हालत देखकर लड़के ने तो दिखाने से ही मना कर दिया, किन्तु बूढ़ा बाप नरमदिल था। उसने डाँटा, ग्राहक के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते। दिखाओ, महाजन को। दाम पूछा गया, बाप रे बाप! छः हजार। घरैतिन बड़ी समझदार, एक बार उसकी ओर देखा फिर साफ इन्कार कर दिया, 'हम बाद में लेंगे।'

पहली मर्तबा उसे उस पर नाज हुआ। सच में, घरवाली अगर सरियारिक, सुघर मिल गई तो गरीब घर भी सुरग (स्वर्ग) वरना बहुत सारे अमीर अपनी बीबियों के चक्कर में रोड पर देखे जा सकते हैं।

उसका बस नहीं चला, हाथ सकिस्त था। धान-गेहूँ की खेती से खाने भर का ही बमुश्किल हो पाता, सारी उपज तो खाद, पानी, बीज व जुताई-बुआई लील जाती है।

वह भी चाहता है कि घरैतिन गहने-गदेले से मिढ़ी रहे, महारानी बनकर रहे। महतो की घरवाली क्या उससे अधिक सुंदर है? सुपेला सी नाक, बीघा भर का मुँह। मुला गहनों और सुंदर कपड़ों से लदी रहती है तो लगता है कोई रानी- महारानी है।

ईख का दाम मिलेगा तो वह सबसे पहले उसकी झुलनी ही लेगा। यह गाड़ी बिक जाए तो इसके बाद भी दो गाड़ी ईख बचेगी। फी गाड़ी तीन हजार ही जोड़ो तो नौ हजार में कोई शक-सुबा नहीं है। वह अपना गणित लगाने लगा।

झुलनी लेने के उपरांत भी कुछ न कुछ बच ही जाएगा। तुलसी मैया के लिए वह एक चुनरी भी लेगा। कई तुला संक्रान्ति बीत गई पर वह वृन्दा महारानी को एक रुमाल तक

न उढ़ा (ओढ़ा) पाई। अबकी बार वह सारी कसर पूरी कर लेगा। ब्याह के बाद घरैतिन को दुबारा चुनरी में देखने की उसकी बड़ी इच्छा थी, इसी बहाने वह मनोकामना भी पूर्ण हो जाएगी क्योंकि महारानीजी कौन सी चुनरी साँटे रहेंगी?

घरैतिन तो उसे भी नया सदरी सिलवाने को कहती है किन्तु सिलाई-तुरपाई कराके वह पुरानी को ही एक सीजन और रगेदगा। कौन उसे नुमाइश दिखानी है। अब घरैतिन की बात और है, वह घर की आबरू है, मर्यादा है। अम्मा कहती थीं कि घरवाली छाक्षात (साक्षात) लिक्छमी (लक्ष्मी) होती है, उसको प्रसन (प्रसन्न) रखने से घर में बरकत आती है।

इसीलिए तो उसके घर की दरिद्रता नहीं मिटती, वह घरवाली को कभी खुश ही न रख पाया। मुला वह भी क्या करे? कभी हाथ ही न खुले, हजार- दो हजार रुपए भी कभी हाथ में एक साथ न रुके।

ठंड के साथ-साथ भूख भी बढ़ती गई। मनोहर ने दोनों हाथों को कम्बल के भीतर समेट लिया। वह रोटी नहीं खाएगा। पता नहीं कितने दिन रहना पड़े? आज तो घर से ही खा-पीकर चला है। रोटी का भोग अब वह कल ही लगाएगा।

फैक्ट्री का दुर्गंध नाक का पुरजा-पुरजा सड़ा दे रही थी। उफ्फ'! ये शहर के लोग कैसे रहते हैं इसके अगल-बगल?

"कोई है?" बैलगाड़ी के पास से गुजरती हुई एक परछाईं ने पूछा।

मनोहर चुप रहा। कान को हवाओं की भी चाप सुन लेने तक के लिए चौकस कर दिया। दुबारा फिर वही सवाल, "अरे! भई कोई है?"

उस पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। जाड़े में गर्म बिस्तर छोड़ना बहुत बड़ा तियाग (त्याग) है। किसी भाँति साहस जुटाकर उसने मुख के ऊपर का कम्बल हटाया, सामने साल लपेटे हुए कोई एक पचपन-साठ साला किसान खड़ा था। मनोहर को इत्मीनान हो गया। कम्बल दूर सरकाते हुए बोला, "हाँ भाई! तुम कउन?"

"मैं बेकारू, कुछ दियासलाई वगैरह है? बड़ी देर से तलब लगी है।" कहकर उसने जोर से अँगड़ाई ली, 'यह सर्दी भी परीक्षा लेने पर तुली है, कहती है हमीं बड़ी।' एक साथ कई जोड़ तड़तड़ा उठे उसके।

मनोहर बिछावन से बाहर निकल आया, "लो भाई,

दियासलाई पर तमाखू कहीं ढर्रे में ही गिर गया।"

"कोई बात नहीं, बस दियासलाई चाहिए।" बेकारू ने कमीज की भीतरी जेब से नक्काशीदार चिलम और तमाखू की पोटली निकाला। मनोहर ने तमाखू भरा। पहले चिलम बेकारू के होठों पर विराजी। मनोहर ने तीली जलाकर चिलम के दूसरे चौड़े सिरे पर रखा। बेकारू के दो-तीन साँस भीतर खींचते ही चिलम लपलपा उठी। देखते ही देखते चिमनी सा धुँआ निकलने लगा। बारी-बारी से दोनों कश लेने लगे। मनोहर की बारी आई, उसने जल्दबाजी कर दी, एकबारगी अधिक धुँआ खींच लेने से 'खौं-खौं-खौं' करने लगा। बेकारू ने पीठ थपथपाई, "आहिस्ता भाई, आहिस्ता।"

धूम्रपान उपरान्त दोनों के भीतर नव स्फूर्ति का संचार हुआ। बदन में गर्मी आते ही हाल-चाल के साथ-साथ लल्लो-चप्पो शुरु हो गई। मनोहर ने अपना परिचय दिया। वह पहली बार मिल पर गन्ना लाया है, यह भी न छिपा सका।

बेकारू मनोहर से अधिक अनुभवी था, वह तीसरी बार यहाँ आया था। उसने मनोहर को मिलों की घटतौली के अनेकानेक यथार्थ व कल्पित किस्से सुनाया। ये मील वाले बेईमानी में घाघ होते हैं। कमपूटर (कम्प्यूटर) में पहले से ही बेईमानी सेट किए रखते हैं। गाड़ी पीछे ढाई-तीन कुन्तल, इनसे कोई नहीं छीन सकता, वह इनके बाप का ही है। गेट के इनके कर्मचारी भी कम खतरनाक नहीं होते, साँप के सपोला ही होता है। ये एक तिहाई गन्ना तो अगोला व जड़ के नाम पर ही बालकर गिरा देंगे। किसानों के वास्ते सबकी नीयत खोटी है। लेकिन मनोहर भइया, सब दोष हरैं लिक्छमी। दस रुपए का एक नोट पकड़ा देना, फिर देखना बर्ताव, लगेगा जैसे ईख नहीं शक्कर ही लाद लाए हो गाड़ी पर। नोटों की चमक देखते ही ऐसा व्यवहार करेंगे मानो सगे साढ़ू हो।

"अच्छा मनोहर भइया! कौन सा गाँव बताया अपना? मैं तो पूछना ही भूल गया।" बोलते-बोलते बेकारू को कुछ याद आया।

"मुझे भी तो बताने की सुधि न रही बेकारू भइया! ऊ..बरेली का नाम सुना होगा, ऊहाँ ही है अपना गरीब नेवास (निवास)।" उसने झेंपते हुए उत्तर दिया।

"बरेली? कौन, झुमका वाला?" बेकारू की आँखों में हैरानी से अधिक शैतानी थी।

"अरे! नाहीं, भैया। ई रामनगर के पास मा बरेली गाँव है।" दोनों हँस दिए।

अचानक जोर का साइरन बजा। मनोहर एकदम काँप उठा। बेकारू हँसने लगा और हँसते हुए बोला, "डरो, नाहीं भइया। ई मील का भोंपू है। चौबीस घण्टा मा तीन बेर बजती है- रात बारह बजे, सुबह आठ बजे और साँझ चार बजे। ई ही सुनकर काम करने वाले फेरा बदलते, आते-जाते हैं।"

बेकारू की बातें सुनकर वह झेंप गया। वाकई बेकारू भैया हैं बड़े गियानी (ज्ञानी) पुरुष। उसका अंतर्मन उनके प्रति श्रद्धानवत हो गया।

ठंड बढ़ती ही गई। दोनों ने फिर एक चिलम सुलगाई। दम लगाने के बाद बेकारू उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "अच्छा मनोहर भइया, अब चलता हूँ। बारह बज गए। गाड़ी पर लड़का अकेले डरता होगा। अच्छा राम-राम!"

"राम-राम!"

सैरा, धँवरा उठा-बैठक कर रहे थे। मनोहर ने बोरे में से भूसा निकालकर उनके आगे डाल दिया। पीठ पर हाथ धरा और प्यार से सहलाते हुए कहा, "खा लो गऊ महाराज और बैठकर सो जाओ। सर्दी बहुत अधिक है। अगल-बगल कहीं कोई अलाव भी नहीं जलता, जहाँ तुम्हें बाँध दूँ। सरकार को हम-तुम की फिकर कहाँ है! पास में थोड़ा सा पुआल है, जला दूँ तो खिलाऊँगा क्या? बिछाऊँगा क्या? पता नहीं कब तक रहना पड़े। ..खा लो और सो जाओ"

बैलों ने एक-आध कौर टूँगा-टाँगा। उसने देखा ठंड से दोनों के रोएँ घमण्ड की तरह अकड़े खड़े हैं। तुरंत उसने बिछावन में से थोड़ा पुआल निकालकर उनके बीच में जला दिया।

बैलों का तो बहाना था, खुद वह ज्यादा ही जुड़ा गया था। बस बेकारू भइया के बातचीत में भूला था। तीनों प्राणी ने आग के पास थोड़ी, राहत महसूस की। दोनों बैलों का डिल्ला दबाते हुए उन्हें बिठाकर वह अपने बिछावन में जा घुसा।

'अरे..रे..रे..! पूरा हेंवार है।' येन-केन-प्रकारेण हिम्मत साधकर बिछौने पर मनोहर ने शरीर को कम्बल से ढका।

बिछावन पर आते ही फिर उसका चिंतन-व्यापार शुरू! अकिंचन का सपना और बिछौना दोनों सौतेली बहन हैं। उनके सपने बिछौने में ही उगते हैं, वहीं फलते-फूलते और अंत में बिछौने में ही दफन हो जाते हैं।

गेहूँ-धान की लागत व बिकवाली से तंग आकर, गाँव के अधिकांश लोगों की देखा-देखी उसने भी ईख की खेती शुरू की है। उसकी आँखों के सामने ही गन्ने के बल पर कई दुआर के कच्चे घर पक्के हो गए। कुछेक ओसारे में फटफटिया भी फटफटाने लगी है। उसका घर तो वही बाबा आदम के जमाने का है, कच्चे माटी की दीवारों पर घास-फूस के छप्पर। चार सीजन ईख की फसल अच्छी चल पड़ी तो उसके भी दुआरे पक्का मकान सलामी देने लगेगा।

गुड़िया भी सरिष्ठ हो गई है। उसका घर-बार ढूँढ़ना है। मुला वह पहले घरैतिन की झुलनी गढ़ाएगा, तब पक्का घर और उसके बाद गुड़िया का बियाह करेगा। कौन बहुत बड़ी हो गई वह, जोड़े-घटाए साढ़े पन्द्रह की होती है। उससे दिनार-दिनार लड़कियाँ गाँव में अभी पढ़ रही हैं। उन ठाकुरों की लड़कियों को देखो। साइकिल पर कैसे 'टिलिलिन-टिलिलिन' इतराती हुई पढ़ने जाती हैं। कहती हैं, अभी कॉलीज कर रही हूँ। उनमें अधिकतर की जो उम्र है, उतने में घरैतिन दो बच्चों की माँ बन गई थी।

गुड़िया कोई बड़ी नहीं हुई है, हाँ बस वह स्कूल-कॉलीज नहीं करती। ..करती क्यों नहीं? उसका तो मन था ही, पढ़ाई में तो वह बड़ी निपुण थी। किन्तु क्या करे? उसके विधाता गरीब जो ठहरे। ललचाती वह भी है उन लड़कियों को साइकिल पर चढ़कर जाती देख। वह भी चाहती है पढ़े, पंख पसार कर उड़े किन्तु सबकी किस्मत जुदा होती है। जूता यदि सिर पर चढ़ जाए तो पैरों के नीचे कुचलेगा कौन?

वह करवट दर करवट बदलता रहा और ठंड तथा स्वयं से लड़ता रहा। हर प्रयास विफल नींद न आई, कुछ ठंड से, कुछ ईख और बैलों की चोरी के भय से। चोरी न भी हो, बैल ही नाथ-पगहा तोड़ लें तो? वैसे सैरा और धँवरा ऐसे हैं नहीं। ये दोनों बैल नहीं, उसके कोई जनम के पूत हैं।

चोरी कौन करेगा? किसका साहस होगा इतनी चटख रोशनी में। चारों ओर घाम ही घाम पसरा है। और.. उसी की अकेली बैलगाड़ी थोड़ी है, पाँत की पाँत सजी है बैलगाड़ियों तथा ट्रालियों की।

..वो तेरी, वह नाहक चिंता करता है, 'जागते रहो' और पुलिस का साइरन का घुड़या छीलेगा? जो घड़ी आध घड़ी में गूँज उठता है। अब मनोहर के राम चले सोने। बेकारू भइया ने बताया था कि शहर में दुकानदार दुकानों की रखवाली के लिए चौकीदार रखे होते हैं। ये चौकीदार रात भर 'जागते रहो, जागते रहो' चिल्लाते रहते हैं और आप चैन से पलंग की बाध तोड़ते हैं।

फिर भी उसे एक बेर उठकर अपनी बैलगाड़ी व बैलों का मुआयना कर लेना चाहिए।' मन के किसी कोने में बात उठी। 'बिला वजह क्यों देखना?' ठंड से ठिठुरते दूसरे मन ने फौरन प्रतिवाद किया। दूसरे मन की जीत हुई। वह कहीं नहीं जाएगा। अंतिम निर्णय के साथ उसने कम्बल में मुँह ढक लिया।

सुबह आँख खुली तो सैरा और धँवरा मनोहर के पाँव चाट रहे थे। रात में जगमगाने वाली सारी रोशनियाँ कहीं गुम हो गईं थीं। सूरज आकाश में सिर के ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहा था किन्तु कुहरा पाँव पकड़कर अंतरिक्ष के पार फेंक देता था। कम्बल को किनारे सरका वह हड़बड़ाकर उठा।

रात को उसके आगे-पीछे लगी कोई गाड़ी न दिखी। बेकारू भइया भी न दिखाई पड़े। उसने कम्बल को शरीर पर लपेटा और एकबार गाड़ी के चारों ओर मुआयना करके दोनों बैलों को

'जुट, जुट' कहकर बैलगाड़ी में जोत दिया।

बैलगाड़ी में जुतते ही खम खमा कर दोनों बैल दौड़ पड़े मानो ईख नहीं रुई भरी हो। देखते ही देखते आध घड़ी में बैलगाड़ी मिल गेट के सामने खड़ी थी। लम्बा-चौड़ा और गगनचुम्बी मिल का गेट देखकर मनोहर हर्षित हो गया, उसका हृदय आत्मानंद से भर गया, जी किया कि लोट जाए वह अपने उस स्वप्नदुआरी पर।

वह बैलगाड़ी को सीधे गेट के भीतर घुसाने लगा। तब तक घूमते हुए दो वर्दीधारी गार्डों में से एक ने घुड़क दिया, "कहाँ चला, पहले टोकन दिखाओ।"

मनोहर ने बैलगाड़ी पर बैठे-बैठे ही झटपट सदरी की जेब से गन्ने की पर्ची निकालकर उसके आगे लहरा दिया। गार्ड तजुर्बेकार था। कागज का रंग देखते ही भाँप गया। डपटते हुए उसने कहा, "पर्ची नहीं, टोकन दिखाओ, टोकन!"

मनोहर डर गया। डरते हुए उनमें से दूसरे गार्ड से पूछा, "ई टोकिन का है, गारट (गार्ड) बाबू?"

दूसरा गार्ड पहले तो उसे देखकर हँसा, फिर बोला, "पहली बार मिल में गन्ना लाए हो?"

"हाँ, बाबू।" मनोहर ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिए।

वह गार्ड नेकदिल था। मनोहर की दशा देखकर, उसने गेट से बाहर, बायें कोने में बने छोटे से कमरे की ओर इशारा करके कहा, "वहाँ जाओ। वह है टोकन रूम। पर्ची जमा करने पर टोकन वहीं मिलेगा।"

मनोहर ने बैलगाड़ी को एक ओर लगाकर, बैलों को अलग कर दिया। गेट से बाहर निकलकर वह टोकनरूम में पहुँचा, वहाँ अधिक भीड़ न थी। जल्दी ही उसका नम्बर आ गया। मनोहर ने एक छोटी सी खिड़की के रास्ते पर्ची टोकन बाबू को दिया। टोकन बाबू एक मोटे फ्रेम का चश्मा पहने हुए व्यक्ति था। उसने पहले पर्ची का नम्बर एक रजिस्टर में नोट किया। फिर पर्ची के दिनाँक पर जैसे ही उसकी दृष्टि गई, वह चीख पड़ा, "साला, हायल पर्ची का टोकन बनवाते हो? बेवकूफ समझा है?" इतना कहकर गुस्से से उसने पर्ची खिड़की के बाहर फेंक दिया।

पर्ची हवा में लहराने लगी। मनोहर ने लपककर उसे अपने अँकवार में समेटा और खिड़की से दूर खड़ा होकर टोकन बाबू का मिजाज पढ़ने लगा। सोचा साईद (शायद) बाबूजी बीबीजी से नाराज हैं, अभी कुछ देर में ठंडे हो जाएँगे।

टोकन बाबू का चेहरा बाँचते-बाँचते बेकारू की रात वाली बात उसको याद हो आई। तुरंत दस-दस के दो नोट पर्ची पर रखकर वह डरते हुए फिर उसके पास पहुँचा और धीरे से कहने लगा, "बाबू साहेब, तनिक फिर से देख लो। पर्ची हाईल नहीं है। परसों ही तो मुझे मिली है। यह तो पाँच दिन तक तौली जाती है।"

सामने से सुपरवाइजर की कार गुजर रही थी। उसी समय मनोहर के हाथ में रुपए देखकर टोकन बाबू के हाथ-पाँव फूल गए। उसने अबकी बार उसकी पर्ची, रुपए समेत खिड़की से बहुत दूर फेंक दिया और क्रोध में बोला, "साले, ले अपने रुपए और पर्ची। गँवार कहीं का घूस देता है मुझे! जाता है यहाँ से कि गार्ड को बुलाऊँ?"

मनोहर के सारे अरमान पल भर में झुलस गए। उसने बोझिल कदमों से पर्ची तथा नोट उठाया और सोचते हुए बैलगाड़ी की ओर चल दिया। पर्ची हाईल हो गई? पर उसे तो परसों ही मिली है? लेकिन टोकिन बाबू दो बार झूठ नहीं बोलता? वह भी पैसा देने पर। गाँव के ही किसी व्यक्ति ने जलन के मारे पर्ची को दो-तीन दिन तक दबवा रखा होगा। जरूर यह उसके पटीदार नोखुआ की काररस्तानी होगी। उसी से उसकी बढ़ती नहीं देखी जाती।

अरे! छोड़ो ई सब। पहले सोचो ईख तौली कैसे जाय? दूसरे मन ने डाँटा। अगली पर्ची पता नहीं कब आए? उसके आने तक तो पूरा गन्ना सूखकर काँटा हो जाएगा। और ईख लदी बैलगाड़ी वापस लौटने पर गाँव वाले खिल्ली उड़ाएँगे। नोखुआ तो पहले ही कह रहा था, गन्ना बोना आसान है, मुला उसे बेचता करेजा (कलेजा) वाला ही है। सच हो गई उसकी बात। बड़ी काली

जुबान है हरामी की। ..गऊ महाराज ने इतना बोझा ढोया, तीनों लोग दो दिन भूख और ठंड में मरे, सब बृथा। हे! दीनानाथ, अब का करे वह? तुम ही कोई मारग (मार्ग) दिखलाओ।

"क्या हुआ? टोकन नहीं मिला?" उसका लटका हुआ मुँह देखकर कुछ समय पूर्व डाँटने वाले पहले गार्ड ने पूछा।

गार्ड की हमदर्दी पर उसको बहुत क्रोध आया, जले पर लोन छिड़क रहा है हरामखोर! मुल गरीब कहाँ गुस्सा कर सकता है? उसके पिता ने कहा था, क्रोध तो अमीरों का हक है! गरीब तो केवल क्रोध झेलने के लिए पैदा होता है! वास्तविकता का ख्याल आते ही मनोहर ने यथार्थ ओढ़ लिया। दु:खी मन से गार्ड से बोला, "नाहीं, टोकिन बाबू कहते हैं कि पर्ची हाइल है!"

"गाँव में तुमने पर्ची किसी को दिखाया नहीं था?"

"नाहीं साहब! दिखाते तो कई लोग हम से भी अधिक पर्ची की जरूरत लेकर दुआर पर खड़े हो जाते। जिन्नगी भर जिसने हम पर इहसान (एहसान) किया, फिर उनको कैसे मना कर पाता? सोचा, जब मिली है तो पाँच दिन चलेगी ही। पहले किसी नात-रिश्तेदार की पर्ची बताकर अपनी ईख बेच लूँ। फिर आगे-पीछे सब जानेंगे भी तो का, काज निकल जाएगा!"

"ओह! यही तो गलती हुई। तुम्हें किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को दिखाना चाहिए था?"

"गारट बाबू, मेरी मति मारी गई थी। मैं गँवार आदमी, बड़का होशियार बनने चला था।" कहते-कहते वह अपना सिर अपने आप ही पीटने लगा।

गार्ड ने दौड़कर उसे रोका, "हाँ, हाँ यह क्या करते हो भाई?"

"तब का करूँ साहब? बहुत अरमान था ई पे। साल भर बहुत मेहनत किया था ईख के साथ। ई ईख पर ही पूरा भविस (भविष्य) टिका हुआ है।"

"एक रास्ता है हमारे पास?"

"कउन रास्ता? बताओ न गारट बाबू?" मनोहर के लुटते अरमानों को जैसे तिनके का सहारा मिल गया।

"लेकिनऽऽ...रहने दो...छोड़ो, तुम..तुम गलत समझ जाओगे। न, न रहने दो।"

"नाहीं, बताओ गारट बाबू!"

"पैसे कम मिलेंगे तो तुम मुझी को पाप लगाओगे।" गार्ड ने एक अवसरवादी मँजे हुए इन्सान की तरह मनोहर को अपने साँचे में ढाल लेना चाहा।

"पैसा की फिकिर (फिक्) आप न करो गारट बाबू। भागत भूत कै लँगोट हु भली। जउन औने-पौने मिल जाय, सब हमका मंजूर है। बस ई ईख न गाँव वापिस जाय।"

गार्ड ने देखा, शिकार चारों ओर से घिर चुका है। उसने आपदा में अवसर वाला जाल फेंक दिया, "ठीक है, चाहे मुझे घाटा हो या लाभ! तुम लो, एक हजार और गाड़ी खलासी पर जाकर खाली कर दो।"

"पर गारट बाबू गाँव में ही लोग दो हजार देते हैं..?"

"फिर रहने दो। मैं तो मना ही करता था।" कहकर गार्ड वहाँ से दो पग आगे बढ़ गया। मनोहर ने विचार किया। आधी तज सारी को धावै, आधी रहे न सारी पावै। यह तो कुल गया। भागते भूत की लँगोट भली। अपने पेट पर हाथ रखकर वह बिना मन उसकी ओर लपका, "गारट बाबू, आप तो नाराज हो गए! लाओ हजार ही।"

गार्ड ने सौ-सौ के दस नोट गिनकर उसकी हथेली पर रख दिया। मनोहर ने काँपते हाथों से उसे अपने सदरी की चोर जेब में रख लिया। एक झोंका आया और सारे स्वप्न डाली से उतर गए। आध घण्टे में पहाड़ का राई हो गया। मनोहर ने खुली आँख सारे सपने लुटाकर खाली बैलगाड़ी को अपने घर की ओर मोड़ दिया।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय -क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

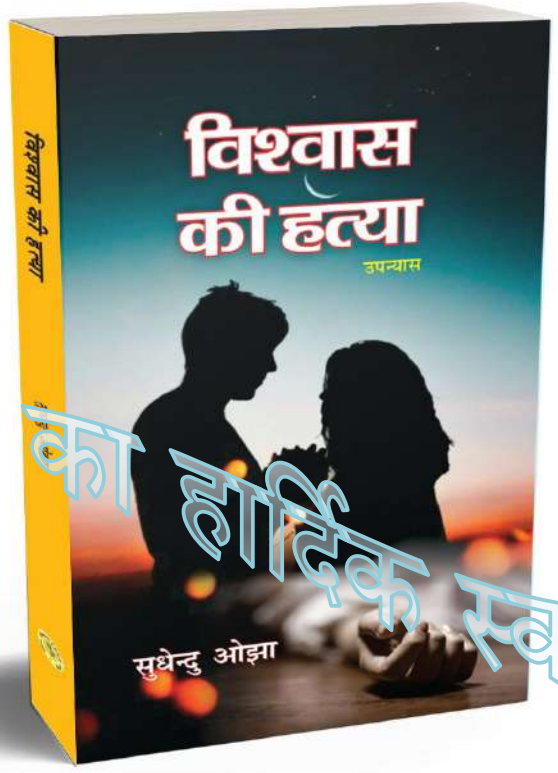

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी : एप्वायंटमेंट लेटर

कहानी : पद्मा अग्रवाल

सुबह के 6 बजे थे... मुंबई में सूर्योदय कुछ विलंब से होता है . इसलिये अभी अँधेरा छाया हुआ था.

'गोलू, बाथरुम से जल्दी बाहर निकलो, बस छूट जायेगी.... ' ईशा बेटे को स्कूल के लिये तैयार कर रही थी.

'सुबह सुबह क्या शोर मचा रखा है .. घर है... या मछली बाजार , अपने घर में भी चैन से नहीं सो सकता .' 'ठीक से सबेरा भी नहीं हुआ है और शोर मचाना शुरु .. तुम दोनों ने तो मेरी नाक में दम कर रखा है ....'

दिव्यम् शांति से सो ले , इसलिये ईशा ने चुपचाप गोलू का हाथ पकड़ा और दूसरे कमरे में ले जाकर उसे स्कूल के लिये तैयार करने लगी थी . लेकिन पति की बड़ बड़ से सुबह सुबह ही उसका मूड खराब हो गया था .

उसे गोलू के लेकर रोज सोसायटी के गेट पर बस का इंतजार करना पड़ता था . वहाँ पर उसे मान्या मिल गई और उसके साथ बातों में कब 10-15 मिनट निकल गये , पता ही नहीं लगा था . उसने घड़ी पर नजर डाली और फिर तेजी से भागती हुई घर आई और जल्दी जल्दी दिव्यम् के लिये उसका फेवरेट पोहा बनाया और टिफिन में क्लब सैण्डविच बना कर रख ही रही

थी कि वह तैयार होकर आ गये और डायनिंग टेबिल पर पोहे की प्लेट देखते ही नाराज होकर बोले ,

'रोज के रोज वही पोहा , मैं ऑफिस में कुछ खा लूँगा ....'

' टिफिन में क्या रखा है ?'

'आपकी पसंदीदा क्लब सैंडविच '

'कुछ डिफरेंट नहीं बना सकतीं .. यहाँ वहाँ गप मारना , और रात दिन जब तुम्हें टी. वी. और मोबाइल से फुर्सत मिले तब तो कुछ कर पाओगी'.

'कब से तुमसे कह रहा हूँ कि मेरी शर्ट के बटन टूट गये हैं , उन्हें टाँक दो ... मेरी पैंट में प्रेस नहीं है ...पूरा घर देखो तो अलग, बुरी तरह से बिखरा हुआ है .. दिन भर जाने क्या करती रहती हो ...'

' जॉब के लिये तुम्हें अब तुम्हें सोचने की जरूरत ही नहीं रह गई हैं ,क्योंकि मैं बैल की तरह तुम लोगों के लिये दिन रात काम कर ही रहा हूँ ... बस तुम महारानी बन कर मेरे पैसों पर केवल ऐश करो' ...

'अरे यार, नाश्ता कर लो , कल कुछ डिफरेंट बना दूँगी... घर से भूखे नहीं निकलते हैं ... प्लीज गुस्सा थूक दो... नाश्ता कर भी लो ... मैं आज याद से तुम्हारे सारे काम कर दूँगीं . दो-तीन दिन से तबियत कुछ ढीली सी थी , बुखार सा लग रहा था '

'माफ कर दो, मुझे नहीं मालूम था कि मैडम को बुखार है .. आप लेट जाइये .. मेरे लिये बेकार आपने इतनी तकलीफ उठाई . आराम बड़ी चीज है मुँह ढक कर सोइये' ..अपनी देह का तुम्हें बड़ा घमंड है ना.. अब मैं तुम्हारे नजदीक भी नहीं आऊँगा . तुम अपने को जाने क्या समझने लगी हो'?

' ये सब अब तुम ही खा लेना और महारानी की तरह मेरे पैसे पर ऐश करती रहो ...'

कहता हुआ वह अपना क्रोध जाहिर करने के लिये पैरों से दरवाजा जोर से बंद करके चला गया था...

ईशा ने कई बार जॉब के लिये इंटरव्यू दिया लेकिन बार बार मिलने वाली असफलता के कारण वह मानसिक रूप से परेशान रहने लगी थी . सच कहा जाये तो अपने सपने पूरा न हो पाने के कारण वह अवसाद का शिकार होती जा रही थी ..एक ओर उसका लेक्चरर बनने का सपना टूट रहा था तो दूसरी ओर दिव्यम् के साथ उसके रिश्ते भी खराब होते जा रहे थे . अवसाद और निराशा के गर्त में डूब जाने के कारण अब तो उसने जॉब भी ढूँढना बंद कर दिया था .

दिव्यम् के व्यंग बाण उसके मनोमस्तिष्क को घायल कर देते तो वह घंटों तक अपने आँसू बहा कर अपना दिल हल्का कर लेती थी . धीरे धीरे वह अवसाद के समुन्दर में डूबती जा रही थी . बात बात पर आँसू में डूब जाना उसका स्वभाव बनता जा रहा था

आज भी वह अपने को नहीं रोक पाई , और बस उसकी आँखें बरस पड़ीं . वह बहुत देर तक सिसकती रही . जब वह रोते रोते थक गई तो वह उठ कर किचेन समटने लगी और फिर नहाने चली गई . आइने में अपना चेहरा देख वह परेशान हो उठी , उसकी लाल सूजी हुई आँखों ने उसे अपना अपमान याद दिला दिया था . भूख के कारण उसकी आँते कुलबुला रहीं थीं . लेकिन आज दिव्यम् के कहे हुये शब्द कि तुम्हीं खाओ और मेरे पैसों पर ऐश करती रहो उसके दिल को नश्तर कर गये थे .

यदि गोलू न होता तो शायद वह यह घर आज ही छोड़ कर कहीं भी चल देती ... चार साल से अपमान झेलते झेलते उसका दिल छलनी हो चुका है . वह जीवित लाश बन कर रह गई है ... तभी कॉल बेल बज उठी थी .. अपने चेहरे मुस्कान लाने की कोशिश करते हुये उसने दरवाजा खोला था .

विमला थी , घर की साफ सफाई और बर्तन करने आई थी.

'दीदी ,आपकी आँखें लाल हो रही हैं , सूजी हुई भी हैं बुखार ज्यादा है तो डॉक्टर को दिखा कर दवा ले लीजिये . लापरवाही अच्छी नहीं है .'

'दीदी , आपके लिये अदरख वाली चाय बना दूँ

'विमला अपने लिये भी चाय बना लेना और ब्रेड पर बटर लगा कर मुझे दे देना . ये सब नाश्ता तुम ले लेना'

उसकी अंतरात्मा उसे धिक्कार रही थी .. आखिर क्यों वह अपने को तिल तिल कर मार रही है .. जी है तो जहान् है .. उसे अपने लिये जीना सीखना होगा . उसके पास पी.एच. डी. की डिग्री है , कोई मजाक है .... यदि दो- चार जगह इंटरव्यू में वह असफल भी हो गई तो भला घबराने की क्या बात हो गई . असफलता ही तो सफलता की सीढी होती है . उसी पर कदम बढाते हुये उसे आगे बढना होगा .

जिन जगहों पर वह इंटरव्यू के लिये गई थी , वहाँ तो सब पहले से ही सेट था , इंटरव्यू तो दिखावा और महज खानापूर्ति थी .

गोलू कहाँ रहेगा , वह चिंतित हो उठी थी.

उसकी आत्मा ने तुरंत उत्तर दिया था , 'क्या केवल तुम्हारे पास ही बच्चा है ?'

वह उत्साह से भर उठी थी . उसने लैपटॉप पर जॉब ऑफर वाले पोर्टल पर सर्च करना शुरू कर दिया था .

डिग्री कॉलेज के लेक्चरर की वांट का वॉक -इन इंटरव्यू की तारीख देख उसकी आँखें चमक उठीं थीं .

दिव्यम् तुम अपने को समझते क्या हो ... अब मैं तुम्हें दिखा दूँगीं कि वह भी किसी मायने में इससे कम

नहीं है .'

'क्या हुआ .. दिव्यम् बिना नाश्ता करे चला गया ... वह तो मस्ती से ऑफिस कैंटीन में खा पीकर मस्त होगा और वह बेचारी रो रोकर बेहाल हो रही है .... क्यों वह अपने को तिल तिल करके मार रही है ... उसे अपने लिये जीना सीखना होगा .... वह तो ऐसे बिहेव कर रही है जैसे एकदम अनपढ गँवार करते हैं ..फिर से उसकी सोच की सुई एक ही जगह अटक कर रह गई थी' , गोलू कहाँ रहेगा?

'क्यों ईशा तुम्हारे पास ही बच्चा है .. जब निशि एक साल के बच्चे को डे केयर में छोड़ कर जाती थी तो क्या उसका दिल नहीं दुखता होगा'?

दिव्यम् से पूछा भी नहीं है ...वह वैसे ही हर बात पर चिड़चिड़ाता रहता है , उसे नाराज होने का एक मौका और मिल जायेगा ..

जब हर समय उसे खुश करने की कोशिश करते रहने पर भी वह हर समय नाराज रहता है तो वह उसकी परवाह क्यों करती है ..छोड़ न उसकी परवाह करना ...

अपने तरीके से.. चुपचाप कोशिश करती रह ...जब नौकरी का कुछ हो जाये तो बता देना ..

एक – एक नौकरी केलिये इतनी मारामारी है, क्या उसे पता नहीं...

और हाँ, यदि इंटरव्यू देने गईं तो क्या तुम्हें पक्का नौकरी मिल ही जायेगी... डॉ ईशा गुप्ता अपने सारे सपनों को भूल भाल कर पति की गाली खाकर रो रही हैं और अपना बच्चा पाल रही हैं ...आज उसने स्वयं को धिक्कारा था .

वाह वाह वेरी गुड, वह ताली बजाते हुए अपनी पीठ ठोकने लगी थी . वह खिसियानी सी हँस हँस पड़ी थी .

'उठो ईशा, अपनी फाइल निकालो ,' उस पर लगे जाले और गंदगी को झाड़ पोंछ कर अपनी नॉलेज को अपडेट करो... फिर कॉन्फिडेंस के साथ इंटरव्यू को फेस करो .

अंतर्मन की आवाज से उस के मन में उत्साह का संचार हुआ था. सच उसे तो अपनी कोशिश तो करते ही रहना ही होगा ...ट्राय

करने में भला उसका क्या नुकसान होगा ,ज्यादा से ज्यादा मना ही हो जायेगा .

दिव्यम् ने तो अति ही कर दी है ... जितना वह चुप रहती है , उतना ही उसकी बकवास बढती जा रही है.

उस दिन भला उसने ऐसा क्या कर लिया था ..... उसने अपना हेयर कट ही तो करवाया और फेशियल करवाया था , फिर एक ड्रेस मॉल में बहुत सुंदर लग रही थी , तो खरीद ली थी . उसने सोचा था कि वह खुश होकर कहेगा' , वाउ स्वीटी ,बहुत सुंदर ड्रेस लग रही है.. यह ड्रेस पहन कर तो दिखाओ...' लेकिन उसके दिमाग में तो इन सबका बिल घूम रहा था .. वह नाराज होकर चिल्ला पड़ा ,' हजारों रुपये में आग लगा कर खुश हो रही हो ... तुम्हें तो ऐसा लगता है कि जैसे वह कोई पेड़ है, हिलाया और नोट बरसने लगे ... तुम्हें तो हर समय हरा हरा दिखाई पड़ता है ...' उसने मेरी ड्रेस को उठा कर फेंक दिया और बोला ,' हट जाओ मेरे सामने से, कहते हुये गाड़ी लेकर कहीं चला गया . न उसने कुछ खाया न ही मैंने खाया .. दोनों ऐसे ही सो गये .'

सारा मूड खराब करके रख दिया था .

उसकी अच्छी भली सैलरी है लेकिन मेरे लिये एक एक पैसे के लिये किच किच करते रहने का स्वभाव बन गया है ... घड़ी पर उसकी निगाह पड़ी थी , गोलू की बस आने वाली होगी , उसे गेट पर जाने का समय हो गया था.

आज उसके अंतर्मन ने उसकी सोच को एक नई दिशा दी थी . नकारात्मक विचारों पर विराम लग गया था . जीवन में आगे बढने की नई उमंग पैदा हो गई थी .

बहुत हो गया वह पाँच वर्षों से जितना दिव्यम् को खुश रखने की कोशिश करती रहती है , उतना ही वह उसे दुत्कारता रहता है और उसका अपमान करता रहा है .

वह इस इंटरव्यू को देने अवश्य जायेगी . उसने उठ कर अपनी फाइल निकाली और अपने सर्टिफिकेट्स देख कर भावुक हो उठी थी .

वह अपने पैरों पर खड़ी होकर दिव्यम् को दिखायेगी कि वह भी उससे किसी बात में कम नहीं है...उसका अपना भी अस्तित्व है , वजूद है ...

निश्चित् तरीख तक उसने अच्छी तरह इंटरव्यू की तैयारी कर ली और उस दिन वह अच्छे से तैयार होकर आत्मविश्वास के साथ इंटरव्यू देने गई . यद्यपि कि उसे उम्मीद की कहीं से कोई किरण नहीं दिख रही थी क्यों कि पी. एच . डी करने के बाद उसने पाँच वर्षों तक कहीं काम नहीं किया था . इस कारण अनुभव के नाम पर वह जीरो थी ...परंतु शायद आज उसकी किस्मत साथ दे रही थी , दूसरे जो कैण्डीडेट आये थे सभी पी. एच . डी. कर रहे थे . किसी की भी पूरी नहीं हुई थी .

वह लोग उसके व्यक्तित्व , व्यक्तत्व और योग्यता से बहुत प्रभावित और खुश हुये . उन्हें तत्काल प्रभाव से इंग्लिश लिटरेटर के लेक्चरर की आवश्यकता थी.

'हम लोग अपनी रिपोर्ट मैनेजर साहब के पास को दे देंगें '.फाइनल इंटरव्यू तो मैनेजर साहब लेंगे और वही एप्वायंटमेंट लेटर भी देंगें .'

उन लोगों के चेहरे की कुटिल मुस्कान देख वह थोड़ा सकपका उठी थी .

क्षण भर में ही वह पति के प्रति अपने मन के क्रोध को भूल बैठी थी और अपनी खुशी के अतिरेक को दिव्यम् के साथ बाँटना चाह रही थी . लेकिन नहीं , अभी तो मैनेजर का इंटरव्यू बाकी है .

अब वह अपनी नौकरी के लिये सच में गंभीर हो उठी थी . वह हर हालत में इस नौकरी को अपनी मुट्ठी में करके दिव्यम् के सामने अपनी श्रेष्ठता को दिखा कर रहेगी .

मैनेजर के विषय में जानने के लिये उसने संपर्क सूत्र तलाश करना शुरू कर दिया था . वह अपने परिचित और अपरिचित सभी से मिलने पहुँची थी तो सभी ने एक सुर में बताया था कि मैनेजर जिसे चाहेगा , उसे ही एप्वायंट करेगा .

वह परेशान हो गई थी लेकिन साथ में अपने विषय की तैयारी अच्छी तरह करती जा रही थी .

एक शाम किसी अनजान नंबर से फोन आया कि नौकरी चाहिये तो 10 लाख रुपयों की इंतजाम कर लो , या फिर मैनेजर साहब से मिल लो ....

उस दिन उसका उत्साह ठंडा पड़ गया था , मन बुझ गया था ... मैनेजर आखिर उससे क्या चाहेंगें ....लेकिन आज उसका अंतर्मन उसकी सारी समस्याओं का समाधान सुझाने के लिये तत्पर हो उठा था .

पुरुषों को खुशी तो तो मात्र स्त्री देह से खेल कर ही मिलती है . देह तो उसकी अपनी ही है . अपनी देह पर उसका अपना अधिकार है ...

मैनेजर के विषय में लोगों ने बताया कि मैनेजर रसिक मिजाज व्यक्ति है .लेकिन वह अपने वादों का एकदम पक्का है यदि किसी को जुबान देता है तो वह जरूर निभाता भी है .

वह मन ही मन सोचने लगी कि यदि उसे नौकरी मिल जायेगी तो फिर उसे दिव्यम् की धौंस की फिक्र नहीं रहेगी . वह भी हर महीने सैलरी लेकर ठाठ से आयेगी और अपनी तरह से जी सकेगी . आखिर दिव्यम् भी तो उसके साथ कई बार जबर्दस्ती करता है .

उसका मन बोला , वह तो तुम्हारा पति है.. तुम्हारी देह पर तो उसका अधिकार है .

हाँ, सच में उसने तो हमेशा ही अपना अधिकार ही जताया है . बहुत बार जब भी उसने अपनी अनिच्छा जाहिर की, तो उसे दरकिनार करके अपनी इच्छा पूरी की थी , मात्र इसलिये कि वह रोटी , कपड़ा और सिर छिपाने के लिये छत देता है .

उस दिन सुबह कैसे कह रहा था ,' तुम्हें अपनी देह का बड़ा घमंड है ...'

इस उहापोह में वह पुरानी यादों में खो गई थी .....दिव्यम् से उसकी मुलाकात यूनिवर्सिटी में पी. एच. डी. करते समय हुई थी . वह अपनी कंपनी के लिये एक सर्वे कर रहे थे ... उनके गाइड ने उन्हें सर्वे करने में उनकी मदद करने को कहा था .

दिव्यम् के आकर्षक व्यक्तित्व के आकर्षण में वह कब खोती चली गई , उसे पता ही नहीं लगा था ... पहली मुलाकात में ही उससे प्यार हो गया था . सर्वे तो पूरा हो गया परंतु मुलाकातें होती रहीं और दोनों ही एक दूसरे की प्यार की डोर से बँधते चले गये . वह दोनों ही भविष्य के मीठे मीठे सपने बुनने लगे थे . यहाँ तक कि वह तो उसके साथ शादी करने के लिये बेकरार हो उठी थी . लेकिन दिव्यम् का कहना था कि पहले नौकरी फिर शादी ....

एक शाम प्यार के क्षणों में कब सारे बंधन टूट गये , पता ही नहीं चला था .उसके मन में कोई ग्लानि या पछतावा नहीं था क्योंकि दिव्यम् तो उसका प्यार था ....

परंतु समस्या तो तब खड़ी हुई जब उन दोनों के आपसी संबंधों का अंकुर उसके शरीर में प्रस्फुटित हो उठा था . वह अपने प्यार के अंकुर को पल्लवित और पुष्पित होने देना चाहती थी . दिव्यम् के सपने के लिये अपने प्यार के पौधे को नष्ट नहीं कर सकती थी .

वह मजबूरीवश शादी के लिये तैयार हो गया था . उसने रात दिन जुट कर अपनी पी.एच . डी तो पूरी कर ली थी लेकिन गोलमटोल गोलू के आने के बाद तो उसकी दुनिया ही बदल गई थी .मातृत्व पाकर वह पूरी तरह से एक सामान्य गृहिणी बन कर रह गई . सब कुछ भूल कर वह गोलू के साथ व्यस्त होती चली गई और दिव्यम् से दूर होती गई .

दिव्यम् अपनी उपेक्षा नहीं बर्दाश्त कर पाये थे . जिसके

परिणामस्वरूप उसे पग पग पर पति से अपमान और प्रताड़ना मिलने लगी थी . खर्चे भी बढ गये थे .इसलिये दिव्यम् दिन प्रतिदिन उद्विग्न और क्रोधित रहने लगे थे, उन दोनों के आपसी रिश्ते बिगड़ते चले गये .

उसने अपने अंतर्मन से प्रश्न किया था कि सारी बंदिशें और बंधन एवं सीमायें केवल स्त्रियों के लिये ही क्यों हैं?

यदि उससे थोड़ा सा दूध भी उफन जाये तो वह तुरंत कटाक्ष करते हुये कहेगा , रोज के रोज दूध बहा देती , होश में रहा करो ... बहुत मेहनत से पैसे आते हैं . एक दिन धोते समय उसके हाथ से टी सेट का कप फिसल कर टूट गया . बस वह नाराज होकर शुरू हो गया ,'तोड़ दिया ना...मैं लाते लाते मरा जा रहा हूँ और तुम हो कि तोड़ती रहो ... उस दिन डिनर सेट तोड़ कर बेकार करके रख चुकी हो .'

अब उसे कौन समझाये कि वह जानबूझ कर थोड़े ही तोड़ती है....जो काम करेगा, उसी से तो टूट फूट होगी . अपुन तो लाटसाहब हैं ... प्यास लगने पर पानी का ग्लास भी हाथ में ही दो.

उस दिन शर्ट उसने जानबूझ कर थोड़े ही जलाई थी , वह तो गोलू के गिर जाने की वजह से उसका ध्यान बँट गया और फिर शर्ट जल गई . उसने तो घर में तूफान मचा कर रख दिया था .

तुमने एलेन सोली की इतनी मँहगी शर्ट जला कर रख जी ...मैं तो तुम्हारी हरकतों से तंग आ चुका हूँ .

उसका अंतर्मन बोल उठा, 'क्या सारे अधिकार केवल पुरुषों के लिये ही हैं , क्यों कि वह पुरुष है , स्त्री से श्रेष्ठ है ,वह पैसा कमाता है . इसलिये वह अपने लिये ब्राण्डेड शर्ट खरीद सकता है . वह क्लब जा सकता है , ड्रिंक कर सकता है , स्टेटस सिंबल दिखाने के लिये बड़ी गाड़ी खरीद सकता है .'

यदि कभी वह भूल कर किसी मूवी देखने के लिये बोल देती है , फिर यदि उसका मन नहीं होगा तो डाँट कर कहेगा ,' दिखाई नहीं देता , ई. एम. आई. और तुम लोगों की फरमाइशें पूरी करने के बाद बचता ही कितना है...जब कमाई करो तो समझ में आये ... बस जुबान हिला दी ....'

'जरा देर भी घर में रहो तो शिकायतों का पुलिंदा और फरमाइशों का ढेर ...मूड खराब करके रख देती हो ,' इसीलिये तो घर में आना ही नहीं चाहता ...बस वह गाड़ी निकाल कर 2-3 घंटे के लिये गायब हो जाता .

वह गोलू के साथ व्यस्त और उलझी तो रहती लेकिन दिव्यम् के रूखे व्यवहार के कारण उसका अपना आत्मविश्वास खोता जा रहा था . चूँकि पढाई का समय नहीं मिल पाता था, उसने कई जगह एप्लाई किया और इंटरव्यू देनें भी गई थी लेकिन वह तो मात्र दिखावा था क्योंकि कैंडीडेट का चयन तो पहले ही हो चुका था .

वह दिव्यम् के व्यवहार से बुरी तरह आहत हो चुकी है इसलिये अब वह किसी भी हद् तक जा सकती थी . अपने आगत भविष्य को सुरक्षित करने के लिये वह कोई भी खतरा उठाने को तैयार थी .

यहाँ तक कि यदि नौकरी पाने के लिये एक बार किसी पुरुष को अपनी देह से खेलने का हक दे देती है और उसके एवज में उसे जीवन भर का सुरक्षा कवच मिल जाता है तो इसमें हर्ज ही क्या है... रोज रोज की जिल्लत से तो बच जायेगी ...अपनी देह पर उसका तो अधिकार बनता ही है .

नौकरी न मिलने के कारण ही वह अपने को दोयम् दर्जे का समझने लगी है और दिव्यम् की सारी डाँट फटकार चुपचाप सुन लेती है .और वह धीरे धीरे घर में कैद होती चली गई , यदि उसे नौकरी नहीं मिली तो वह मानसिक रोगी जल्दी ही बन जायेगी . उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि यदि नौकरी के लिये अपनी देह का सौदा भी करना पड़ेगा तो वह कर लेगी .

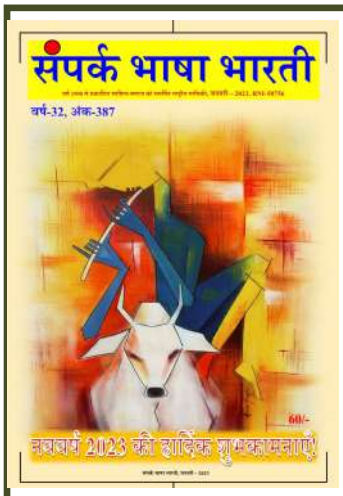

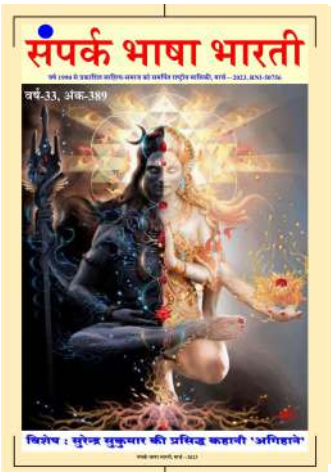

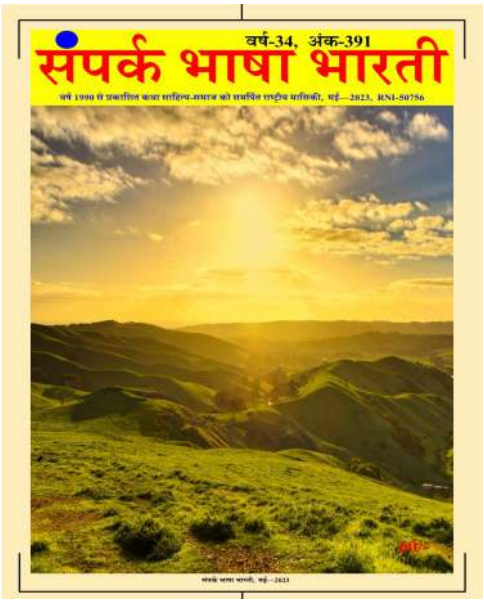

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

आखिर शादी करके उसे क्या मिल रहा है पेट भरने को रोटी , तन ढकने को कपड़ा और सिर छिपाने को यह छत और साथ में मिल रहा है ...ताने , उपेक्षा, उपहास , और अपमान ..

वह खोती जा रही है अपना आत्मविश्वास , स्वाभिमान ,स्वतंत्रता , अपना अस्तित्व, अपना व्यक्तित्व और कैरियर ....

उसका अंतर्मन उससे प्रश्न कर उठा ',आखिर वह यह सब क्यों सह रही है ..मात्र इस शादी को बचाने के लिये;'

उसकी आत्मा उत्तर में कहती है,' शादी का अर्थ ही समझौता है . जब आपस में प्यार होता है तो तकरार भी मीठी और प्यारी सी लगती है .'

वह सोचने लगती है कि बचपन से ही तो वह ताई , चाची , बुआ , मौसी आदि सभी को ऐसे ही रोते सिसकते देखती आई है . तो क्या वह भी इसी तरह जिंदगी गुजार दे .

'नहीं वह ऐसा नहीं कर सकती ."

यदि पत्नी कभी अनिच्छा होने पर अपनी देह पति को सौंपने से मना करती है ',तो या तो वह जबर्दस्ती करेगा या फिर इसके एवज में मिलता है अनबोलापन , अपमान , उपेक्षा और क्यों कि इससे पति के अहम् को चोट लगती है और उसे यह कतई बर्दाश्त नहीं है कि पत्नी उसकी इच्छा को नकार भी सकती है .'

'क्योंकि पुरुष सदा से अपने को श्रेष्ठ समझ कर उस पर शासन करना चाहता है .'

वह तो कई बार सोचती है कि पत्नी का जीवन तो वेश्याओं से भी गया बीता हुआ है . वह अपनी इच्छा से मना तो कर सकती है , जब कि पत्नी को तो वह भी अधिकार नहीं होता ...

उसका मन उसे आश्वस्त करता है ,' यदि वह अपनी देह के माध्यम से उसे नौकरी मिल जायेगी तो रोटी , कपड़ा और मकान की उसकी समस्या समाप्त ही हो जायेगी . '

'क्या आज उसका अंतर्मन उसे गलत राह पर चलने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है....?

'नहीं , यदि वह सामने आये इस अवसर को गँवा कर पतिव्रता का चोला पहन कर आजीवन पति के द्वारा अपमान , उपेक्षा और ताने सहती रहे या फिर अपनी देह के सौदे से अपने जीवन को नई दिशा दे, जहाँ सम्मान, सफलता ,और नित नूतन ऊँचाइयाँ बाँह पसारे उसका स्वागत् करती रहेंगीं .'

उसके अंतर्मन ने उसे चेतावनी दी ' देह के माध्यम से तुम किसी घिनौने दलदल या भँवर में तो नहीं फँसने जा रही हो जहाँ से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं होता .... आजकल तो ऐसे जालसाजों की सुर्खियों से समाचारपत्र भरा रहता है ..'

'कुछ नहीं होगा ...' वह लापरवाही से बोली थी .

उसने अपना मोबाइल उठाया और उस अनजान नंबर को डायल करके घबराहट भरी आवाज में एकबारगी बोली , 'पैसे का इंतजाम संभव नहीं लेकिन वह मैनेजर साहब से कब और कहाँ मिल सकती हैं '

'उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, वह पसीने पसीने हो गई थी ... उसके अंतर्मन ने फिर उसे चेतावनी दी थी ,' ईशा क्या करने जा रही हो ... क्या दूसरी कॉल का इंतजार नहीं कर सकती ... तुम ऐसे अंधे कुएँ में गिरने जा रही हो , जहाँ से निकलना संभव ही नहीं है .वह तुम्हारा वीडियो बना लेगा और तुम्हें ब्लैक मेल करेगा .'

अब वह चिंतित और घबराई हुई थी कि इसे सफलता मिलेगी या असफलता .... जिसके लिये वह अपने शरीर का सौदा करने जा रही है .... लेकिन वह कहाँ गलत है ...ये शरीर तो उसका अपना है , इस पर तो उसका अधिकार है .. इसे अपनी से क्यों नहीं इस्तेमाल कर सकती है ...

इस फैसले के कारण उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं . क्या वह दिव्यम को सच बता कर उसकी सहायता ले.. कहीं वह

मैनेजर के बिछाये हुये भँवरजाल में तो नहीं फँस कर अपनी जीवन तो बर्बाद करने नहीं जा रही है .

जैसे जैसे दिन नजदीक आ रहा था, उसकी आँखों से नींद उड़ती जा रही थी .

ईशा , मुझे बताओ , आजकल तुम परेशान क्यों रहती हो , क्या मेरे गुस्से के कारण उलझी उलझी सी रहती हो,

सॉरी , माई डियर , आजकल बॉस नया आया है , उसका गुस्सा तुम पर निकल जाता है .

प्लीज, अब ध्यान रखूँगा .

उसकी परेशान हालत को दिव्यम् ने कैसे समझ लिया , पता नहीं ...शायद यही प्यार होता है ....पहले तो वह उसके कंधे पर अपना सिर रख कर फफक कर खूब देर तक रोती रही फिर उसने शुरु से आखिर तक सारी बातें बता डाली. अब उसके दिल से बोझ उतर गया था और मन हल्का हो गया था .

दिव्यम् ने यह सुनते ही कि उसने इंटरव्यू क्वालिफाइ कर लिया है , उसने प्यार से उसे अपने आगोश में भर लिया था . आज उसे महसूस हुआ था कि पत्नी के लिये पति की बाँहो से बड़ा सुरक्षा कवच हो ही नहीं सकता है.

ईशा वह फोन नंबर मुझे बताओ , 'मैं कोशिश करके उस मैनेजर की कुटिल चालों का भंडाफोड़ करूँ और नौकरी के नाम पर जो हवस और रिश्तखोरी का खेल चल रहा है , उसे बंद करवा सकूँ .'दिव्यम् , प्लीज आप भी इन बदमाश लोगों के किसी चक्कर में मत पड़िये , ये लोग बहुत बदमाश और घाघ होते हैं .. ये तो किसी भी गलत काम करने से नहीं हिचकते , हत्या करना इन लोगों के लिये खेल है .'.

'ईशा , मेरे कलीग के पापा बड़े पुलिस अधिकारी हैं, वह अवश्य कोई न कोई रास्ता निकालेंगें .'

'तुम चुपचाप उसका फोन नंबर , मिलने का समय मुझे मेसेज कर देना .'

', मुझे बहुत डर लग रहा है .'

ईशा, डरने की जरूरत नहीं है , बस फोन नंबर ड्राइवर के फोन से मेसेज जरूर कर देना .

वह घबराई हुई चल दी थी, उसे नहीं मालूम था कि पुलिस अधिकारियों ने अपने ही आदमी को टैक्सी ड्राइवर तैनात किया था, उनके आदमी से पुलिस अधिकारी पूछताछ कर रहे थे.

उसने फोन लाने की सख्त मनाही कर दी थी लेकिन विजय कुमार जो पुलिस के बड़े अधिकारी थे , उन्होंने उसके बताये हुए फोन नंबर को सर्विलांस पर लगा कर ट्रैक करते हुये बातचीत के आधार पर मैनेजर के गलत कामों की तहकीकात की . मैनेजर के इस गंदे खेल पर पुलिस की नजर बहुत पहले से थी लेकिन सबूत के अभाव में कार्रवाई नहीं हो पा रही थी .

उन्होंने सादे कपड़ों में अपने साथियों को होटल में तैनात कर दिया था. होटल के मैनेजर और मालिक को चुपचाप से वहाँ से हटा कर पूछताछ चल रही थी.

ईशा और दिव्यम् के सहयोग से मैनेजर के बिछाये जाल का भंडाफोड़ कर दिया गया . मैनेजर को रंगेहाथ गिरफ्तार किया गया .

ईशा को इंटरव्यू के आधार पर एप्वांटमेट लेटर मिल गया लेकिन इन सब झंझटों में कई महीने लग गये थे .

ईशा को विश्वास नहीं हो पा रहा था कि उसके हाथों में एप्वायंटमेंट लेटर है ...उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था . उसके मन की पीड़ा, अवसाद और कुंठा क्षण भर में छू मंतर हो गई थी . वह प्यार से पति दिव्यम् की बाहों में समा गई .

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

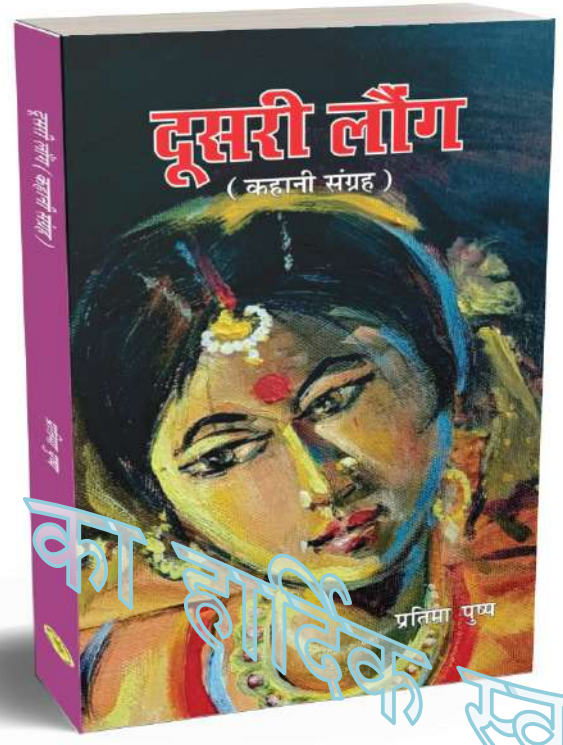

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

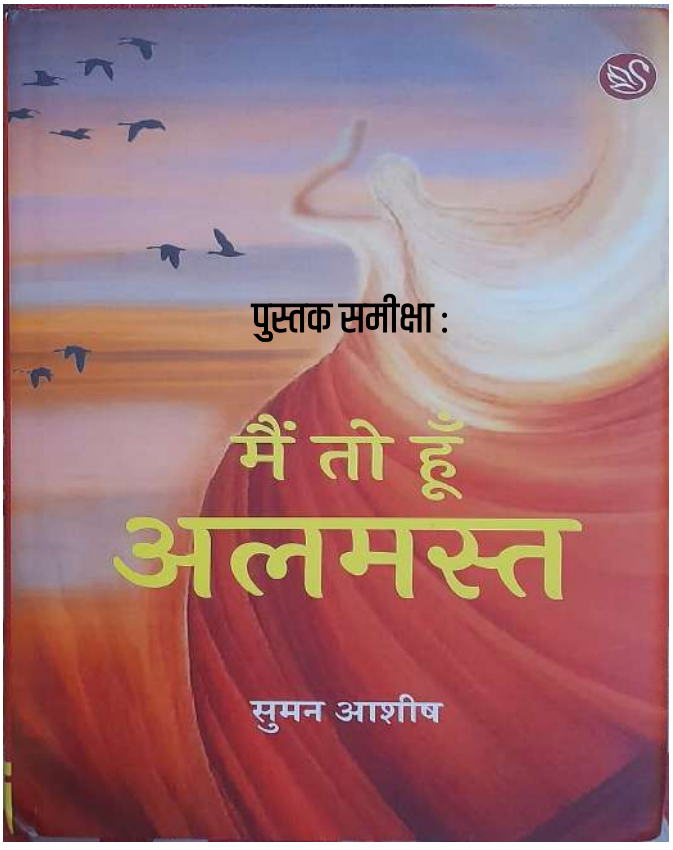

वैचारिकता और चिंतन का सुंदर समन्वय : 'मैं तो हूँ अलमस्त'

सृजन मानवीय जीवन में नई उम्मीदें जगाता है। मैं तो हूँ अलमस्त सुमन आशीष का पहला ग़ज़ल संग्रह है। उन्होंने बहुत कम समय में ही रचनाकारों के बीच अपनी सशक्त उपस्थित दर्ज कराई है। सुमन आशीष विचारक रचनाकार हैं। उनकी ग़ज़ल में दर्शन विचार और सामाजिकता अनायास ही है। इन ग़ज़लों में चिंतन, वैचारिकता एवं समाजिक मुद्दों पर प्रखरता से लिखा गया है।

समकालीन जीवन की घोर त्रासदियों के बीच संवेदनात्मक मूल्य किस तरह खत्म हो रहे हैं। हमारी संस्कृति परम्परा कैसे छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। सामाजिक एवं मानवीय रिश्तों एवं मुद्दों पर गहन चिंतन इस संग्रह में छलकता है। ये इन शे'र इस बात की बानगी हैं।

जो आँसू मुस्कुराकर पोंछ ले अपनी ख़ुशी से
कोई मिलता नहीं है आजकल ऐसा जमीं पर।

ज़रा लहजा बदलकर बोलने से टूट जाता दिल
कहाँ दिल तोड़ने के वास्ते पत्थर ज़रूरी है।।

बाऊजी-माँ को कभी मत छोड़ना
भाई को यह बात कहनी है मुझे।।

सुमन आशीष की ग़ज़लें व्यक्ति, परिवार, समाज देश की अनेक स्थितियों को बयां करती है। पारदर्शिता तथा स्पष्टवादिता इन ग़ज़लों की विशेषता है। सुमन आशीष ने गहन अनुभूतियों को शब्दों में पिरोकर ग़ज़ल में प्रस्तुत किया है। उनके कथ्य अपने आस-पास के परिवेश के हैं जो अंतस को गहनता से छूते हैं। इस संग्रह में मनोभावों, अनुभूतियों की सार्थक अभिव्यक्ति ,जीवन की व्यवहारिकता , सद्भाव, सहिष्णुता की भावप्रवणता के साथ दु:ख, दैण्य, वैराग्य के धूसर रंग भी सहजता से प्राप्त होते हैं।

पत्थर हूँ मुझको तुम छूकर
कब निर्मल हे राम करोगे।

कब आओगे मेरे मालिक
मेरा घर कब धाम करोगे।

रिश्तों की गहराई का सच
वक्त हमें दिखला जाता है।

वक्त हो या हो नहीं पर
रूह का संवाद रखिए।

एक प्याला ज़हर का तुम दे गए थे
तबसे वो प्याला ज़हर का पी रही हूँ।

राम का बनवास बस चौदह बरस था
मैं इसे कब से न जाने जी रही हूँ।

यह ग़ज़लें पाठक को समाज-संस्कृति में बढ़ती विकृतियों पर गंभीरता से विमर्श का मौका देती हैं। इनका वैचारिक फलक और अनुभव संसार बेहद विस्तृत है। यह बौद्धिक और भावपरक संवेदनाओं का ऐसा सम्मिश्रण हैं जो पाठक को लोकजीवन, जन-संवेदना, आमजन की रोजमर्रा की अवहेलनाओं और कड़वाहटों की गहराई से अनुभूति कराती हैं।

बस्ती के ज्यादातर होते घर टाटी के
दिल पर नश्तर खूब चलातीं सर्द हवाएँ।
हँसा करतीं बत्तीसी खिलखिलाकर गाँव के घर में
चली आई शहर सब खो गईं किलकारियां मेरी।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

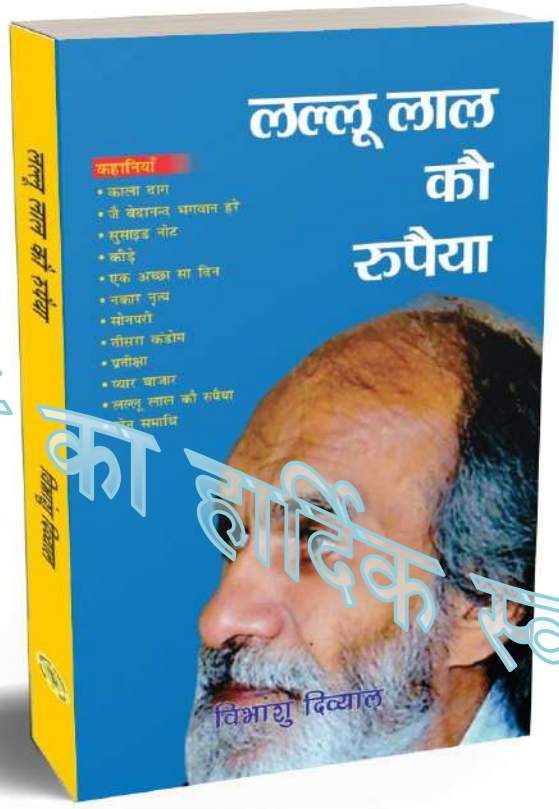

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

चमन में हर तरफ़ है आग दमकल को ख़बर दे दो
कहीं इंसानियत के चिन्ह दीखें तो इधर दे दो।

ये अँधेरे छोड़ देंगे रास्ते
दीप छोटा सा जलाओ तो सही।

आज के स्वार्थपरक संसार में प्रेम, स्नेह, भाईचारा कहीं खो गया है। सच्चाई और ईमान की बातें अब मिथक लगती हैं।
परंतु उनका सच पर विश्वास अडिग है। सत्य हरगिज़ न छोड़िए जग चला जाए तो चला जाए।
इनकी शायरी अफसरशाहों की नौकरशाही मानसिकता उघाड़ती हैं। सत्ता पर काबिज़ नेता आम आदमियों की समस्याओं के निवारण के स्थान पर उन्हें मिलने वाली सुविधाओं का स्वयं इस्तेमाल करते हैं।

मुहब्बत की ज़बानों पर जमी है वर्फ़ की चादर
गलाना है इसे इक धूप का टुकड़ा मिलेगा क्या।

सच का घर आबाद रखिए
मरना भी है याद रखिए।

जी हुजूरी का हुनर सीखा नहीं है
दोष ज्यादा और कुछ मेरा नहीं है।

झूठों की महफ़िल में झूठा
सच का दावेदार हुआ है।

रोज़ ढहते हैं उमीदों के भवन
खामखाँ के वायदे करती यहाँ सरकार क्यों!

ग़रीबी को हटाने के सभी वायदे हुए झूठे
अमीरों को हटाने की सियासत को फिकर दे दो।

'मैं तो हूँ अलमस्त' आमजन की आत्मचेतना में स्थापित आस्था की यथार्थपरक अभिव्यक्ति है। अनुभव की धीमी आँच पर पकी ये गज़लें जन-जन की आंतरिक संवेदनाओं को प्रखरता से प्रस्तुत करती हैं।
पुस्तक का नाम: मैं तो हूँ अलमस्त
समीक्षक :मनीष 'बादल'
श्वेतवर्णा प्रकाशन, नोएडा
पृष्ठ संख्या: 96
मूल्य : 170

उलट

"दादी! भैया के ब्याह के लिए लड़की तलाशने में रूप, गुण, शिक्षा, स्वजातीय, संस्कारी परिवार की बातें होती थीं। जोड़ी परिपूर्ण दिखे, उसके भी मायने थे। पर मेरी शादी की आई तो वही मापदंड उल्टे कैसे हो गए? अब चाहिए स्वजातीय लड़का, नौकरी या व्यवसाय में व्यवस्थित, शहर में बढ़िया मकान, पुश्तैनी संपत्ति, परिवारिक रुतबा। सबसे अंत में रूप की बात! हुँऽऽऽ! क्या लड़कियाँ नहीं चाहती हैं कि उनकी भी जोड़ी फबे? दादी, बताओ ना!"

"बेटा! खूबसूरत दुल्हन लाने के साथ परिवार के अगली पीढ़ी की खूबसूरती की गारंटी समझी जाती है! गारंटी चले ना चले, वह एक अलग मुद्दा है। पर आम मानसिकता यही है, 'दामाद सुदर्शन और स्मार्ट मिला तो बढ़िया, न मिला तो समझौता करने को तत्पर।' क्योंकि लड़की तो दूसरे परिवार की हो जाती है। कहावत का सहारा भी है, 'घी के लड्डू टेढ़ो भला!'

रही बात धन संपत्ति की, तो बेटियों के लिए ऐसा घर वर ढूँढा जाता है कि विवाहोपरांत मायके से उन्हें आर्थिक मदद की ज़रूरत न पड़े। तभी धनी लड़का समाज में हाथों-हाथ लिया जाता है।"

"पर दादी, पैतृक संपत्ति पर लड़का और लड़की का बराबर अधिकार होता है। फिर लड़के के पैसों से हमें क्या लेना-देना?"

"यहाँ कथनी और करनी में अंतर है। कुछेक राज्यों को छोड़कर अन्य राज्यों में बेटे के लिए संपत्ति का पहाड़ भले खड़े कर लें पर बेटी को शादी के वक्त ले-देकर सदा के लिए आर्थिक जिम्मेदारियों से निवृत होना चाहते हैं, जिसे अमूमन दहेज का नाम दिया जाता है। यानी पैतृक संपत्ति में ठेंगा, और कन्या धन के साथ तथाकथित दहेज भी न देना पड़े तो दोनों हाथों में लड्डू। दरअसल लड़कों में परिवार का भविष्य दिखता है, पर शादीशुदा लड़कियों पर अधिकार जताना मुश्किल होता है।"

"दादी! मैं एक आत्मनिर्भर लड़की हूँ। रिश्ते के लिए मैं अपनों के अनर्गल दवाब में नहीं आने वाली।"

"मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, बेटा!"

नीना सिन्हा

द्वैत-अद्वैत मीमांसा के चिंतन धरातल पर रचित एक अद्भुत काव्य कृति - सुनो राधिके सुनो

पुस्तक समीक्षा : सुधेन्दु ओझा

'सुनो राधिके सुनो' चर्चित और लोकप्रिय कवि विष्णु सक्सेना का दूसरा खंड काव्य है ,जिसे उ प्र हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा ' जय शंकर प्रसाद सम्मान -2021 ' व 75 हज़ार की राशि के साथ सम्मानित किया जा चुका है | सक्सेना जी का पहला खंड काव्य ' अक्षर हो तुम ' भी हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा ' श्रेष्ठ काव्य कृति सम्मान - 2014 ' व 21 हज़ार की राशि से सम्मानित किया जा चुका है |

' सुनो राधिके सुनो ' द्वैत - अद्वैत मीमांसा के चिन्तन धरातल पर रची गई एक अद्भुत काव्यात्मक कृति है | इसमें लेखक ने दर्शन शास्त्र के इस मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट किया है कि सच्चिदानंद की मूल प्रकृति ही सत्तात्मिका , ज्ञानात्मिका और आनंदात्मिका स्वरुप में सर्वत्र पसरी हुई है | वही महामाया संघिनी , संविद और आहाल्दिनी शक्ति के रूप में अनेक प्रकार से प्रकट होती है | यही निर्गुण - निराकार और सगुण - साकार के रूप में उत्पत्ति , पालन व संहार करते हुए अविर्तिरोभाव या ' भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ' का कारण बनती है | माया -मायापति , प्रकृति - पुरुष की यह नित्य योग - संयोग - वियोग जन्य दिव्य क्रीडा ही लीला है | इस पुस्तक के ' प्रेम भाव ' , ' प्रतीक्षा ' व ' मोह ' सर्ग में इसी का दर्शन होता है |

इस खंड काव्य का प्रमुख विषय परम रसाम्बुधि प्रेम स्वरुपा आहाल्दिनी शक्ति हैं | जो कारण , सूक्ष्म , स्थूल रूप में व साधन - साधना - साध्य रूप में स्वयं ही प्रसरित हैं | श्री राधा कृष्ण प्रेम भाव चित्रांकित करते हुए कवि कहता है - राधा जी भगवान श्री कृष्ण की स्नेह - श्यामा हैं | ' श्यामा ' इसलिए कि श्यामा कहने से केवल वर्ण - बोध ही नहीं होता , युवावस्था का भी बोध होता है - ' श्यामा यौवन ' , ' मध्यस्था ' | वे प्रभु की आद्या शक्ति हैं , आल्हादिनी शक्ति है , सृष्टि रचना में सहयोगिनी हैं , महामाया हैं , इसलिए सर्वतोभावेन परमसत्ता के साथ अभिन्न हैं |

परम सत्ता जब - जब सृष्टि की कामना करती है , एक से अनेक होना चाहती है , तो उसे सबसे पहले अद्वैत से द्वैत में प्रयाण करना पड़ता है | ' एकोअहं बहुस्याम ' का यही निहितार्थ है | आद्या शक्ति के बिना परम सत्ता अधूरी ही रहती है | इसीलिए राधा जी श्री कृष्ण की ' पूर्णा ' हैं | इस पूरकता को ही अर्धनारीश्वरत्व में व तंत्र साहित्य में शिव - शक्ति के अद्वैत रूप में प्रकट किया गया है | वैष्णवों की माधुर्य भक्ति में राधा - कृष्ण की युगलमूर्ति ने भारतीय संस्कृति की आधार शिला पुरुष - स्त्री की सहभागिता को स्थापित किया है |

' सुनो राधिके सुनो ' इस दिशा मे एक गंभीर प्रयास है | पुस्तक के आरम्भ में अभिन्नता सर्ग के प्रेम भाव में विष्णु सक्सेना लिखते हैं , ' हे आत्मयोगी - / मैं ,चिर संगिनी / रही तुम्हारी / आदि काल से / अनंत काल से , / सृष्टि के हर संकल्प चक्र की / रही साक्षी ! // चक्र तुम्हारा - जब भी चलता / पूर्णता उसकी / मैं ही करती , / मैं ही तो / धुरी तुम्हारे / हर संकल्प की ! // सत्य यही है / रमी हुई मैं / तुम मैं ही तो / मुझ में भी / रमे हुए तुम ! // लीला रूप में दृश्यमान हैं / भिन्न भिन्न हम , / भिन्न भिन्न दिख कर भी / हैं अभिन्न हम / अनंत काल से |

आद्या शक्ति का यही भाव लता भाव में भी परिवर्तित हो जाता है | और कवि कहता है - ' मैंने ही तो / पुष्पों में / पराग बन कर / आनंदित होकर / वास किया है | ताकि अलि भी / आ आकर / पराग मधु का पान करें , / प्रगाढ़ चुम्बन / मधुर आलिंगन / करते करते / तन से मन से / एक दूजे को / अन्तर्सुख प्रदान करें |

अद्वैत से द्वैत की प्रक्रिया है यह | पहले भी स्पष्ट किया गया गया है कि अद्वैत से द्वैत में आने के लिए इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है | सुनो राधिके सुनो पुस्तक के उत्तरार्ध में भाषा विचार व शिल्प से आत्म निष्ठ है , पर पूर्वार्ध में कवि भाषा के प्रति उतना सजग नही रह पाया है जिसकी आवश्यकता इस प्रकार के गंभीर चिन्तन मनन के काव्य में अपेक्षित है |

जैसे जैसे वह आगे बढते हैं वह भाषा के प्रति भी आग्रही हो चलते हैं और भाषा निश्चित रूप से तत्व चिन्तन के अनुरूप उसी के समानांतर चलती है और शब्द संयोजन भी उसी स्तर का हो जाता है | तब लगता है कि हम किसी गंभीर प्रकृति के काव्य को पढ़ रहे हैं ,जिसमें चिन्तन है , मनन है ,योग है ,माया है और समझने को बहुत कुछ है | एक बानगी देखिये – ' आहट ' सर्ग में वह कहते हैं , ' प्रिय राधिके - / मन हुआ / मुक्त छोड़ दूं / मैं – अपने मन को / सहज हो जाऊं / तितली बन - / उड़ जाऊं / बस उड़ता ही जाऊं ! // उड़ते उड़ते / बीत चुके इन तीन युगों की / पूर्व बेला में / पहुँच गया मैं ! // देखा / महादेव की अनंत समाधि / लगी हुई थी , / कामदेव ने / देव हितार्थ / बर्फ के निर्जन में भी / मंगल कर डाला था | / कम मोहित प्रेम बाण को / महादेव पर डाला था , / ओह - / कैसा मन भावन / दृश्य था वह ? '

कवि ने इस माध्यम से एक रूपक , एक बिम्ब व एक चित्र खींचा है जो मन को छूता है | पुस्तक पठनीय है व धीर गंभीर पाठकों के मनन योग्य है | इन्ही शुभ कामनाओं के साथ |

पुस्तक : सुनो राधिके सुनो (खंड काव्य)

लेखक : विष्णु सक्सेना

प्रथम संस्करण : 2021 मूल्य : रु 250 पृष्ठ : 122
(सजिल्द)

प्रकाशक : भारतीय ज्ञान पीठ , 18 , इंस्टीट्यूशनल एरिया ,
लोदी रोड , नई दिल्ली – 110 003

और छोटा-सा घर हो

पीपल हो, वट हो,
नदिया हो, तट हो,
कुछ खेत हों,
और छोटा-सा घर हो वहीं पर हमारा |
जहाँ हो हवाओं में,
कोई न अनबन,
दिशाएँ बिहँसती हों,
आनंद टनमन,
राहों में कट हो,
न जीवन विकट हो,
कुछ रेत हों,
और छोटा-सा घर हो वहीं पर हमारा |
जहाँ हो बनावों में,
कोई न सिकुड़न,
पाते हों आदर भी,
मिलनी व बिछुड़न,
न चिंता, न चट हो,
न कोई सकट हो,
कुछ चेत हों,
और छोटा-सा घर हो वहीं पर हमारा |
जहाँ हो तनावों में,
वर्षा न आँधी,
बिठा हो अलावों पर,
नेता न, गाँधी,
न खटका, न खट हो,
न उलझन, न पट हो,
कुछ नेत हों,
और छोटा-सा घर हो वहीं पर हमारा |

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

विस्थापन

मैं गाँव में हूँ
शहर और नौकरी के तनाव को लग-भग भूलकर
अजनबीयत और बेगानेपन से दूर।
अपने ठाँव- ठिया। जगह और रास्ते
दूब-धान की तरह मेरे मन में।
नहीं। दुख और सुख तो यहाँ भी हैं
वही भाग-दौड़। परेशानी और दुश्चिन्ताएँ भी
पर एक परिचय है सब से सबका
रिश्ते का बचा हुआ है अवबोध!
पूछता है बच्चों की हमजोली से लौटकर बेटा
आप अररिया लौटने के लिए इतना बेचैन क्यों हैं पापा
क्या एक दिन और नहीं रुक सकते?
मैं चुप हो जाता हूँ
लगता है यह प्रश्न तो मेरी आत्मा का है
जो कसकता रहा है रह-रह कर मेरी स्मृति में/मेरा बचपन। मेरी जवानी और मेरे होने का मतलब है गाँव!
जैसे पूरा शहर ही नहीं
अन्न-पानी और आबो-हवा सब गाँव से।।
पर मैं नहीं रह सकता
डर की एक घंटी बज रही है मेरे कानों में
एक अनाम आदेश बुला रहा है मुझे
आशंकाओं की कुछ परछाइयाँ सी घिर आती हैं
अगर उस पदनाम और उस कुर्सी को बचाना है
तो मुझे शहर लौटना होगा।
मैं उसाँस लेकर कहता हूँ
नहीं। बेटे अब चलना होगा। सौ रिश्तों का वास्ता देकर गाँव को तो मैं फिर भी मना लूँगा /मगर शहर रूठा। तो उसे मनाने में बड़ू मुश्किल होगी/
बेटा उदास हो जाता है/ उदास तो मैं भी हूँ। पर अब आप से कैसे कहूँ कि किन परिस्थियों में
मुझसे मेरा क्या। कैसे छूटा!
मैं आदमी तो रहा ठेठ गाँव का
पर वोट हमेशा शहर में रहा मेरा।
आप खुद समझ सकते हैं
कि वक्त के इस चुनााव में
मैंने मजबूर होकर किसे चुना
और दिल किधर रहा मेरा!

संजय कुमार सिंह

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

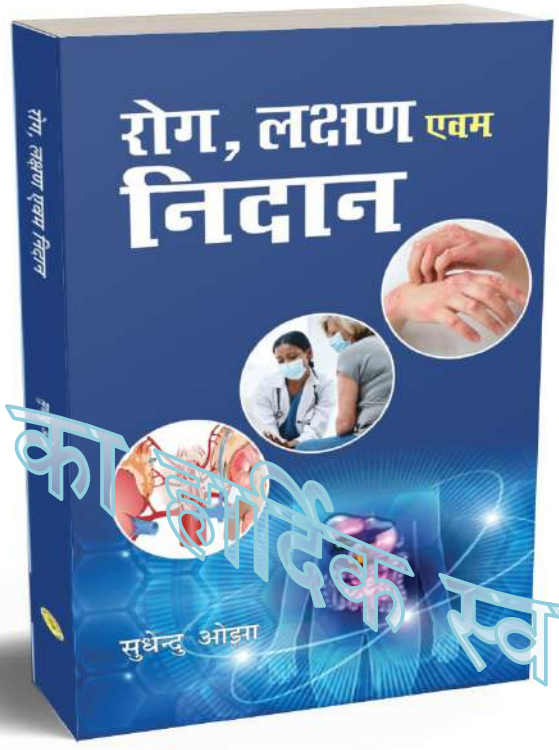

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

तेरे आने का अब इंतज़ार भी नहीं

तेरे जाने से दिल बेकरार भी नहीं।
तेरे आने का अब इंतज़ार भी नहीं।

तुझे पाने की ख्वाईश क्या होगी अब।
तेरी चाहत का तलबगार भी नहीं

गुजरते हैं हम उन रास्तों से कभी।
आती अब उनमें पुकार भी नहीं।

तेरा ग़म ये मुझे डराएगा भी क्या।
मेरे डर का याँ कोई दयार भी नहीं।

न लिखावट है कोई ना इबारत ही।
तेरे ख़त का तो अब इंतज़ार भी नहीं।

"चन्द्रेश' कैसे दिल टूटेगा ये।
अब तक इसमें तो दरार भी नहीं।

चन्द्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

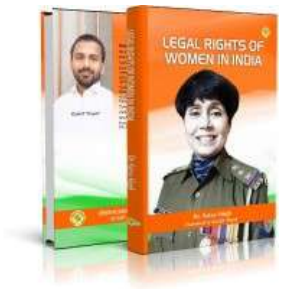

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982